

कहानी: सच्ची कहानी — ₹5,000 का कर्ज़ और एक प्रधानमंत्री की ईमानदारी

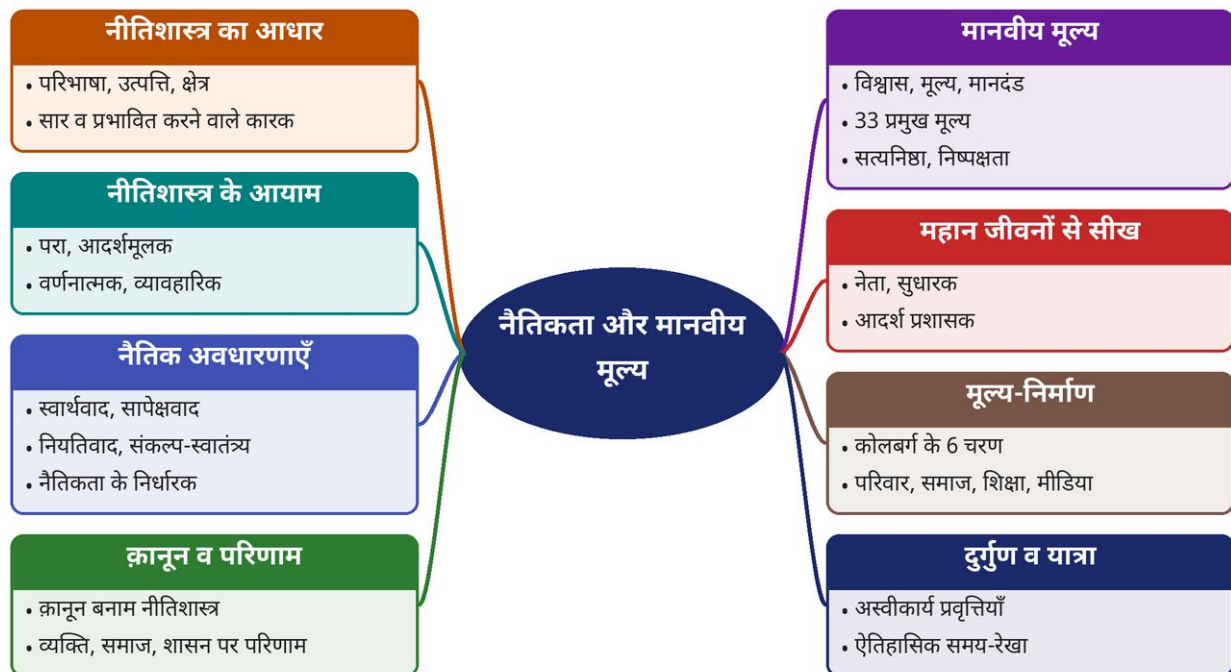
बात 1964-65 की है। लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे। एक दिन घर में बच्चों ने कहा — "बाबूजी, अब तो हमारे पास भी एक अपनी कार होनी चाहिए। सरकारी गाड़ी तो सरकारी काम के लिए है, घर के काम के लिए नहीं।" शास्त्रीजी मुस्कुराए। उन्हें यह बात अच्छी लगी कि बच्चे सरकारी गाड़ी को निजी काम में लेना ठीक नहीं मानते।

उन्होंने अपनी बचत देखी — बैंक खाते में कुल ₹7,000 थे, जबकि उस समय एक नई फ़िएट (Fiat) कार ₹12,000 की आती थी। देश का प्रधानमंत्री चाहता तो एक इशारे पर सब कुछ हो सकता था, पर शास्त्रीजी ने वही रास्ता चुना जो एक आम नागरिक चुनता है। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक में ₹5,000 के ऋण का आवेदन दिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई भी ग्राहक देता है, और बाक़ी पैसे अपनी बचत से मिलाकर कार ख़रीदी। उन्होंने परिवार से कहा — "यह ऋण हम पाई-पाई चुकाएँगे।"

जनवरी 1966 में ताश्कंद में भारत-पाकिस्तान समझौते के बाद शास्त्रीजी का अचानक देहांत हो गया। ऋण अभी बाक़ी था। ऐसे में उनकी पत्नी ललिता शास्त्री ने वह किया जो इस परिवार के संस्कारों के अनुरूप था — उन्होंने किसी रियायत की माँग नहीं की, बल्कि अपनी पेंशन से धीरे-धीरे पूरा ऋण चुका दिया।

यही शास्त्रीजी थे जिन्होंने 1965 के अन्न-संकट में देशवासियों से सप्ताह में एक समय का भोजन छोड़ने की अपील की थी — पर अपील करने से पहले उन्होंने अपने ही परिवार के साथ एक समय भोजन छोड़कर देखा था कि बच्चे भूख सह पाएँगे या नहीं। वे पहले स्वयं करते थे, फिर दूसरों से कहते थे। आज वह फ़िएट कार नई दिल्ली के लाल बहादुर शास्त्री स्मारक में रखी है — एक ऐसी कार, जो याद दिलाती है कि सबसे बड़ा पद भी सबसे सादे मूल्यों से ही महान बनता है।

इस कहानी से सीख: सत्यनिष्ठा का अर्थ है — जब कोई देख न रहा हो और आपके पास शॉर्टकट की पूरी ताक़त हो, तब भी सही रास्ता चुनना। शास्त्रीजी ने सार्वजनिक संसाधन (सरकारी गाड़ी) और निजी ज़रूरत (परिवार की कार) को अलग रखा, उदाहरण से नेतृत्व किया, और यह मूल्य उनके परिवार में इतनी गहराई तक उतरा कि उनकी पत्नी ने भी वही रास्ता निभाया। यही इस अध्याय का केंद्रीय संदेश है — मूल्य परिवार से बनते हैं, आचरण से दिखते हैं और नेतृत्व से समाज में फैलते हैं।

अध्याय 01 — एक नज़र में

चित्र 1.1: अध्याय 01 — एक नज़र में

कहानी: अध्याय की यात्रा — "दादाजी की चौपाल: एक दिन, सोलह सबक"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। इसकी हर घटना आपको इस अध्याय के किसी न किसी खंड की झलक देगी — इसे ध्यान से पढ़िए, पूरा अध्याय आपकी आँखों के सामने घूम जाएगा।)

सीकर ज़िले के एक छोटे-से गाँव में सुबह की धूप अभी आँगन में उतरी ही थी कि मेघा ढोल-नगाड़ों के बीच घर पहुँची। राजस्थान प्रशासनिक सेवा में उसका चयन हुआ था और अगले हफ़्ते से उसका प्रशिक्षण शुरू होना था। सबसे पहले वह अपने दादाजी हरिराम जी के पैर छूने पहुँची, जो गाँव के सरकारी विद्यालय से प्रधानाध्यापक होकर सेवानिवृत्त हुए थे। दादाजी ने आशीर्वाद दिया और बोले — "बधाई हो बिटिया! पर अफ़सर बनने से पहले आज पूरा दिन मेरे साथ गाँव में घूमना। किताबें तुमने बहुत पढ़ लीं, आज ज़िंदगी की किताब पढ़ेंगे।"

पहला पड़ाव — चौपाल की बहस: चौपाल पर दो बुजुर्ग बहस कर रहे थे — एक कह रहा था "हमारे ज़माने में बेटियों को बाहर पढ़ने भेजना ठीक नहीं माना जाता था", दूसरा कह रहा था "समय बदल गया है, बेटी अफ़सर बनी है!" दादाजी ने मेघा से पूछा — "बताओ, सही-गलत तय कौन करता है? गाँव की रीत, क़ानून, या हमारी अंतरात्मा?" यहीं से मेघा ने समझा कि **नीतिशास्त्र क्या है, यह नैतिकता से कैसे अलग है, इसके आयाम कौन-से हैं, और किसी कार्य को परखने के निर्धारक — उद्देश्य, साधन, परिस्थिति और परिणाम — क्या होते हैं।** (खंड 1 से 4)

दूसरा पड़ाव — बस अड्डे का पर्स: बस अड्डे पर एक लड़का किसी यात्री का गिरा हुआ पर्स लौटाने दौड़ा। लोग बोले — "क़ानून तो कहता ही है कि दूसरे का माल लौटाओ।" दादाजी ने कहा — "क़ानून तो केवल न्यूनतम बताता है। उस लड़के को किसी पुलिस ने नहीं देखा था — फिर भी उसने लौटाया, क्योंकि उसके भीतर का नियम क़ानून से ऊँचा है।" मेघा को **क़ानून और नीतिशास्त्र का अंतर** और यह बात समझ आई कि नैतिक आचरण का **परिणाम** व्यक्ति, संगठन और पूरे समाज के भरोसे पर पड़ता है। (खंड 5 और 6)

तीसरा पड़ाव — दादी की पोटली: घर लौटे तो दादी ने पड़ोस की एक बीमार विधवा के लिए खिचड़ी की पोटली बाँध रखी थी। "हम अमीर नहीं, पर भूखे को खिलाना हमारा धर्म है," दादी ने कहा। दादाजी बोले — "देखो, यह है **मूल्य** — जिस बात को हम दिल से ज़रूरी मानते हैं। विश्वास में जब भावना मिल जाती है, तो वह मूल्य बनता है, और मूल्य ही हमारे व्यवहार में उतरता है।" उस दिन मेघा ने **करुणा, सहानुभूति, सहिष्णुता, अनुशासन, कृतज्ञता** जैसे मूल्यों को किताब से निकलकर जीते हुए देखा। (खंड 7 और 8)

चौथा पड़ाव — पंचायत भवन की शिकायत: दोपहर में पंचायत भवन पर एक युवक आया और बोला — "मेघा दीदी, अब तो आप अफ़सर हो। हमारे खेत की नाप वाला मामला अपने हिसाब से करवा देना।" मेघा कुछ बोलती, उससे पहले दादाजी ने कहा — "बेटा, अफ़सर किसी गाँव, जाति या दल का नहीं होता। जिस दिन फ़ाइल पर अपना-पराया दिखने लगा, उस दिन कुर्सी की इज़ज़त चली जाती है।" मेघा को **सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात** का असली अर्थ समझ आ गया — न्याय होना ही नहीं, होते हुए दिखना भी चाहिए। (खंड 9 और 10)

पाँचवाँ पड़ाव — विद्यालय की दीवार: शाम को दादाजी उसे अपने पुराने विद्यालय ले गए। दीवारों पर गांधीजी, डॉ. अंबेडकर, सरदार पटेल, स्वामी विवेकानंद और कई आदर्श प्रशासकों के चित्र थे। दादाजी ने हर चित्र के नीचे लिखी एक पंक्ति पढ़कर सुनाई और बोले — "इनके भाषण नहीं, इनका जीवन पढ़ना। नेता दिशा देता है, सुधारक कुरीतियाँ तोड़ता है और प्रशासक योजनाओं को ज़मीन पर उतारता है।" (खंड 11)

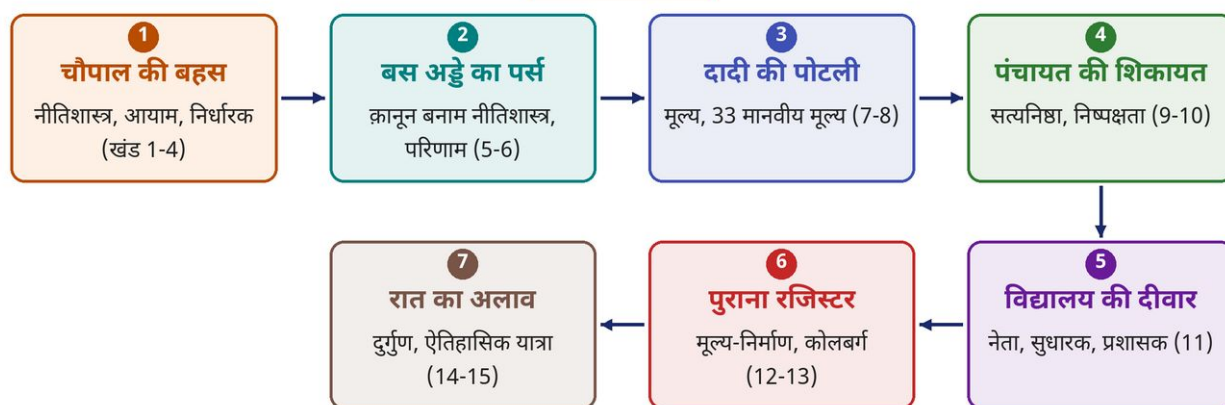
छठा पड़ाव — कक्षा का पुराना रजिस्टर: एक अलमारी से दादाजी ने पुराना रजिस्टर निकाला, जिसमें मेघा के बचपन की एक घटना दर्ज थी — उसने परीक्षा में नकल की पर्ची मिलने पर खुद शिक्षक को सौंप दी थी। "तब तुम सज़ा के डर से नहीं, सही होने के कारण ऐसा कर पाई थीं," दादाजी मुस्कुराए। "मनुष्य पहले डर से अच्छा बनता है, फिर तारीफ़ के लिए, फिर नियम के लिए — और सबसे ऊँची सीढ़ी पर इसलिए कि वह सही है।" यहीं मेघा ने **मूल्य बनने की प्रक्रिया और कोलबर्ग के नैतिक विकास के छह चरणों** को अपने ही जीवन में पहचाना, और समझा कि **परिवार, समाज, विद्यालय और आज का मीडिया** मिलकर मनुष्य के मूल्य गढ़ते हैं। (खंड 12 और 13)

सातवाँ पड़ाव — रात का अलाव: रात को अलाव के पास बैठकर दादाजी ने आखिरी सीख दी — "बिटिया, कुर्सी के साथ लालच, अहंकार, चापलूसी और उदासीनता जैसे दुर्गुण भी चुपके से आते हैं। इन्हें पहचानना और इनके सामने संतोष, विनम्रता, साहस और करुणा खड़ी रखना। और याद रखना — सुकरात से लेकर गांधीजी तक, मानवता की हज़ारों साल की यात्रा ने यही सिखाया है कि मूल्य ही सभ्यता की असली पूँजी हैं।" (खंड 14 और 15)

अगली सुबह विदा होते समय मेघा ने अपनी डायरी के पहले पन्ने पर लिखा — "**फ़ाइल पर हस्ताक्षर करने से पहले, अपने भीतर के हस्ताक्षर देख लेना।**" दादाजी की उस एक दिन की चौपाल में पूरा नीतिशास्त्र छिपा था — और यही यात्रा अब आप इस अध्याय में करने जा रहे हैं।

 **इस कहानी से सीख:** यह अध्याय सात पड़ावों में चलता है — (1) नीतिशास्त्र का आधार, आयाम और निर्धारक, (2) क़ानून और परिणाम, (3) मूल्य और 33 प्रमुख मानवीय मूल्य, (4) सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता, (5) महान जीवनों से सीख, (6) मूल्य-निर्माण और कोलबर्ग के चरण, (7) दुर्गुण और ऐतिहासिक यात्रा।

दादाजी की चौपाल — कहानी के सात पड़ाव, अध्याय के सात भाग



चित्र 1.2: दादाजी की चौपाल — कहानी के सात पड़ाव, अध्याय के सात भाग

 अध्याय विषय-सूची

1	नीतिशास्त्र (Ethics) — परिभाषा, उत्पत्ति एवं विशेषताएँ	9	सत्यनिष्ठा (Integrity) — अर्थ, महत्व एवं दार्शनिक आधार
2	नैतिकता (Morality) और नीतिशास्त्र (Ethics) — तुलना	10	निष्पक्षता (Impartiality) और गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)
3	नीतिशास्त्र के प्रकार (Types of Ethics)	11	महान दार्शनिकों, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन से शिक्षाएँ
4	प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ (Key Ethical Concepts)	12	मूल्य कैसे बनते हैं? — समाजीकरण और नैतिक विकास के चरण
5	कानून और नीतिशास्त्र में अंतर (Law vs Ethics)	13	मूल्य-निर्माण में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की भूमिका
6	नीतिशास्त्र के परिणाम (Consequences of Ethics)	14	दुर्गुण (Vices) — समाज में अस्वीकार्य प्रवृत्तियाँ
7	मानवीय मूल्य (Human Values) — परिभाषा एवं वर्गीकरण	15	नैतिकता और मानवीय मूल्य — ऐतिहासिक यात्रा (Timeline)
8	प्रमुख मानवीय मूल्य — विस्तृत विश्लेषण (असली कहानियों सहित)		

1. नीतिशास्त्र (Ethics) — परिभाषा, उत्पत्ति एवं विशेषताएँ

नीतिशास्त्र (Ethics) मानव जीवन की वह आधारशिला है जो व्यक्ति, समाज और प्रशासन को सही दिशा प्रदान करती है। प्रशासनिक सेवाओं में नैतिकता केवल कानून का पालन नहीं, बल्कि लोककल्याण की भावना से कर्तव्य निर्वहन का नाम है। मानवीय मूल्य वे मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो एक लोकसेवक को साधारण अधिकारी से आदर्श प्रशासक बनाते हैं।

नीतिशास्त्र एक बहुआयामी विषय है: इसे केवल किताबी नियम मत समझिए। यह अपनी उत्पत्ति (इतिहास), अपने प्रकार (परा, आदर्शमूलक, व्यावहारिक) और व्यावहारिक प्रशासनिक निर्णयों — इन तीनों आयामों में एक साथ काम करता है, जैसा नीचे इस पूरे खंड में समझाया गया है।

1.1 शब्द-उत्पत्ति (Etymology)

- नीतिशास्त्र (Ethics) शब्द यूनानी (Greek) भाषा के शब्द "एथॉस (Ethos)" तथा "एथिकॉस (Ethikos)" से व्युत्पन्न है — इनका संबंध चरित्र, आदत और रीति-रिवाज़ से है। जैसे किसी गाँव के लोग सदियों से एक ही तरीके से त्योहार मनाते आ रहे हों, वही उनका 'एथिकॉस' है — यानी समाज का बना-बनाया आचरण।
- इसका समानांतर शब्द नैतिकता (Morality) है, जो लैटिन शब्द "मोरेस (Mores)" से बना है — इसकी जड़ भी रीति-रिवाज़ ही है, पर आधुनिक प्रयोग में नीतिशास्त्र को अक्सर व्यावसायिक/संस्थागत आचार-संहिता से, और नैतिकता को व्यक्तिगत मान्यताओं से जोड़ा जाता है — यह भेद पूर्ण नहीं, बल्कि सामान्य प्रचलन है।
- आसान शब्दों में: नीतिशास्त्र (Ethics) को अक्सर सैद्धांतिक/संस्थागत (theory) पक्ष माना जाता है — यानी समाज या संगठन ने किताबों/आचार-संहिता में जो सही-गलत लिख रखा है, वह। नैतिकता (Morality) को अक्सर व्यावहारिक (practice) पक्ष माना जाता है — यानी व्यक्ति खुद अपने भीतर से क्या मानता है और कैसा व्यवहार करता है — पर व्यवहार में दोनों शब्द एक-दूसरे में घुले-मिले भी इस्तेमाल होते हैं।

1.2 नीतिशास्त्र की परिभाषाएँ (Multiple Definitions)

- नीतिशास्त्र एक आदर्शमूलक विज्ञान (Normative Science) है जो सामान्य मनुष्य के ऐच्छिक आचरण का नैतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करता है — सही-गलत, उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ का निर्धारण करता है।
- यह दर्शनशास्त्र की वह शाखा है जो चेतन प्राणी को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि उसे क्या करना चाहिए।

◆ **मैकेंज़ी (McKenzie)** (ब्रिटिश दार्शनिक जॉन एस. मैकेंज़ी, जिनकी पुस्तक 'ए मैनुअल ऑफ़ एथिक्स' नीतिशास्त्र की प्रसिद्ध आरंभिक पाठ्यपुस्तक है) के अनुसार — "नीतिशास्त्र मानव आदतों के पीछे के सिद्धांतों की जाँच करता है और उनकी अच्छाई या बुराई के कारणों का विश्लेषण करता है।"

◆ **शुक्रनीति** (शुक्राचार्य से जोड़ा जाने वाला प्राचीन भारतीय नीति-ग्रंथ, जिसमें राजा, प्रशासन और आचरण के नियम बताए गए हैं) के अनुसार — "नीतिशास्त्र समस्त शास्त्रों का सार है और सामाजिक व्यवस्था का प्रशासक है — यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — चारों पुरुषार्थों का प्रदाता है।"

🔍 आसान परिभाषा: नीतिशास्त्र (Ethics) — एक लाइन में समझें

📖 **परिभाषा:** नीतिशास्त्र एक आदर्शमूलक विज्ञान है जो मनुष्य के आचरण का नैतिक दृष्टि से मूल्यांकन करता है — सही-गलत तय करता है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी खेल में रेफरी नियम बताता है कि कौन-सी चाल सही है और कौन-सी फ़ाउल — ठीक वैसे ही नीतिशास्त्र जीवन के 'खेल' में बताता है कि कौन-सा आचरण सही है और कौन-सा गलत। 🏠 **उदाहरण:** परीक्षा में नकल करना गलत है — यह कोई कानून की किताब नहीं, बल्कि नीतिशास्त्र (हमारी अंतरात्मा) सिखाती है।

नीतिशास्त्र — उत्पत्ति, परिभाषा एवं प्रकृति



चित्र 1.3: नीतिशास्त्र — उत्पत्ति, परिभाषा एवं प्रकृति

1.3 नीतिशास्त्र का क्षेत्र — "मानवीय कर्म" बनाम "मनुष्य के कर्म"

नीतिशास्त्र का क्षेत्र (Scope) यानी वह दायरा जिसके अंदर यह विषय काम करता है। नीतिशास्त्र मनुष्य के **हर काम** को नहीं परखता, बल्कि केवल उन कामों को परखता है जो सोच-समझकर किए जाते हैं। इसीलिए विद्वान दो शब्दों में अंतर करते हैं — **"मानवीय कर्म" (Human Action)** और **"मनुष्य के कर्म" (Action of Human)**।

◆ **मानवीय कर्म (Human Action):** वह काम जिसमें तीन बातें एक साथ हों — **ज्ञान** (व्यक्ति जानता है कि वह क्या कर रहा है), **स्वतंत्र इच्छा** (उसके पास करने या न करने का विकल्प है) और **स्वैच्छिकता** (वह अपनी मर्ज़ी से कर रहा है)। जैसे — पढ़ना, रिश्तत लेना, किसी की मदद करना, धूम्रपान करना। ऐसे कामों पर ही "सही" या "गलत" का निर्णय दिया जाता है।

◆ **मनुष्य के कर्म (Action of Human):** वे काम जो शरीर अपने-आप करता है और जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता — जैसे छींकना, जम्हाई लेना, नींद में करवट बदलना। इन्हें नैतिक या अनैतिक नहीं कहा जा सकता, इसलिए ये नीतिशास्त्र के क्षेत्र से बाहर हैं।

◆ **चरित्र और आचरण का संबंध:** बार-बार किए गए मानवीय कर्म आदत बनते हैं, आदतें मिलकर **चरित्र (Character)** बनाती हैं, और चरित्र फिर हमारे **आचरण (Conduct)** में दिखाई देता है। इसीलिए नीतिशास्त्र को कभी-कभी "चरित्र का विज्ञान" भी कहा जाता है।

◆ **सर्वोच्च शुभ (Summum Bonum):** नीतिशास्त्र का सबसे बड़ा प्रश्न है — जीवन का सबसे ऊँचा लक्ष्य या "सबसे बड़ा अच्छा" क्या है? किसी के लिए यह सुख है, किसी के लिए कर्तव्य, तो भारतीय परंपरा में यह मोक्ष या लोक-कल्याण है।

🔍 आसान परिभाषा: मानवीय कर्म (Human Action)

📖 **परिभाषा:** वह सचेत कार्य जो ज्ञान, स्वतंत्र इच्छा और स्वैच्छिकता — तीनों के साथ किया गया हो; केवल ऐसे कार्य ही नैतिक मूल्यांकन के दायरे में आते हैं।

💡 **आसान भाषा में:** जो काम आपने जान-बूझकर, अपनी मर्ज़ी से और विकल्प होते हुए चुना — उसी के लिए आपकी तारीफ़ या आलोचना होगी। 🏠 **उदाहरण:** भीड़ में धक्का लगने से किसी का गिलास गिर जाए तो यह "मनुष्य का कर्म" है; पर जान-बूझकर गिलास फेंकना "मानवीय कर्म" है।

नीतिशास्त्र अकेला नहीं चलता — यह कई दूसरे विषयों के प्रश्नों से भी जुड़ता है। नीचे की तालिका इसे सरल रूप में दिखाती है:

प्रश्नों का प्रकार	नीतिशास्त्र किन बातों की जाँच करता है	सरल उदाहरण
मनोवैज्ञानिक	ऐच्छिक कार्य क्या है, उद्देश्य (Motive) कैसे बनते हैं, इच्छा और सुख का संबंध	भूख के कारण चोरी — मजबूरी थी या लालच?
दार्शनिक	मानव व्यक्तित्व का स्वभाव, सर्वोच्च शुभ क्या है	खुशी बड़ी है या कर्तव्य?

प्रश्नों का प्रकार	नीतिशास्त्र किन बातों की जाँच करता है	सरल उदाहरण
धार्मिक	संकल्प की स्वतंत्रता, आत्मा, कर्म-फल	क्या हर कर्म का फल मिलता है?
सामाजिक	व्यक्ति और राज्य का संबंध, निजी हित बनाम सामाजिक हित	अपने खेत के लिए नहर का पानी रोकना
क़ानूनी	कोई क़ानून नैतिक है या नहीं, दंड का नैतिक आधार	मृत्युदंड उचित है या नहीं?

1.4 नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम

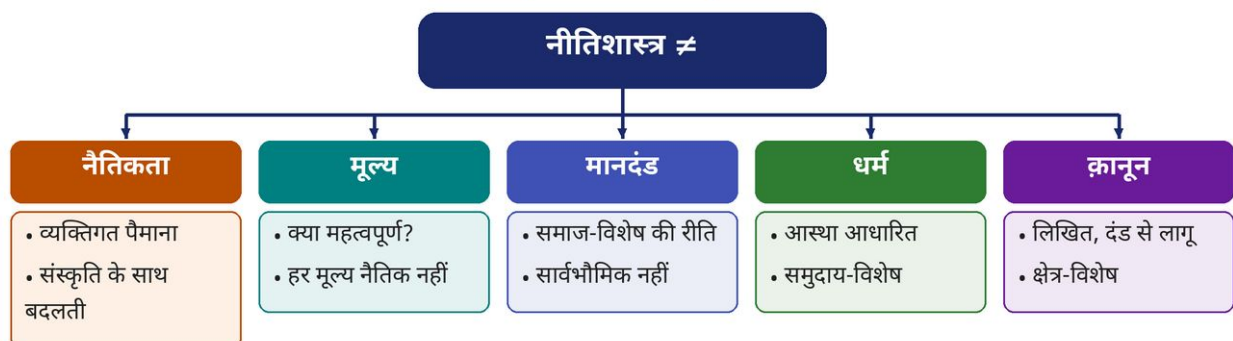
बहुत से विद्यार्थी नीतिशास्त्र को नैतिकता, मूल्य, सामाजिक रीति, धर्म या क़ानून — इनमें से किसी एक के बराबर मान लेते हैं। ये सब आपस में जुड़े ज़रूर हैं, पर एक-दूसरे के समान नहीं हैं। अंतर समझने से पूरे विषय की समझ साफ़ होती है।

नीतिशास्त्र ≠	अंतर का कारण	उदाहरण
नैतिकता (Morality)	नैतिकता व्यक्ति, परिवार या समुदाय का अपना पैमाना है, जबकि नीतिशास्त्र अपेक्षाकृत सार्वभौमिक मानकों की व्यवस्थित खोज है।	किसी समुदाय में बहुविवाह स्वीकार्य हो सकता है, पर समानता के नैतिक सिद्धांत पर यह खरा नहीं उतरता।
मूल्य (Values)	मूल्य बताते हैं कि क्या "महत्वपूर्ण" है; नीतिशास्त्र बताता है कि क्या "सही" है। हर मूल्य नैतिक नहीं होता।	जाति-नियमों का पालन किसी के लिए "मूल्य" हो सकता है, पर वह नैतिक नहीं है।
सामाजिक मानदंड (Social Norms)	मानदंड किसी विशेष समाज की रीतियों से बनते हैं, सार्वभौमिक नहीं होते।	बड़ों का सम्मान नैतिक भी है, पर दहेज एक रीति होकर भी अनैतिक है।
धर्म (Religion)	धर्म आस्था पर टिका है और किसी समुदाय-विशेष से जुड़ा है; नीतिशास्त्र तर्क पर आधारित है।	फिर भी करुणा, अहिंसा, सत्य जैसे कई नैतिक सिद्धांत धर्मों से ही आए हैं।
क़ानून (Law)	क़ानून किसी देश/क्षेत्र तक सीमित, लिखित और दंड से लागू होता है; नीतिशास्त्र अलिखित और अंतरात्मा से संचालित।	नमक क़ानून क़ानूनी था, पर गांधीजी ने उसे अनैतिक मानकर तोड़ा।

धर्म और नीतिशास्त्र अलग होते हुए भी गहराई से जुड़े हैं, क्योंकि मानव इतिहास में धर्म पहले आया और उसी से अनेक नैतिक सिद्धांत निकले। प्रमुख धर्मों के मूल नैतिक मूल्य इस प्रकार हैं:

धर्म	प्रमुख नैतिक मूल्य
हिंदू धर्म	धर्म (कर्तव्य), कर्म का नियम, निष्काम कर्म, अहिंसा, वसुधैव कुटुम्बकम्, सत्यमेव जयते
जैन धर्म	पंच महाव्रत — सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (संग्रह न करना), ब्रह्मचर्य; त्रिरत्न — सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चरित्र
बौद्ध धर्म	शील (सदाचार), समाधि, प्रज्ञा; मैत्री (प्रेम-भाव), करुणा, मुदिता (दूसरों की खुशी में खुशी), उपेक्षा (समभाव); मध्यम मार्ग, "अप्प दीपो भव" (अपना दीपक स्वयं बनो)
इस्लाम	अद्ल (न्याय), रहमत (करुणा), ज़कात (दान), समानता, भाईचारा, अख़लाक़ (अच्छा चरित्र)
ईसाई धर्म	प्रेम, करुणा, क्षमा, विनम्रता; "स्वर्णिम नियम" — दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम अपने साथ चाहते हो
सिख धर्म	सेवा, लंगर (साझा भोजन), "किरत करो, नाम जपो, वंड छको" — ईमानदारी से कमाओ, ईश्वर को याद करो, बाँटकर खाओ

नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम



चित्र 1.4: नीतिशास्त्र क्या नहीं है? — पाँच भ्रम

1.5 नैतिक उत्तरदायित्व कब सीमित माना जाता है? (Limited Moral Responsibility)

निम्नलिखित स्थितियों में व्यक्ति के नैतिक उत्तरदायित्व को सीमित माना जाता है, क्योंकि इनमें सही-गलत तय करने की स्वतंत्र क्षमता, ज्ञान या विकल्प पर्याप्त रूप से मौजूद नहीं होते:

1. जिस व्यक्ति में नैतिक ज्ञान, तर्कबुद्धि और स्वतंत्र निर्णय की पर्याप्त क्षमता विकसित ही न हुई हो — जैसे घने जंगल में बिल्कुल अकेले पले-बढ़े किसी व्यक्ति को हम पूरी तरह 'अनैतिक' नहीं कह सकते, क्योंकि उसे कभी समाज में सही-गलत सिखाया ही नहीं गया।
2. गंभीर मानसिक अस्वस्थता की स्थिति — भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 22 के अनुसार, यदि व्यक्ति मानसिक अस्वस्थता के कारण कृत्य की प्रकृति या उसके गलत/विधि-विरुद्ध होने को समझने में ही असमर्थ था, तो उसे आपराधिक दायित्व से छूट मिल सकती है — यह पूर्ण छूट नहीं, बल्कि एक शर्त-आधारित प्रावधान है।
3. बहुत छोटे बच्चे — कानून में 7 वर्ष से कम आयु के बच्चे को आपराधिक दायित्व से मुक्त रखा गया है, क्योंकि जैसे एक 4 साल का बच्चा किसी का खिलौना छीन ले तो हम उसे 'चोर' नहीं कहते — उसमें मालिकाना हक की समझ ही विकसित नहीं हुई (यह मुख्यतः आपराधिक दायित्व की अवधारणा है, नीतिशास्त्र का सामान्य नियम नहीं)।
4. पशु-पक्षी — इनके पास नैतिक विवेक की मानवीय क्षमता नहीं मानी जाती।
5. अनेच्छिक कार्य (Involuntary Actions) — जैसे नींद में चलते हुए किसी चीज़ का टूट जाना।
6. गंभीर बाह्य दबाव में करवाया गया कार्य — जैसे किसी व्यक्ति को बंदूक की नोक पर धमकाकर कोई अपराध करने पर मजबूर किया जाए, तो उस व्यक्ति की नैतिक/कानूनी जवाबदेही सीमित हो सकती है (दोष मुख्यतः धमकाने वाले का माना जाता है)।

 **इन्हें सीमित उत्तरदायित्व क्यों माना जाता है:** इसका मुख्य आधार 'नैतिक अभिकर्ता' (Moral Agent) की अवधारणा है — यानी सही-गलत समझने की मानसिक क्षमता, ज्ञान और स्वतंत्र विकल्प का होना। जहाँ ये तीनों पर्याप्त रूप से मौजूद न हों, वहाँ नैतिक मूल्यांकन कठोरता से नहीं किया जा सकता — यह पूर्ण अपवाद नहीं, बल्कि मात्रा (Degree) का प्रश्न है।

1.6 नीतिशास्त्र की पूर्व-मान्यताएँ (Pre-conditions)

- ◆ **संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will):** नैतिक मूल्यांकन के लिए सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यक्ति के पास पर्याप्त स्वेच्छा, जानकारी और विकल्प होने चाहिए — इनकी कमी उत्तरदायित्व को कम कर सकती है। (ध्यान रहे — नियतिवाद और नैतिक उत्तरदायित्व को पूरी तरह विपरीत मानना ज़रूरी नहीं; 'सामंजस्यवाद (Compatibilism)' जैसे विचार दोनों को साथ स्वीकारने का भी प्रयास करते हैं — इनके अनुसार हमारे कार्य कारणों से प्रभावित होते हुए भी, यदि वे हमारी अपनी इच्छा और सोच से निकले हैं, तो हम उनके लिए ज़िम्मेदार हैं; यह एक दार्शनिक बहस का विषय है।)
- ◆ **ज्ञान एवं उद्देश्य:** कर्ता को अपने कार्य का ज्ञान और उद्देश्य होना चाहिए — जैसे किसी को यह पता ही न हो कि दवा ज़हरीली है और वह गलती से किसी को दे दे, तो यह जानबूझकर किया अपराध नहीं माना जाता।
- ◆ **विकल्पों की उपलब्धता:** जब विकल्प उपलब्ध हों तभी नैतिक चुनाव संभव है — जैसे किसी अधिकारी के पास घूस लेने या न लेने, दोनों विकल्प खुले हों, तभी उसका फैसला 'नैतिक' या 'अनैतिक' कहलाएगा।

1.7 नैतिकता की विशेषताएँ

- ◆ **सार्वभौमिकता:** कुछ मूल नैतिक नियमों पर व्यापक सामाजिक सहमति (Broad Consensus) पाई जाती है (जैसे निर्दोष की हत्या को लगभग सभी समाज गलत मानते हैं) — हालाँकि युद्ध, आत्मरक्षा या न्यायिक दंड जैसे संदर्भों में इस पर नैतिक विमर्श जटिल हो सकता है, यह पूर्ण रूप से निरपवाद नियम नहीं है।
- ◆ **सापेक्ष वस्तुनिष्ठता:** एक समाज में नैतिक नियमों की सामान्य सहमति होती है, पर अलग-अलग समाजों में भिन्नता संभव है। यानी एक समाज के भीतर लोग अधिकतर नैतिक बातों पर सहमत होते हैं, इसलिए वहाँ नियम 'वस्तुनिष्ठ' (सबके लिए एक जैसे) लगते हैं; पर दूसरे समाज से तुलना करें तो वही नियम बदल सकते हैं, इसलिए वे 'सापेक्ष' हैं — जैसे भोजन, पहनावे या विवाह से जुड़े नैतिक नियम।
- ◆ **गत्यात्मकता:** नैतिक मानक समय के साथ बदलते हैं (जैसे सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का उन्मूलन, LGBTQ+ अधिकारों की मान्यता)।
- ◆ **अर्जित:** नैतिक व्यवहार का बड़ा भाग परिवार, समाज और शिक्षा से सीखा-विकसित होता है; हालाँकि सहानुभूति जैसी कुछ प्रवृत्तियों का एक आंशिक जैविक आधार भी माना जाता है।
- ◆ **आंतरिक प्रेरणा:** सच्चा नैतिक आचरण बाहरी दबाव या सज़ा के डर से नहीं, बल्कि अंतरात्मा की आवाज़ से चलता है। जैसे कोई व्यक्ति इसलिए चोरी न करे कि पुलिस पकड़ लेगी, तो यह केवल क़ानून का डर है; पर अगर वह इसलिए चोरी न करे कि उसका मन इसे गलत मानता है, तो यह नैतिकता है।

1.8 नीतिशास्त्र का सार (Essence of Ethics)

किसी चीज़ का "सार" (Essence) उसका वह मूल गुण है जो उसकी पहचान तय करता है। नीतिशास्त्र के सार को नीचे के आठ लक्षणों से समझा जा सकता है:

- ◆ **अच्छे-बुरे का निर्धारण:** नीतिशास्त्र हमारे विचार, आचरण और व्यवहार की अच्छाई-बुराई तय करने में मदद करता है।
- ◆ **समाज में ही बनता है:** कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था लेकर पैदा नहीं होता। परिवार, समाज और संस्कृति के साथ रहकर ही वह सही-गलत सीखता है।

- ◆ **मनुष्य नीतिशास्त्र को बनाता भी है:** दास-प्रथा, सती-प्रथा, छुआछूत कभी "सामान्य" मानी जाती थीं; राजा राम मोहन राय, डॉ. अंबेडकर जैसे सुधारकों ने इन मानकों को बदल दिया।
- ◆ **संदर्भ पर निर्भर:** समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार नैतिक मानकों का अर्थ और तीव्रता बदलती है। जैसे भूख से तड़पते व्यक्ति का रोटी चुराना और किसी अमीर का लालच में चोरी करना — दोनों चोरी हैं, पर नैतिक दृष्टि से दोनों को बराबर गंभीर नहीं माना जाता।
- ◆ **क्रानून से आगे:** नैतिक मानक नियम-पुस्तिका से ऊपर जाते हैं। जैसे — "घटना हमारे थाने की सीमा में नहीं हुई" कहकर पीड़ित की मदद न करना क्रानूनन शायद सही हो, पर नैतिक रूप से गलत है।
- ◆ **अंदर की ज़िम्मेदारी से टिकता है:** नीतिशास्त्र केवल बाहरी जवाबदेही (Accountability) से नहीं, बल्कि भीतर की ज़िम्मेदारी (Responsibility) से चलता है।
- ◆ **निर्देशात्मक भी, वर्णनात्मक भी:** यह बताता है कि "कैसे व्यवहार करना चाहिए" (निर्देशात्मक) और यह भी देखता है कि "लोग वास्तव में कैसे व्यवहार करते हैं" (वर्णनात्मक)।
- ◆ **कई स्तरों पर काम करता है:** व्यक्ति, परिवार, संगठन, समाज, राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय — हर स्तर की नैतिकता दूसरे स्तर को प्रभावित करती है।

“ नीतिशास्त्र यह जानना है कि आपको क्या करने का अधिकार है और क्या करना उचित है — इन दोनों में क्या अंतर है। (Ethics is knowing the difference between what you have a right to do and what is right to do.) ” — पॉटर स्टीवर्ट (Potter Stewart), अमेरिकी न्यायाधीश

1.9 नीतिशास्त्र को प्रभावित करने वाले कारक (Sources / Factors)

हमारी नैतिक सोच किसी एक स्रोत से नहीं बनती। अनेक कारक मिलकर यह तय करते हैं कि हम किसे सही और किसे गलत मानेंगे:

कारक	कैसे प्रभावित करता है	उदाहरण
धर्म	धर्मग्रंथ बताते हैं कि व्यक्ति को कैसे आचरण करना चाहिए	जैन धर्म में मांसाहार निषिद्ध
परंपरा व संस्कृति	हर संस्कृति के अपने मूल्य होते हैं	पश्चिम में व्यक्तिवाद, भारत में परोपकार व सामूहिकता
क्रानून व संविधान	अधिकांश नागरिकों द्वारा स्वीकृत नैतिक मानक क्रानून में बदल जाते हैं	संविधान के न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व
नेतृत्व	नेता के आचरण से अनुयायियों का आचरण तय होता है	स्वतंत्रता सेनानियों की सहिष्णु, लोकतांत्रिक परंपरा
दर्शन	विचारकों के सिद्धांत सोचने की दिशा देते हैं	अरस्तू से गांधी तक
भूगोल	संसाधनों की उपलब्धता संस्कृति और नैतिक सोच बदलती है	समुद्र-तटीय क्षेत्रों में मछली भोजन का सामान्य हिस्सा
आर्थिक व्यवस्था	लाभ को कोई व्यवस्था उचित, कोई अनुचित मानती है	पूँजीवाद बनाम साम्यवाद
संगठन	संस्था की कार्य-संस्कृति कर्मचारियों की नैतिकता गढ़ती है	ईमानदार कार्य-संस्कृति वाले विभाग
समय	नैतिक मानक युगों के साथ बदलते हैं	18वीं बनाम 21वीं सदी के मूल्य
अनुभव	कोई बड़ी घटना पूरी सोच बदल देती है	कलिंग युद्ध के बाद अशोक का धम्म की ओर मुड़ना
शिक्षा	ज्ञान से सोच और तर्क-शक्ति बदलती है	वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अंधविश्वास का विरोध
सत्ता	समाज के प्रभावशाली वर्ग अक्सर सही-गलत की परिभाषा तय करते हैं	औपनिवेशिक शासकों द्वारा "सभ्य-असभ्य" की परिभाषा

नीतिशास्त्र को प्रभावित करने वाले 12 कारक

हमारी नैतिक सोच



चित्र 1.5: नीतिशास्त्र को प्रभावित करने वाले 12 कारक

2. नैतिकता (Morality) और नीतिशास्त्र (Ethics) — तुलना

2.1 नैतिकता (Morality) की परिभाषा

- ◆ नैतिकता व्यक्ति के विश्वासों, विचारों, दृष्टिकोणों, व्यवहार और कार्यों को मार्गदर्शित करने वाले **व्यक्तिगत सिद्धांतों** का समूह है।
- ◆ नैतिकता व्यक्तिगत चरित्र को परिभाषित करती है — यह **आंतरिक** है और उच्च व्यक्तिपरकता रखती है — यानी यह हर व्यक्ति की अपनी सोच, परवरिश और अंतरात्मा पर निर्भर करती है, इसलिए दो लोगों की नैतिकता एक-दूसरे से अलग हो सकती है।

कारक	नीतिशास्त्र (Ethics)	नैतिकता (Morality)
परिभाषा	समाज या समूह की आचार संहिता	व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं का समूह
प्रभाव	सामाजिक मानदंड निर्धारित करता है	व्यक्तिगत चरित्र परिभाषित करता है
स्रोत	बाह्य (External) — समाज, कानून, संहिता	आंतरिक (Internal) — अंतरात्मा
व्यक्तिपरकता	कम	अधिक
सामान्य प्रयोग में	विश्लेषणात्मक/संस्थागत आचार से अधिक जुड़ी मानी जाती है	व्यक्तिगत/सामाजिक व्यवहार से अधिक जुड़ी मानी जाती है
प्रकृति	सामान्य विज्ञान की तरह नियम-आधारित	व्यक्ति-विशेष की अंतरात्मा-आधारित

नीतिशास्त्र बनाम नैतिकता — मुख्य अंतर

नीतिशास्त्र (Ethics)	बनाम	नैतिकता (Morality)
एथॉस — चरित्र	मूल शब्द	मोरेस — रीति-रिवाज़
समाज, पेशा, संस्था के मानक	स्रोत	व्यक्ति का विवेक, परवरिश
बाहरी, अपेक्षाकृत सार्वभौमिक	प्रकृति	आंतरिक, व्यक्तिपरक
धीरे-धीरे बदलता है	परिवर्तन	व्यक्ति-व्यक्ति में अलग
डॉक्टर की आचार संहिता	उदाहरण	डॉक्टर का निजी विश्वास

चित्र 1.6: नीतिशास्त्र बनाम नैतिकता — मुख्य अंतर

2.2 व्यावहारिक उदाहरण

- ◆ युद्ध में शत्रु सैनिक की हत्या — समाज इसे सामान्यतः स्वीकार्य मानता है (देश की रक्षा), पर व्यक्तिगत रूप से यह किसी सैनिक की अंतरात्मा को कचोट भी सकती है (किसी की जान लेना)। ध्यान रहे — युद्ध में भी न्यायोचित-युद्ध सिद्धांत (Just War Theory), अनुपातिकता और नागरिकों की सुरक्षा जैसी नैतिक सीमाएँ लागू होती हैं, यह असीमित छूट नहीं है।
- ◆ चिकित्सा-आपातकाल में डॉक्टर का व्यक्तिगत/धार्मिक कारणों से इनकार करना उसकी निजी नैतिक मान्यता (Morality) हो सकता है, पर चिकित्सा-आचार-संहिता के अनुसार आपातकाल में मरीज़ के जीवन व स्वास्थ्य की सुरक्षा सर्वोच्च मानी जाती है — इसलिए इसे केवल एक सरल 'नीतिशास्त्र (Ethics) बनाम नैतिकता (Morality)' उदाहरण न मानकर, एक जटिल वास्तविक दुविधा के रूप में देखना बेहतर है।

◆ सिविल सेवा में किताबी नियम का पालन और मानवीय आधार पर नियमों से परे जाकर सहायता करना — दोनों ही नीतिशास्त्र (Ethics) का हिस्सा हो सकते हैं, बशर्ते वह सहायता कानून, समानता और जवाबदेही के दायरे में हो। इन्हें दो अलग 'तरह के अधिकारी' में बाँटना ज़रूरी नहीं।

✨ एक और आधुनिक उदाहरण

कोविड-19 महामारी (Covid-19, 2020-21) के दौरान कई अधिकारियों ने उपलब्ध संसाधनों, सामुदायिक सहयोग और अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए गरीबों तक राशन-दवा पहुँचाने के रास्ते निकाले। यह उनकी अंतरात्मा (नैतिकता/Morality) की प्रेरणा और संस्थागत नीतिशास्त्र (Ethics) — दोनों के तालमेल से संभव हुआ।

2.3 प्रशासन में प्राथमिकता — एक संतुलित दृष्टिकोण

एक सिविल सेवक के लिए यह कोई कठोर, सार्वभौमिक क्रम नहीं है कि 'पहले कानून, फिर नीतिशास्त्र, फिर नैतिकता' — बल्कि सामान्य सिद्धांत यह है कि सिविल सेवक को संविधान और कानून का अनिवार्य पालन करते हुए, लोकहित, निष्पक्षता, करुणा, सत्यनिष्ठा तथा विवेक के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। नीचे दी गई तालिका इसे स्तरों में समझने में मदद करती है:

स्तर	श्रेणी	उदाहरण
प्रथम (कठोर अनुपालन)	प्रशासनिक कानून (Administrative Laws)	आचार संहिता, BNS (भारतीय न्याय संहिता), BNSS (भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता), GST कानून आदि
द्वितीय (मार्गदर्शक सिद्धांत)	प्रशासनिक नीतिशास्त्र (Administrative Ethics)	नोलन सिद्धांत (Nolan Principles), द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग, सन्थानम समिति (1964, भ्रष्टाचार-निवारण)
तृतीय (विवेकाधिकार)	प्रशासनिक नैतिकता (Administrative Morality)	विवेकाधीन शक्ति (Discretionary Power), भावनात्मक बुद्धिमत्ता, कर्तव्य से परे जाना

प्रशासन में प्राथमिकता — तीन स्तर

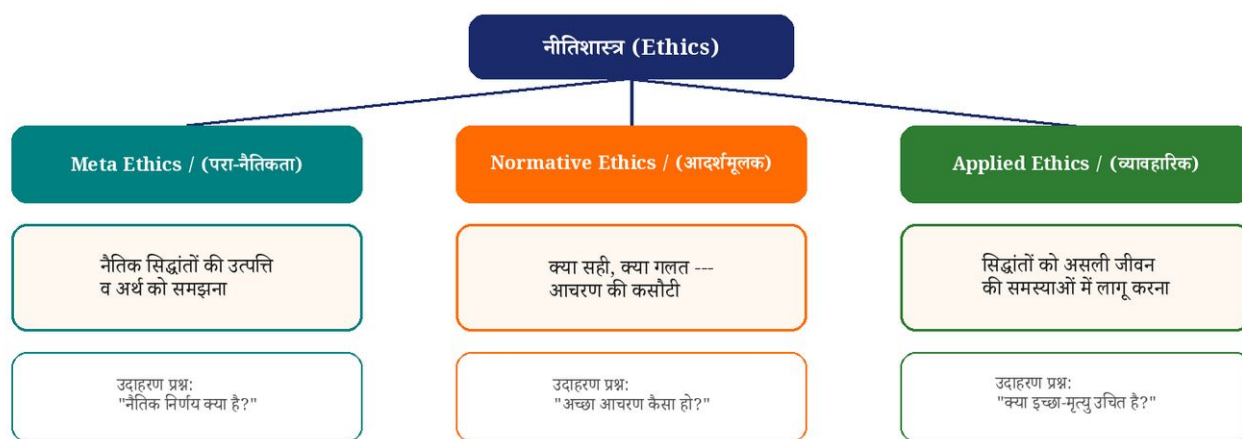


चित्र 1.7: प्रशासन में प्राथमिकता — तीन स्तर

3. नीतिशास्त्र के प्रकार (Types of Ethics)

नीतिशास्त्र को तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटा जाता है — परा-नैतिकता (Meta Ethics), आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) और व्यावहारिक नैतिकता (Applied Ethics)। तीनों में फर्क समझने का सबसे आसान तरीका है — क्रिकेट का उदाहरण।

नीतिशास्त्र के 3 प्रकार (Types of Ethics)



उपमा: Meta = "क्रिकेट क्या है?" Normative = "अच्छा क्रिकेट कैसे खेलें?" Applied = "Mankading सही है या गलत?"

चित्र 1.8: नीतिशास्त्र के 3 प्रकार — परा, आदर्शमूलक और व्यावहारिक नीतिशास्त्र (Meta, Normative, Applied Ethics)

3.1 परा-नैतिकता (Meta Ethics)

- ◆ नैतिक सिद्धांतों की सैद्धांतिक उत्पत्ति और अर्थ को समझने में सहायता करता है — यानी यह पूछता है कि 'अच्छा' शब्द का मतलब ही क्या है।
- ◆ प्रश्न जैसे — "नैतिक निर्णय क्या है?", "शुभत्व क्या है?" — यही परा-नैतिकता (Meta Ethics) का विषय है।
- ◆ इसके अंतर्गत आते हैं: नैतिक यथार्थवाद (Moral Realism — Universalism) और नैतिक अयथार्थवाद (Moral Anti-Realism — Subjectivism)। नैतिक यथार्थवाद मानता है कि सही-गलत के कुछ वस्तुनिष्ठ सत्य होते हैं जो हर व्यक्ति पर समान रूप से लागू होते हैं, जैसे 'निर्दोष को सताना गलत है'; जबकि नैतिक अयथार्थवाद मानता है कि सही-गलत कोई बाहरी सत्य नहीं, बल्कि व्यक्ति या समाज की भावना और राय पर टिका होता है।
- उपमा: "क्रिकेट क्या है? क्या गली-क्रिकेट को भी क्रिकेट कहा जा सकता है?" — यह सवाल खुद खेल के मूल स्वरूप पर है, किसी एक मैच पर नहीं।

“ बिना परखा हुआ जीवन जीने योग्य नहीं है। (The unexamined life is not worth living.) ” — सुकरात (Socrates)

3.2 आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics)

- ◆ यह बताता है कि व्यक्ति को क्या करना चाहिए — यानी नैतिक रूप से सही आचरण की कसौटियाँ (Criteria) क्या हो सकती हैं।
- ◆ यह व्यवहार के मूल्यांकन के लिए एक तरह की कसौटी (Litmus Test) है — किस काम की समाज में प्रशंसा होगी और किस काम की नैतिक निंदा, यह इसी से तय होता है (ध्यान रहे — दंड का वास्तविक निर्धारण मुख्यतः कानून करता है, नीतिशास्त्र नैतिक मानदंड गढ़ता है)।
- उपमा: "क्या वह अच्छा क्रिकेट खेल रहा है?" — यानी किसी खिलाड़ी के खेलने के तरीके का मूल्यांकन।

तीन असली प्रशासकों की कहानियाँ देखिए, जो दिखाती हैं कि आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) — यानी "अधिकारी को कैसा व्यवहार करना चाहिए" — किताबी नियम से आगे जाकर व्यवहार में कैसी दिखती है:

☀ कहानी 1 — पी. नरहरि (P. Narahari) और 'पंच स्पर्श' अभियान

मध्य प्रदेश के IAS अधिकारी पी. नरहरि ने ग्वालियर, इंदौर, सिंगरौली जैसे कई जिलों में कलेक्टर रहते हुए एक बात नोटिस की — सरकारी भवनों में रैंप, रेलिंग, नीची टॉयलेट सीट जैसे नियम कागज़ पर तो मौजूद थे, पर किसी ने उन्हें ठीक से लागू ही नहीं किया था, जिससे दिव्यांगजनों को हर सरकारी दफ्तर में परेशानी झेलनी पड़ती थी। उन्होंने खुद लगभग 200 लोगों को 'सुगम्यता ऑडिट' (Accessibility Audit) करने की ट्रेनिंग दी, ताकि हर दफ्तर जाँचकर सही किया जा सके। ग्वालियर में उन्होंने 'पंच स्पर्श' नाम से एक योजना शुरू की, जिसमें दृष्टिबाधित लोगों को मालिश और एक्वूप्रेशर जैसी पाँच थैरेपी सिखाकर रोज़गार मेलों और कॉल-सेंटर नौकरियों से जोड़ा गया, जिससे उनकी आमदनी में उल्लेखनीय सुधार हुआ — इस काम के लिए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला। यही आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) है — सिर्फ नियम की किताब में रैंप का ज़िक्र होना काफी नहीं, अधिकारी का असली काम है उसे ज़मीन पर लागू करवाना।

☀ कहानी 2 — प्रशांत नायर (Prashant Nair) और 'ऑपरेशन सुलेमानी'

केरल के कोझीकोड ज़िले के कलेक्टर प्रशांत नायर ने पाया कि शहर में भूख किसी को दिखती नहीं थी — यह सिर्फ सड़क पर सोने वालों की

समस्या नहीं थी, बल्कि कई साधारण दिखने वाले लोग भी चुपचाप भूखे रह जाते थे, शर्म के मारे किसी को बता नहीं पाते थे। अप्रैल 2015 में उन्होंने 'ऑपरेशन सुलेमानी' शुरू किया — नाम कोड़ीकोड की मशहूर सुलेमानी चाय पर रखा गया। इसमें मुफ्त खाने के कूपन सरकारी दफ्तरों, अखबारों और वालंटियरों के ज़रिए बांटे जाते थे, और भूखा व्यक्ति बिना किसी शर्मादगी के शहर के करीब 125 भागीदार होटलों में जाकर कूपन दिखाकर खाना खा सकता था। आम नागरिक गुमनाम रहकर दान-पेटी में पैसे डालते थे, जिससे होटलों को भुगतान होता था — प्रशासनिक खर्च अलग से जुटाया जाता था ताकि दान का पूरा पैसा सिर्फ खाने पर ही खर्च हो। एक ही साल में 9000 से ज़्यादा लोगों को बिना पैसे खत्म हुए खाना मिल चुका था। यह दिखाता है कि आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) सिर्फ 'गरीबों की मदद करो' कहने में नहीं, बल्कि एक ऐसा भरोसेमंद सिस्टम बनाने में है जिसमें मदद पाने वाले की गरिमा भी बनी रहे।

☀ कहानी 3 — कौस्तुभ दिवेगांवकर (Kaustubh Diwegaonkar) — ज़मीन पर बैठा कलेक्टर

महाराष्ट्र के उस्मानाबाद ज़िले के कलेक्टर कौस्तुभ दिवेगांवकर के पास एक दिव्यांग व्यक्ति अपनी शिकायत लेकर आया, जो शारीरिक स्थिति के कारण सामने रखी कुर्सी पर बैठ नहीं पा रहा था। कलेक्टर ने बिना किसी हिचक के खुद ज़मीन पर बैठकर उस व्यक्ति की पूरी बात सुनी, ताकि दोनों की आँखें एक ही तल पर हों और सामने वाले को असहज महसूस न हो। यह तस्वीर देश भर में वायरल हुई और IAS एसोसिएशन ने इसे "सुलभ, सम्मानजनक और मानवीय प्रशासन" का उदाहरण बताया। यही आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) का सबसे सीधा सबक है — बड़ा पद मिलने के बाद भी व्यवहार में विनम्रता और बराबरी बनाए रखना ही सही आचरण है।

3.3 व्यावहारिक नैतिकता (Applied Ethics)

- ◆ नैतिक सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की समस्याओं में लागू करता है।
- ◆ प्रश्न जैसे — "क्या इच्छा-मृत्यु (Euthanasia) उचित है?", "क्या मैनकाडिंग (Mankading — क्रिकेट में एक विवादित रन-आउट तरीका) नैतिक है?"
- ◆ इसके प्रमुख क्षेत्र हैं — चिकित्सा नैतिकता (जैसे अंग-प्रत्यारोपण या इच्छामृत्यु के प्रश्न), पर्यावरण नैतिकता (जैसे विकास के लिए जंगल काटना कितना उचित है), खेल नैतिकता (जैसे डोपिंग या मैच फिक्सिंग) और व्यापार नैतिकता (जैसे मिलावट, भ्रामक विज्ञापन)। यानी हर पेशे और क्षेत्र की ठोस समस्याओं पर नैतिक सिद्धांतों को लागू करना ही व्यावहारिक नैतिकता है।

3.4 वर्णनात्मक नीतिशास्त्र (Descriptive Ethics) — चौथा आयाम

ऊपर के तीन आयामों के अलावा कई विद्वान एक चौथा आयाम भी मानते हैं — **वर्णनात्मक या तुलनात्मक नीतिशास्त्र (Descriptive / Comparative Ethics)**। यह शाखा यह नहीं बताती कि क्या करना "चाहिए", बल्कि यह खोजती है कि लोग वास्तव में किसे सही और किसे गलत मानते हैं।

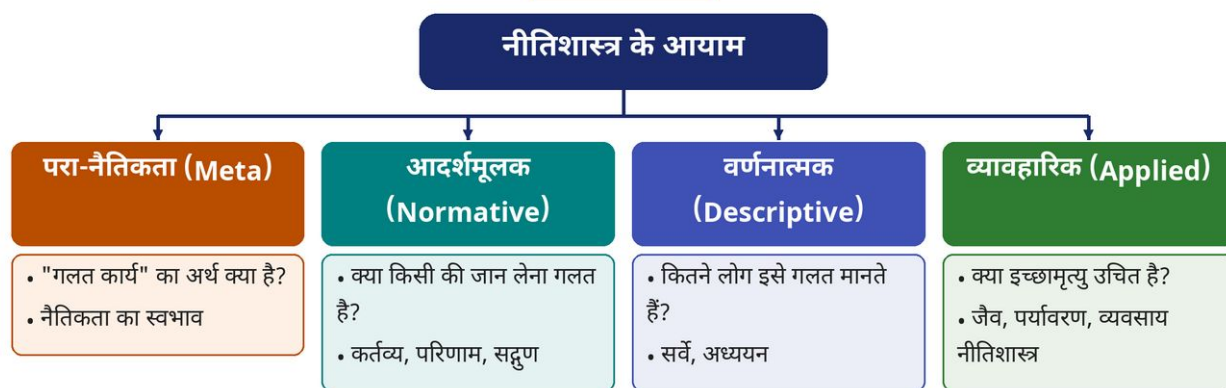
- ◆ यह एक तरह का अनुभवजन्य (Empirical) अध्ययन है — सर्वेक्षण, मानवशास्त्र (Anthropology), मनोविज्ञान और समाजशास्त्र की विधियों से विभिन्न समाजों की नैतिक मान्यताओं को दर्ज किया जाता है।
- ◆ प्रश्न का उदाहरण: "आपके ज़िले के कितने प्रतिशत लोग दहेज लेना गलत मानते हैं?" — यह वर्णनात्मक प्रश्न है; जबकि "क्या दहेज लेना गलत है?" — यह आदर्शमूलक प्रश्न है।
- ◆ लॉरेंस कोलबर्ग (Lawrence Kohlberg) का नैतिक विकास सिद्धांत (आगे खंड 12 में विस्तार से) भी वर्णनात्मक नीतिशास्त्र का ही उदाहरण है, क्योंकि यह बताता है कि मनुष्य की नैतिक सोच वास्तव में कैसे विकसित होती है।
- ◆ **प्रशासनिक उपयोग:** किसी जनजातीय क्षेत्र में योजना लागू करने से पहले वहाँ की नैतिक-सामाजिक मान्यताओं का अध्ययन करना — ताकि नीति लोगों पर थोपी न जाए, बल्कि उनसे जुड़कर लागू हो।

🔍 आसान परिभाषा: वर्णनात्मक नीतिशास्त्र (Descriptive Ethics)

📖 **परिभाषा:** नीतिशास्त्र की वह शाखा जो किसी समाज या समूह की वास्तविक नैतिक मान्यताओं और व्यवहार का तथ्यात्मक अध्ययन करती है, बिना यह कहे कि वे सही हैं या गलत।

💡 **आसान भाषा में:** यह "क्या होना चाहिए" नहीं, बल्कि "लोग क्या मानते हैं" — इसकी तस्वीर खींचता है। 🏠 **उदाहरण:** चुनाव से पहले का सर्वे बताता है कि लोग किसे वोट देंगे; वह यह नहीं बताता कि किसे वोट देना सही है।

नीतिशास्त्र के चार आयाम — एक ही विषय पर चार तरह के प्रश्न



चित्र 1.9: नीतिशास्त्र के चार आयाम — एक ही विषय पर चार तरह के प्रश्न

3.5 आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) के उपभेद

सिद्धांत	मुख्य विचार	समर्थक	प्रशासनिक उदाहरण
1. कर्तव्यवाद (Deontology)	नैतिक नियम और कर्तव्य को प्राथमिकता — भले ही परिणाम अनुकूल न हों।	इमैनुएल कांट, डब्ल्यू.डी. रॉस गीता का निष्काम-कर्म भी इससे मिलता-जुलता भाव रखता है (गीता का दर्शन इससे कहीं व्यापक है)	अधिकारी कानून का पालन करे, चाहे परिणाम जो हो
2. परिणामवाद (Teleology)	कार्य की नैतिकता का मूल्यांकन उसके परिणामों/कल्याण के आधार पर।	बेन्थम, जे.एस. मिल चार्वाक को सामान्यतः भौतिकवादी/सुखवादी परंपरा से जोड़ा जाता है	अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण
3. सद्गुण नैतिकता (Virtue Ethics)	व्यक्ति के चरित्र और विवेकपूर्ण आदतों पर ध्यान — सद्गुणी व्यक्ति के सही आचरण की संभावना अधिक मानी जाती है।	अरस्तू, प्लेटो, सुकरात	IAS अधिकारी का ईमानदार चरित्र

उदाहरण: यदि आपको रास्ते में किसी का गिरा हुआ बटुआ मिले, तो तीनों सिद्धांत अलग-अलग तरीके से सोचते हैं:

- ◆ **कर्तव्यवाद (Deontology):** आप इसे लौटाएंगे क्योंकि चोरी न करना और ईमानदारी आपका कर्तव्य है, चाहे परिणाम कुछ भी हो।
- ◆ **परिणामवाद (Teleology):** आप इसे लौटाएंगे क्योंकि इससे बटुए के मालिक की हानि कम होगी और समाज में विश्वास बढ़ेगा — यानी कुल कल्याण की दृष्टि से लौटाना उचित है।
- ◆ **सद्गुण नैतिकता (Virtue Ethics):** आप इसे इसलिए लौटाएंगे क्योंकि एक 'सज्जन' व्यक्ति स्वाभाविक रूप से यही करता है।

New India Education by Omkar Sir

3 नैतिक सिद्धांत — एक ही उदाहरण से समझें

स्थिति: रास्ते में किसी का गिरा हुआ बटुआ (Wallet) मिला

Deontology (कर्तव्यवाद)

आप बटुआ लौटाएंगे क्योंकि चोरी न करना आपका 'कर्तव्य' है — परिणाम चाहे जो हो।

मुख्य समर्थक (Supporters):

Kant, Geeta: "कर्मण्येवाधिकारस्ते"

ध्यान: नियम/कर्तव्य पर

Teleology (परिणामवाद)

आप बटुआ लौटाएंगे ताकि मालिक को खुशी मिले या आपको इनाम मिले।

मुख्य समर्थक (Supporters):

Bentham, JS Mill

ध्यान: परिणाम/साध्य पर

Virtue Ethics (सद्गुण नैतिकता)

आप बटुआ लौटाएंगे क्योंकि एक 'सज्जन' व्यक्ति यही स्वाभाविक रूप से करता है।

मुख्य समर्थक (Supporters):

Aristotle, Plato, Socrates

ध्यान: चरित्र/सद्गुण पर

चित्र 1.10: एक ही उदाहरण से कर्तव्यवाद, परिणामवाद और सद्गुण नैतिकता की तुलना

परिणामवाद (Teleology) के प्रकार: परिणामवाद (Teleology) के कई रूप हैं। पहला है नैतिक स्वार्थवाद (Ethical Egoism) — जिसमें सही वही है जिसका परिणाम स्वयं कर्ता के लिए अच्छा हो (आगे खंड 4.2 में)। दूसरा है उपयोगितावाद (Utilitarianism) — जेरेमी बेन्थम के अनुसार सही कार्य वह है जो अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख दे, और जे.एस. मिल ने इसमें जोड़ा कि सुख की मात्रा ही नहीं, उसकी गुणवत्ता भी देखी जाए (गुणात्मक उपयोगितावाद) — जैसे ज्ञान या कला का सुख केवल शारीरिक सुख से ऊँचा है। तीसरा है सुखवाद (Hedonism) — जिसका भारतीय उदाहरण चार्वाक दर्शन है: "यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत्, ऋणं कृत्वा धृतं पिबेत्" यानी जब तक जियो सुख से जियो, कर्ज लेकर भी घी पियो। चौथा है सार्थक-जीवनवाद (Eudaimonism) — जो कहता है कि सच्ची खुशी क्षणिक सुख में नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं का पूरा विकास करते हुए सार्थक और सद्गुणी जीवन जीने में है।

4. प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ (Key Ethical Concepts)

4.1 मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद (Psychological Egoism)

◆ यह सिद्धांत मानता है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वार्थी है और केवल अपने लाभ की चिंता करता है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई कहे "हर इंसान जन्म से ही पहले अपना फायदा देखता है, फिर दूसरों का" — यह एक दावा है कि मनुष्य 'ऐसा है ही', यह सलाह नहीं है कि उसे 'ऐसा' होना चाहिए।

◆ उदाहरण: कोई खिलाड़ी टीम और खेल-भावना से ऊपर अपने निजी आर्थिक लाभ को रखकर मैच फिक्सिंग करे — यह दिखाता है कि स्वार्थ कभी-कभी सामूहिक हित पर हावी हो जाता है।

◆ उदाहरण: कोई भ्रष्ट अधिकारी लोकहित के बजाय अपने निजी लाभ को ऊपर रखकर निर्णय ले — यह भी इसी प्रवृत्ति का प्रशासनिक रूप है।

◆ **आलोचना:** अनेक स्थितियों में मनुष्य जान जोखिम में डालकर दूसरों की सहायता करता है — यह दिखाता है कि स्वार्थ मनुष्य का इकलौता स्वभाव नहीं।

▶ सैनिक युद्ध में साथियों को बचाने के लिए प्राण त्यागते हैं।

▶ पन्नाधाय ने मेवाड़ राज्य की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान दिया — जब बनवीर बालक राजकुमार उदयसिंह को मारने आया, तो उन्होंने राजकुमार के बिस्तर पर अपने बेटे चंदन को सुला दिया। स्वार्थ ही मनुष्य का एकमात्र स्वभाव होता, तो ऐसा त्याग संभव ही नहीं था।

4.2 नैतिक स्वार्थवाद (Ethical Egoism)

◆ लोगों को अपने स्वार्थ के अनुसार कार्य करना चाहिए — जो अपनी खुशी बढ़ाए और दुख कम करे।

◆ थॉमस हॉब्स (17वीं सदी के अंग्रेज़ दार्शनिक, जिनका सामाजिक अनुबंध सिद्धांत आगे खंड 4.3 में है) और बर्नार्ड मैडेविल (डच मूल के ब्रिटिश लेखक, जिन्होंने 'द फ्रेबल ऑफ़ द बीज़' में तर्क दिया कि निजी स्वार्थ से भी समाज का लाभ हो सकता है) जैसे विचारकों ने इसे प्रतिपादित किया — "आत्म-संरक्षण अस्तित्व का प्रथम नियम है।" (ध्यान रहे — अर्थशास्त्र के जनक माने जाने वाले एडम स्मिथ को उनकी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ़ नेशंस' के कारण अक्सर स्वार्थवाद का समर्थक मान लिया जाता है, पर यह अधूरा है; उन्होंने 'द थ्योरी ऑफ़ मोरल सेंटिमेंट्स' पुस्तक में सहानुभूति और नैतिक भावनाओं पर भी विस्तार से लिखा है।)

◆ समस्या: यह सिद्धांत कभी-कभी नैतिक कार्य की ओर ले जाता है (जैसे अपने ही स्वास्थ्य-लाभ के लिए धूम्रपान छोड़ना), तो कभी विवादास्पद परिणाम भी दे सकता है — जैसे कोई व्यापारी केवल अपने मुनाफे के लिए दूध में मिलावट करे; नैतिक स्वार्थवाद के तर्क से इसे 'उसके हित में' कहा जा सकता है, जबकि इससे दूसरों का स्वास्थ्य खतरे में पड़ता है। इसीलिए अधिकतर विचारक इस सिद्धांत को अधूरा मानते हैं।

आसान परिभाषा: नैतिक स्वार्थवाद बनाम मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद (Ethical vs Psychological Egoism)

परिभाषा: मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद (Psychological Egoism) कहता है — मनुष्य है ही स्वार्थी (एक तथ्य)। नैतिक स्वार्थवाद (Ethical Egoism) कहता है — मनुष्य को स्वार्थी होना चाहिए (एक सलाह)।

आसान भाषा में: पहला बताता है 'मनुष्य ऐसा है', दूसरा कहता है 'मनुष्य को ऐसा होना चाहिए' — यानी एक तो सिर्फ वर्णन (Description) है, दूसरा एक सलाह/आदेश (Prescription)। उदाहरण: जैसे कोई कहे "बच्चे मीठा पसंद करते हैं" (यह मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद जैसा तथ्य है) बनाम "बच्चों को मीठा ही खाना चाहिए" (यह नैतिक स्वार्थवाद जैसी सलाह है, जो गलत भी हो सकती है)।

4.3 थॉमस हॉब्स का सामाजिक अनुबंध सिद्धांत (Social Contract Theory)

◆ हॉब्स (Hobbes) ने अपनी पुस्तक "लेवियाथन (Leviathan)" में यह सिद्धांत दिया।

◆ हॉब्स के अनुसार, 'प्रकृति की अवस्था' (State of Nature) में मनुष्य पूरी तरह स्वतंत्र था, लेकिन कोई नियम न होने के कारण वहाँ अराजकता (Chaos) और डर का माहौल था।

◆ इस स्थिति से बचने के लिए, मनुष्यों ने आपस में समझौता (Contract) किया और अपनी कुछ स्वतंत्रताएँ एक 'संप्रभु' (सरकार) को सौंप दीं। बदले में सरकार ने उन्हें सुरक्षा और कानून-व्यवस्था दी।

आसान परिभाषा: सामाजिक अनुबंध सिद्धांत (Social Contract Theory)

परिभाषा: मनुष्यों ने 'प्रकृति की अवस्था' (State of Nature — अराजकता) से बचने के लिए अपनी कुछ स्वतंत्रताएँ एक संप्रभु सत्ता को सौंपकर सामाजिक अनुबंध किया।

आसान भाषा में: सोचिए बिना ट्रैफिक-सिग्नल वाली सड़क — हर कोई मनमानी करेगा, दुर्घटनाएँ बढ़ेंगी। इसलिए हम सब मिलकर एक नियम (सिग्नल) मान लेते हैं और उसे लागू करने की ज़िम्मेदारी सरकार को दे देते हैं — यही सामाजिक अनुबंध है। उदाहरण: हम टैक्स देते हैं (अपनी आज़ादी का एक हिस्सा राज्य को सौंपते हैं) और बदले में राज्य हमें सड़क, सुरक्षा, न्याय देता है — यही आज का सामाजिक अनुबंध है।

4.4 नैतिक सापेक्षवाद (Moral Relativism)

◆ नैतिक निर्णय व्यक्ति या समाज-विशेष के सापेक्ष होते हैं — सार्वभौमिक नहीं।

आसान भाषा में: जैसे अभिवादन करने, भोजन करने या शोक व्यक्त करने के तरीके अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग होते हैं और हर जगह उसे वहाँ के हिसाब से उचित माना जाता है — यानी सही-गलत जगह/संस्कृति के हिसाब से बदल सकता है, यही सापेक्षवाद है।

नैतिक व्यक्तिवाद (Moral Subjectivism)	सांस्कृतिक सापेक्षवाद (Cultural Relativism)
सही-गलत व्यक्ति की राय पर निर्भर	एक संस्कृति के मानक दूसरी के लिए सत्य नहीं
उदाहरण: किसी विवादास्पद सामाजिक विषय पर अलग-अलग व्यक्तियों की अलग नैतिक राय	उदाहरण: अभिवादन-पद्धति, वेशभूषा या भोजन-रीति की भिन्न सांस्कृतिक मान्यताएँ
व्यक्ति की संस्कृति, परिवेश से प्रभावित	विविधता को बढ़ावा देता है (सकारात्मक)

4.5 नैतिक वस्तुनिष्ठवाद (Moral Objectivism)

◆ वस्तुनिष्ठ नैतिक सत्य होते हैं — कुछ कार्य सभी समयों और समाजों में सही/गलत हैं।

आसान भाषा में: नैतिक सापेक्षवाद (Moral Relativism) के ठीक उलट — यह कहता है कि कुछ बातें हर देश, हर काल में एक जैसी ही गलत रहेंगी, जैसे निर्दोष की हत्या — चाहे कोई भी संस्कृति हो, यह हमेशा गलत ही रहेगी।

◆ उदाहरण: निर्दोष की हत्या को लगभग सभी समाज सार्वभौमिक रूप से गलत मानते हैं; सत्यभाषण को व्यापक रूप से एक सही मूल्य माना जाता है — हालाँकि आपातकालीन/जटिल परिस्थितियों में इन पर भी नैतिक विमर्श हो सकता है।

◆ परिणामवादी (Consequentialist) कार्य के परिणाम को और कर्तव्यवादी (Deontologist) नियम-पालन को नैतिकता की मुख्य कसौटी मानते हैं — पर वस्तुनिष्ठवादी (Objectivist) दृष्टिकोण के अनुसार दोनों ही यह स्वीकार करते हैं कि कुछ मूल नैतिक सत्य परिस्थिति-निरपेक्ष होते हैं।

ध्यान रहे: नियतिवाद (Determinism) संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will) का ठीक उल्टा विचार है — नियतिवाद कहता है कि हमारे कार्य पहले से तय कारणों से होते हैं, जबकि संकल्प-स्वातंत्र्य कहता है कि हम चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

4.6 नियतिवाद का सिद्धांत (Doctrine of Determinism)

◆ मनुष्य के निर्णय और कार्य बाह्य शक्तियों द्वारा कारणात्मक रूप से निर्धारित होते हैं — अतः वह अपने कार्यों के लिए पूरी तरह उत्तरदायी नहीं है, ऐसा यह सिद्धांत मानता है।

◆ नियतिवाद के अनुसार हमारे कार्यों को तय करने वाले मुख्य कारक तीन हैं — जीन्स (माता-पिता से मिले जैविक गुण, जैसे स्वभाव से गुस्सैल होना), मस्तिष्क की बनावट और उसकी रासायनिक क्रियाएँ, तथा पर्यावरणीय कारक (परिवार, गरीबी, संगति, शिक्षा जैसी परिस्थितियाँ)। इनके कारण व्यक्ति जो करता है, वह मानो पहले से तय होता है।

आसान परिभाषा: नियतिवाद (Determinism)

परिभाषा: यह सिद्धांत कहता है कि मनुष्य के सभी कार्य पहले से मौजूद कारणों (जीन्स, परिवेश, परिस्थिति) से तय होते हैं — इसलिए व्यक्ति की कोई 'सच्ची स्वतंत्र इच्छा' नहीं होती।

आसान भाषा में: जैसे डोमिनो के पत्थर — पहला पत्थर गिरते ही बाकी सब अपने-आप गिरते चले जाते हैं। नियतिवाद कहता है इंसान की ज़िंदगी भी वैसे ही पहले से तय ज़ंजीर है। उदाहरण: एक भूखा बच्चा रोटी चुरा ले तो नियतिवादी कहेगा — 'गरीबी और भूख' (परिस्थिति) ने उससे यह करवाया, वह पूरी तरह दोषी नहीं।

निर्धारक	व्याख्या	उदाहरण
समय (Time)	दासता 18वीं शताब्दी में नैतिक मानी जाती थी	धारा 377 (Section 377) का आंशिक निरसन (2018), सती प्रथा
स्थान/प्रथा (Custom)	स्थान-विशेष की परंपराएँ और रीतियाँ भी तय करती हैं कि किसे सही माना जाए	थलाइकूथल (Thalaikoothal — बुजुर्गों की हत्या की कुप्रथा, तमिलनाडु), गर्भपात (Abortion) संबंधी अलग-अलग देशों की अलग नीतियाँ
परिस्थिति (Circumstance)	भूखे व्यक्ति की चोरी — ज़रूरत बनाम लालच (Need vs Greed)	भ्रष्ट अधिकारी — केवल लालच
कानून (Law)	नाज़ी जर्मनी का कानून यहूदियों के विरुद्ध भेदभाव को 'कानूनी' बनाता था, पर वह अनैतिक था — यानी कानूनी होना ही नैतिक होने की गारंटी नहीं	BNS धारा 22 — विक्षिप्त को दंड नहीं
कर्ता (Actor)	महाभारत में भीम का दुर्योधन-वध — धर्मयुद्ध के नियमों के विरुद्ध होते हुए भी न्याय के पक्ष में माना जाता है; यह एक बहुचर्चित नैतिक दुविधा (Moral Dilemma) है, सर्वसम्मत निर्णय नहीं	किशोर अपराध में रियायत
बाह्य दबाव	बंदूक की नोक पर किया गया कार्य	अनैच्छिक कार्य

4.7 संकल्प स्वातंत्र्य का सिद्धांत (Doctrine of Freedom of Will)

◆ यह सिद्धांत नियतिवाद के उलट मानता है कि मनुष्य के कई कार्य ऐसे होते हैं जो न बाहरी दबाव से तय होते हैं और न किसी मजबूरी (आवश्यकता) से — व्यक्ति उन्हें अपनी स्वतंत्र इच्छा से चुनता है। इसीलिए वह उन कार्यों के लिए पूरी तरह उत्तरदायी माना जाता है।

संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will) की 3 शर्तें:

- विकल्पों की उपलब्धता (Availability of Alternatives)।
- कार्य करने की क्षमता (Capacity to Act)।
- परिस्थितियों का ज्ञान (Awareness about Circumstances)।

◆ उदाहरण: कोई अधिकारी बिना किसी बाहरी दबाव के, पूरी जानकारी रखते हुए, भ्रष्ट सिफ़ारिश को अस्वीकार करके स्वतंत्र और निष्पक्ष निर्णय ले — यही संकल्प-स्वातंत्र्य का व्यावहारिक उदाहरण है।

◆ सुकरात (Socrates) बनाम अरस्तू (Aristotle): सुकरात मानते थे कि ज्ञान ही सद्गुण है — जो व्यक्ति सचमुच जानता है कि क्या सही है, वह गलत कर ही नहीं सकता; गलत काम केवल अज्ञान से होता है। अरस्तू इससे असहमत थे — उनके अनुसार व्यक्ति सही जानते हुए भी अपनी इच्छा से गलत चुन सकता है (जैसे धूम्रपान को हानिकारक जानते हुए भी करना)। इसलिए संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will) के कारण एक जैसा ज्ञान रखने वाले अलग-अलग लोगों के कार्य भी भिन्न होते हैं।

“ दो चीज़ें मन को सदा नए और बढ़ते हुए आश्चर्य व श्रद्धा से भर देती हैं — मेरे ऊपर तारों भरा आकाश और मेरे भीतर का नैतिक नियम। (Two things fill the mind with ever new and increasing admiration and awe... the starry heavens above me and the moral law within me.) ” — इमैनुएल कॉंट (Immanuel Kant)

संकल्प की स्वतंत्रता का मूल अर्थ ऊपर दी गई तीन शर्तों में ही छिपा है — विकल्पों की उपलब्धता, कार्य करने की क्षमता और परिस्थितियों का ज्ञान। इनमें से कोई एक भी न हो, तो व्यक्ति पूरी तरह स्वतंत्र निर्णय नहीं ले रहा होता।

4.8 द्वि-प्रभाव का सिद्धांत (Doctrine of Double Effect)

◆ कई कार्यों के सकारात्मक और नकारात्मक — दोनों परिणाम एक साथ होते हैं; इसलिए उन्हें सीधे अच्छा या बुरा कहना कठिन है। मध्यकालीन दार्शनिक थॉमस एक्विनास से जुड़ा यह सिद्धांत बताता है कि ऐसा कार्य किन शर्तों पर उचित माना जा सकता है (नीचे परिभाषा-बॉक्स में)।

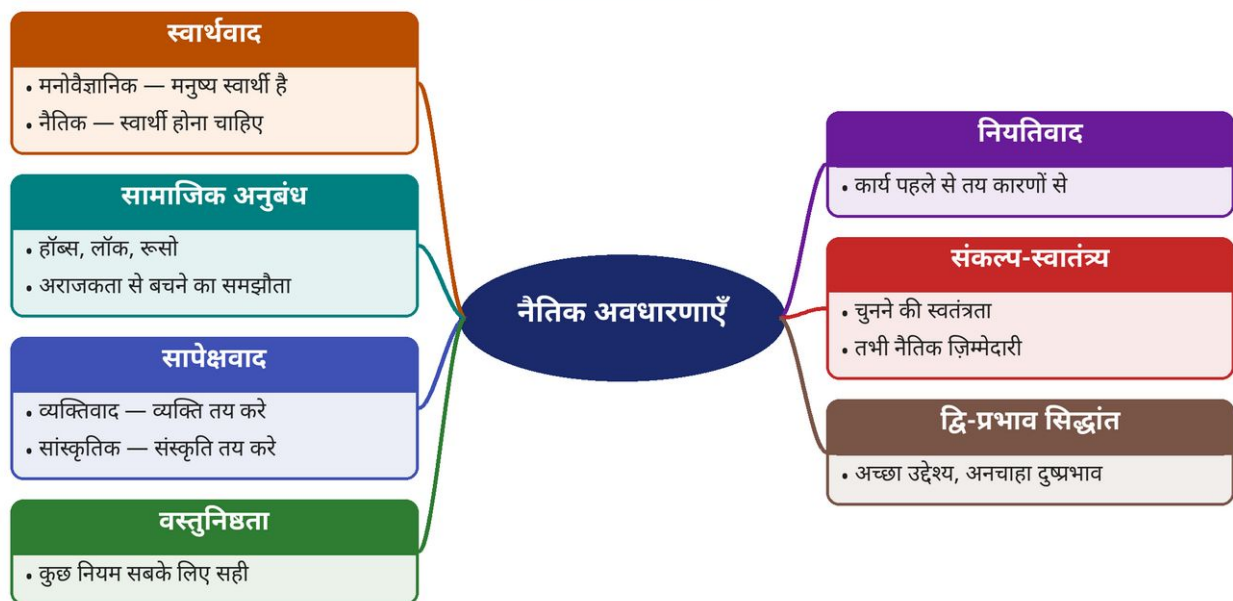
- ◆ उदाहरण: (1) आत्मरक्षा में हमलावर की मृत्यु — इरादा अपनी जान बचाना था, हमलावर की मौत उसका दुष्प्रभाव है। (2) सहवर्ती क्षति (Collateral Damage) — युद्ध में सैन्य ठिकाने पर हमले के दौरान आस-पास के निर्दोष लोगों की मौत। (3) माता बनाम भ्रूण — गर्भावस्था में ऐसी स्थिति, जब माँ की जान बचाने वाले इलाज से भ्रूण की जान चली जाए।

आसान परिभाषा: द्वि-प्रभाव का सिद्धांत (Doctrine of Double Effect)

परिभाषा: जब कोई कार्य अपने आप में अच्छे इरादे से किया जाए, पर उसका एक अनिवार्य/अनपेक्षित बुरा परिणाम भी साथ आए, तो वह कार्य नैतिक रूप से उचित माना जा सकता है — बशर्ते बुरा परिणाम कार्य का साधन न हो, केवल एक दुष्प्रभाव (Side-Effect) हो, और अच्छे परिणाम का महत्व बुरे परिणाम से अधिक हो।

आसान भाषा में: जैसे किसी को बचाने के लिए डॉक्टर ऑपरेशन करे और मरीज़ का एक अंग निकालना पड़े — अंग निकालना 'बुरा' परिणाम है, पर जान बचाना 'अच्छा' परिणाम — डॉक्टर का इरादा अंग निकालना नहीं, बल्कि जान बचाना था। **उदाहरण:** युद्ध में किसी सैन्य ठिकाने पर की गई कार्रवाई का उद्देश्य केवल उस ठिकाने को निष्क्रिय करना हो, पर उसमें आस-पास सहवर्ती क्षति (Collateral Damage) भी हो जाए — नैतिक दार्शनिक इस पर बहस करते हैं कि ऐसी क्षति कब तक उचित मानी जा सकती है।

प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ — एक नज़र में



चित्र 1.11: प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ — एक नज़र में

4.9 किसी कार्य की नैतिकता के निर्धारक (Determinants of Ethicality of an Action)

जब हम कहते हैं कि "अमुक अधिकारी का निर्णय नैतिक था", तो यह निर्णय किन आधारों पर दिया जाता है? किसी कर्ता (Agent) के कार्य की नैतिकता मुख्य रूप से छह बातों से तय होती है:

निर्धारक	अर्थ	प्रशासनिक उदाहरण
1. सोच-समझकर किया गया कार्य	कार्य ज्ञान, स्वतंत्र इच्छा और स्वेच्छिकता से किया गया हो	दबाव में नहीं, अपने विवेक से फ़ाइल पर हस्ताक्षर
2. उद्देश्य (Purpose / Motive)	कार्य किस इरादे से किया गया — व्यक्तिगत, सामाजिक या संगठनात्मक	तबादला जनहित में या बदले की भावना से?
3. विषय-वस्तु (Object)	कार्य अपने आप में अच्छा, बुरा या तटस्थ है	राशन बाँटना (अच्छा) बनाम राशन की कालाबाज़ारी (बुरा)
4. परिस्थिति (Circumstances)	सामान्य स्थिति थी या आपात स्थिति	बाढ़ में बिना पूरी कागज़ी कार्रवाई के राहत बाँटना
5. परिणाम (Consequence)	कार्य का अंतिम नतीजा — परिणामवाद (Teleology) का आधार	नीति से कितने लोगों को लाभ हुआ?
6. साधन (Means)	लक्ष्य पाने का तरीका कितना उचित था — कर्तव्यवाद (Deontology) का आधार	अपराध रोकने के लिए हिरासत में यातना — साधन अनुचित

वास्तविक जीवन में ये निर्धारक अलग-अलग नहीं, बल्कि साथ-साथ काम करते हैं। इनके आपसी संबंध के तीन रूप होते हैं:

- ◆ **एक साथ उपस्थित होना (Overlap):** किसी योजना को लागू करते समय नियमों का पालन (साधन) और गरीब के प्रति करुणा (उद्देश्य) — दोनों एक साथ चल सकते हैं।
- ◆ **एक ही कार्य, अलग मूल्यांकन (Vary):** भूख से मरते व्यक्ति के लिए रोटी चुराना और किसी अधिकारी द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अनाज चुराना — दोनों "चोरी" हैं, पर उद्देश्य और परिस्थिति के कारण दोनों का नैतिक भार बिल्कुल अलग है।
- ◆ **आपस में टकराव (Contradict):** राजा की जान बचाने (उद्देश्य) के लिए सैनिकों का बलिदान (साधन) — यहाँ एक निर्धारक दूसरे से टकराता है और नैतिक दुविधा पैदा होती है।

किसी कार्य की नैतिकता कैसे तय होती है?



चित्र 1.12: किसी कार्य की नैतिकता कैसे तय होती है?

इन निर्धारकों के पीछे गहरी शक्तियाँ भी काम करती हैं, जिन्हें तीन स्तरों में बाँटा जा सकता है — **व्यक्तिगत** (भीतर का कम्पास), **सामाजिक-सांस्कृतिक** (बाहर का साँचा) और **संस्थागत** (औपचारिक सीमाएँ)।

नैतिक सोच को गढ़ने वाले तीन स्तर



चित्र 1.13: नैतिक सोच को गढ़ने वाले तीन स्तर

आसान परिभाषा: अंतरात्मा का संकट (Crisis of Conscience)

परिभाषा: वह गहरा आंतरिक संघर्ष जो तब पैदा होता है जब व्यक्ति के कार्य या निर्णय उसके अपने गहरे नैतिक सिद्धांतों से टकराने लगते हैं।

आसान भाषा में: मन कहे "यह गलत है", पर हालात या आदेश कहें "यही करो" — इस खिंचाव को अंतरात्मा का संकट कहते हैं।

उदाहरण: चोरी-चौरा की हिंसा (1922) के बाद गांधीजी ने अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर असहयोग आंदोलन वापस ले लिया, जबकि आंदोलन चरम पर था।

5. कानून और नीतिशास्त्र में अंतर (Law vs Ethics)

कानून (Law) सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का वह समूह है जिसे न्यायालयों द्वारा लागू किया जाता है। यह मानव व्यवहार को विनियमित करता है।

कानून (Law)	नीतिशास्त्र (Ethics)
सरकारी संस्थाओं द्वारा निर्मित नियम	समाज या समूह की आचार संहिता
न्यायालयों द्वारा लागू होता है	मुख्यतः अंतरात्मा एवं सामाजिक दबाव से पालन होता है
शांति और व्यवस्था के लिए	सामाजिक मानदंड निर्धारित करती है
उल्लंघन पर दंड का प्रावधान	उल्लंघन पर सामाजिक निंदा

कानून (Law)	नीतिशास्त्र (Ethics)
बाह्य नियंत्रण	आंतरिक नियंत्रण

☀ उदाहरण-1

गांधीजी का सविनय अवज्ञा आंदोलन — ब्रिटिश कानून की दृष्टि से गैर-कानूनी (Illegal) था, किंतु भारतीय समाज की दृष्टि से नैतिक (Ethical) था।

☀ उदाहरण-2

नाज़ी जर्मनी में यहूदियों का उत्पीड़न — हिटलर के कानून की दृष्टि से वैध (Legal) था, किंतु विश्व समाज की दृष्टि से अनैतिक (Unethical) था।

कानून और नैतिकता — चार संभावित स्थितियाँ

कानूनी भी, नैतिक भी समय पर कर चुकाना, गरीब को योजना का लाभ देना	कानूनी, पर अनैतिक नियम की खामी का फायदा उठाकर ठेका अपने रिश्तेदार की फ़र्म को दिलवाना
गैर-कानूनी, पर नैतिक गांधीजी का नमक कानून तोड़ना (सविनय अवज्ञा)	गैर-कानूनी भी, अनैतिक भी रिश्वत, मिलावट, हिरासत में यातना

चित्र 1.14: कानून और नैतिकता — चार संभावित स्थितियाँ

कानून और नीतिशास्त्र सामान्यतः एक-दूसरे के साथ चलते हैं — नीतिशास्त्र कानून को नैतिक आधार देता है, और कानून नीतिशास्त्र के उल्लंघन पर दंड का डर पैदा करता है। पर जब दोनों में टकराव हो, तब किसे प्राथमिकता दी जाए — यह व्यक्ति की भूमिका पर निर्भर करता है:

◆ **लोक सेवक (Civil Servant) के लिए:** कानून का पालन उसका बाध्यकारी कर्तव्य है। कानून के अनुसार चलने से उसे कानूनी सुरक्षा भी मिलती है। यदि कोई कानून अन्यायपूर्ण लगे, तो वह व्यवस्था के भीतर रहकर — जैसे नियम-संशोधन का प्रस्ताव भेजकर, वरिष्ठों को लिखित सुझाव देकर — बदलाव का प्रयास करे। इसे **"संविधान-निर्देशित अंतरात्मा" (Constitutionally Guided Conscience)** कहा जा सकता है।

◆ **समाज-सुधारक या जन-नेता के लिए:** उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अन्यायपूर्ण कानूनों, रीतियों और व्यवस्थाओं पर प्रश्न उठाए। गांधीजी ने नमक कानून तोड़ा, अमेरिका में रोज़ा पार्क्स (Rosa Parks) ने 1955 में बस में अलगाव (Segregation) का नियम मानने से इनकार किया, और पोलैंड में लेख वालेसा (Lech Wałęsa) ने मज़दूरों के अधिकारों के लिए "सॉलिडैरिटी" आंदोलन चलाया।

☀ जब नैतिकता कानून बनी — "नेक मददगार" (Good Samaritan) की सुरक्षा

सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद करना नैतिक कर्तव्य है, पर पहले लोग पुलिस-पूछताछ और अदालत के चक्करों के डर से मदद करने से कतराते थे। नतीजा — कई घायलों की जान "सुनहरे घंटे" (Golden Hour) में इलाज न मिलने से चली जाती थी।

वर्ष 2016 में सर्वोच्च न्यायालय ने सेवलाइफ़ फ़ाउंडेशन बनाम भारत संघ (SaveLife Foundation v. Union of India) मामले में केंद्र सरकार के "नेक मददगार" दिशानिर्देशों को सभी राज्यों के लिए बाध्यकारी बना दिया। फिर मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम 2019 में धारा 134A जोड़ी गई, जिसके अनुसार मदद करने वाले व्यक्ति पर घायल की मृत्यु या चोट के लिए कोई दीवानी या आपराधिक दायित्व नहीं होगा।

यह इस बात का सुंदर उदाहरण है कि कैसे एक नैतिक मूल्य (करुणा, जीवन की रक्षा) धीरे-धीरे कानून में बदल जाता है और कानून फिर उस मूल्य को और मज़बूत करता है।

" जो सही है, उसे करने का समय हमेशा सही होता है। (The time is always right to do what is right.) " — मार्टिन लूथर किंग जूनियर (Martin Luther King Jr.)

📖 कहानी: "सौ रुपये ऊपर" — नियम की रेखा और एक विधवा की आँखें

बाड़मेर ज़िले की एक तहसील। नई-नई उपखंड अधिकारी (SDM) बनी **अनुराधा** (काल्पनिक नाम) जनसुनवाई में बैठी थीं। भीड़ में एक बुजुर्ग विधवा, **गवरी देवी**, काँपते हाथों से अपनी फ़ाइल आगे बढ़ा रही थीं। उनकी विधवा-पेंशन की अर्ज़ी तीन महीने से अटक की थी।

बाबू ने धीरे से बताया — "मैडम, नियम साफ़ है। इनके बेटे की आय सर्वे में आय-सीमा से लगभग सौ रुपये महीना ज़्यादा दर्ज है। पात्रता नहीं बनती। अगर हमने स्वीकृति दी तो ऑडिट-आपत्ति आएगी और ज़िम्मेदारी आपकी होगी।"

अनुराधा ने गवरी देवी से बात की। पता चला कि बेटा पत्थर की खदान में दिहाड़ी मज़दूर है — किसी महीने काम मिलता है, किसी महीने नहीं। पिछली बरसात के चार महीने उसे एक दिन भी काम नहीं मिला था। सर्वे वाले दिन उसने "अच्छे महीने" की कमाई बता दी थी। घर में गवरी देवी की दवाइयों के पैसे तक नहीं थे।

अनुराधा के मन में खिंचाव था। एक आवाज़ कहती — "नियम नियम है, भावनाओं में बहकर ग़लत स्वीकृति देना भी भ्रष्टाचार का ही एक रूप है।" दूसरी आवाज़ कहती — "नियम इसी महिला की मदद के लिए बना है; आँकड़े की एक रेखा उसे भूखा कैसे रख सकती है?"

उन्होंने बीच का, पर नियम के अंदर का रास्ता चुना। पहले उन्होंने बेटे की आय का **दोबारा भौतिक सत्यापन** करवाया, जिसमें पिछले बारह महीनों की वास्तविक औसत आय निकाली गई — वह आय-सीमा से नीचे निकली। सत्यापन-रिपोर्ट के आधार पर पेंशन स्वीकृत हुई और हर कदम फ़ाइल में लिखित दर्ज किया गया। जब तक पहली किस्त नहीं आई, तब तक ज़िला रेड क्रॉस समिति से तत्काल सहायता दिलवाई।

यहीं वे रुकीं नहीं। उन्होंने ज़िला कलेक्टर को एक पत्र लिखा कि दिहाड़ी मज़दूरों की आय "एक दिन के बयान" से नहीं, बल्कि साल भर के औसत से आँकी जानी चाहिए। कुछ महीनों बाद ज़िले में सत्यापन का तरीक़ा बदल दिया गया — और सैकड़ों ऐसी अर्ज़ियाँ, जो "सौ रुपये ऊपर" में फँसी थीं, न्यायपूर्ण ढंग से निपटीं।

🔑 **इस कहानी से सीख:** लोक सेवक के लिए क़ानून सबसे पहले है, पर क़ानून का उद्देश्य (Spirit) भी उतना ही महत्वपूर्ण है। करुणा का अर्थ नियम तोड़ना नहीं, बल्कि नियम के भीतर रहकर सही तथ्य खोजना और ज़रूरत हो तो नियम सुधारने की पहल करना है। अनुराधा ने वैधता (Legality), करुणा (Compassion), पारदर्शिता (हर कदम लिखित) और नीति-सुधार — चारों को साथ साधा।

6. नीतिशास्त्र के परिणाम (Consequences of Ethics)

नीतिशास्त्र की उपस्थिति और अनुपस्थिति — दोनों के गहरे परिणाम होते हैं। इसे पाँच स्तरों पर समझा जा सकता है:

स्तर	उपस्थिति में	अनुपस्थिति में	उदाहरण
व्यक्तिगत	पहचान, आत्म-साक्षात्कार, उच्च लक्ष्य	अत्यधिक स्वार्थ-केंद्रित सुखवाद (Hedonism), आंतरिक असंतोष	सत्येन्द्र दुबे (भ्रष्टाचार उजागर करने वाले इंजीनियर, खंड 11.3) जैसे अधिकारियों का नैतिक साहस (नैतिक) बनाम गंभीर आर्थिक अपराध के आरोपी व्यवसायी (अनैतिक)
सामाजिक	समरसता, सामाजिक पूँजी, समानता	भय, अविश्वास, अपराध, असहिष्णुता	सामाजिक भरोसे में कमी से सहयोग व सामूहिक कल्याण योजनाओं की सफलता प्रभावित होना
संगठनात्मक	व्यावसायिकता, दक्षता, विश्वास, टीमवर्क	भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद	टाटा समूह (अच्छी छवि) बनाम वोक्सवैगन डीज़लगेट — 2015 में प्रदूषण-जाँच में धोखाधड़ी का खुलासा (बुरी छवि)
राष्ट्रीय	धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, कानून का राज	सांप्रदायिकता, अराजकता, संस्थाओं में कमज़ोर जवाबदेही	जिन देशों में संस्थागत नीतिशास्त्र कमज़ोर रहा, वहाँ लोकतांत्रिक स्थिरता को चुनौती मिलने के उदाहरण मिलते हैं
अंतरराष्ट्रीय	सतत विकास, संप्रभुता, मानवीय आधार	आतंकवाद, संसाधनों की असमानता, जलवायु संकट	अंतरराष्ट्रीय आतंकी घटनाएँ (जैसे 9/11) वैश्विक सुरक्षा-सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं

नीतिशास्त्र के परिणामों को तीन मुख्य स्तरों — **व्यक्ति, संगठन और समाज** — पर भी समझा जाता है। अनैतिक आचरण के नकारात्मक परिणाम भी उतने ही गहरे होते हैं जितने नैतिक आचरण के सकारात्मक परिणाम:

स्तर	नैतिक आचरण के सकारात्मक परिणाम	अनैतिक आचरण के नकारात्मक परिणाम
व्यक्ति	विश्वसनीयता, आत्मविश्वास, मानसिक शांति, सामाजिक पूँजी (लोगों का भरोसा), बेहतर निर्णय-क्षमता, आत्म-साक्षात्कार	आत्म-सम्मान की हानि, पकड़े जाने का लगातार डर, "बँटा हुआ व्यक्तित्व" (कहना कुछ, करना कुछ)
संगठन	अच्छी छवि (Brand), कर्मचारी-नियोक्ता में भरोसा, निवेशकों का विश्वास, प्रतिभाशाली लोगों का आकर्षण, टिकाऊपन	घोटाले, मुक़दमे, साख का पतन, योग्य कर्मचारियों का पलायन

स्तर	नैतिक आचरण के सकारात्मक परिणाम	अनैतिक आचरण के नकारात्मक परिणाम
समाज व शासन	लालच का अभाव, सहयोग, शांति, समानता, न्याय; कानूनों का स्वैच्छिक पालन; योजनाओं में जन-भागीदारी	सामाजिक भरोसे का क्षरण, भ्रष्टाचार का सामान्य हो जाना, गरीबों के अधिकारों का हनन, सरकार की वैधता (Legitimacy) पर प्रश्न

◆ **नैतिकता के और लाभ:** यह सही-गलत के मानक तय करती है, सोचने और परखने की क्षमता बढ़ाती है, नैतिक दुविधाओं (जैसे इच्छामृत्यु) में साफ़ दृष्टि देती है, और जहाँ न कानून कुछ कहता है न सामाजिक रीति — वहाँ **विवेकाधिकार (Discretion)** के सही प्रयोग में मार्गदर्शन करती है।

☀ उदाहरण — भरोसे से बनी समृद्धि: सहकारी दुग्ध आंदोलन

गुजरात के आणंद में शुरू हुआ सहकारी डेयरी आंदोलन (अमूल) और फिर वर्गीज़ कुरियन (Vergheese Kurien) के नेतृत्व में 1970 से चला "ऑपरेशन फ़्लड" इस बात का प्रमाण है कि नैतिक आचरण आर्थिक समृद्धि भी लाता है। लाखों छोटे किसानों को दूध का उचित और पारदर्शी भुगतान मिला, बिचौलियों का शोषण घटा, और भारत दुनिया के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देशों में शामिल हुआ। इस पूरी व्यवस्था की नींव थी — **भरोसा, पारदर्शिता और सामूहिक भलाई।**

नीतिशास्त्र के परिणाम — तीन स्तर



चित्र 1.15: नीतिशास्त्र के परिणाम — तीन स्तर

7. मानवीय मूल्य (Human Values) — परिभाषा एवं वर्गीकरण

मूल्य (Values) वे मार्गदर्शक सिद्धांत, विचारधाराएँ और विश्वास हैं जिन्हें व्यक्ति अपना मानता है और प्राप्त करना चाहता है। मूल्य व्यक्ति के आचरण को दिशा देते हैं।

💡 **दुर्गुण (Vices):** दुर्गुण वे अवांछनीय आदतें, व्यवहार या प्रवृत्तियाँ हैं जिन्हें समाज में सामान्यतः गलत माना जाता है। जैसे: भ्रष्टाचार, हिंसा, बेईमानी, अहंकार, लालच — इन सबका विस्तृत विश्लेषण आगे खंड 14 में मिलेगा।

7.1 मूल्यों का वर्गीकरण (Classification of Values)

आधार	प्रकार	उदाहरण
उद्देश्य के आधार	साधन मूल्य (Instrumental) — साध्य मूल्य (Intrinsic)	पैसा, स्वास्थ्यवर्धक भोजन/पोषण (साधन, किसी बड़े लक्ष्य के लिए ज़रिया) — प्रेम, स्वतंत्रता, स्वास्थ्य स्वयं (साध्य, जो अपने-आप में मूल्यवान हैं)
श्रेणी के आधार	सार्वभौमिक — सांस्कृतिक — सामाजिक — संगठनात्मक — व्यक्तिगत	स्वतंत्रता, खुशी (सार्वभौमिक) — अनुशासन, दक्षता (संगठनात्मक)
स्रोत के आधार	आंतरिक (Internal) — बाह्य (External)	आध्यात्मिकता, आत्म-सम्मान, विवेक (आंतरिक — अपने भीतर से उपजे) — सामाजिक मान्यता, प्रतिष्ठा (बाह्य — बाहरी परिस्थिति/समाज से जुड़े); ध्यान रहे, सम्मान और प्रेम जैसे मूल्यों में आंतरिक-बाह्य दोनों पक्ष मिश्रित होते हैं
जन्मजात बनाम अर्जित	जन्मजात-प्रवृत्ति (Innate Tendency) — अर्जित (Acquired)	सहानुभूति की एक आंशिक स्वाभाविक प्रवृत्ति मानी जाती है, पर करुणा जैसे मूल्य मुख्यतः परिवार-समाज से विकसित/परिष्कृत होते हैं — टीमवर्क, सहयोग स्पष्टतः अर्जित मूल्य हैं
क्षेत्र के आधार	आर्थिक — पर्यावरणीय — वैज्ञानिक — प्रशासनिक — राजनीतिक — लोकांतरिक	दक्षता — टिकाऊपन — सटीकता — पारदर्शिता — जवाबदेही

आधार	प्रकार	उदाहरण
स्थायित्व के आधार	सार्वभौमिक — प्रासंगिक — गतिशील व विकासशील	सत्य, अहिंसा (सार्वभौमिक) — अतिथि-सत्कार की स्थानीय रीतियाँ (प्रासंगिक, समय-स्थान अनुसार बदलती हैं) — लैंगिक समानता (विकासशील)

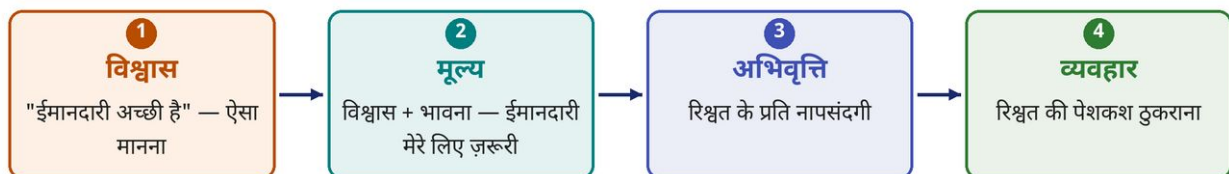
7.2 विश्वास, मूल्य, मानदंड और सिद्धांत — क्या अंतर है?

मूल्यों को ठीक से समझने के लिए उनसे मिलते-जुलते चार शब्दों का अंतर जानना ज़रूरी है:

- ◆ **विश्वास (Belief):** किसी बात को सच मान लेना, चाहे वह सिद्ध हो या न हो। यह हमारी सोच की सबसे छोटी इकाई है। विश्वास कमज़ोर (परिधीय — Peripheral) भी हो सकते हैं और गहरे (केंद्रीय — Core) भी। विश्वास भावना जगाते हैं, पर ज़रूरी नहीं कि कार्य भी करवाएँ।
- ◆ **मूल्य (Value):** जब किसी विश्वास के साथ भावना जुड़ जाती है और वह हमारे लिए "महत्वपूर्ण" बन जाता है, तब वह मूल्य कहलाता है। सरल सूत्र: **मूल्य = विश्वास + भावना**। मूल्य हमें प्रेरित करते हैं।
- ◆ **मानदंड (Norm):** समाज की वे अपेक्षाएँ जो बताती हैं कि किस स्थिति में कैसा व्यवहार स्वीकार्य है। ये व्यक्ति पर बाहर से लागू होते हैं, जबकि विश्वास और मूल्य भीतर होते हैं। मानदंड तोड़ने पर निंदा, बहिष्कार जैसी सामाजिक सज़ा मिलती है। क़ानून असल में मानदंडों का ही लिखित और विकसित रूप है।
- ◆ **सिद्धांत (Principle):** विश्वास, मूल्य और मानदंड व्यक्ति-व्यक्ति व समाज-समाज में बदल सकते हैं, पर सिद्धांत सार्वभौमिक सत्य होते हैं — जैसे निष्पक्षता, सत्यता, समानता, न्याय।

आधार	मूल्य (Values)	नीतिशास्त्र (Ethics)
मूल प्रश्न	क्या महत्वपूर्ण है? मुझे क्या पाना है?	क्या सही है? सही कार्य कौन-सा है?
प्रकृति	व्यक्तिपरक — व्यक्ति-व्यक्ति में अलग	अपेक्षाकृत सार्वभौमिक
भूमिका	प्रेरित करते हैं (Motivate)	सीमा तय करता है (Constrain)
स्वरूप	वर्णनात्मक — बताते हैं कि हमें क्या प्रिय है	निर्देशात्मक — बताता है कि कैसे व्यवहार करना चाहिए

विश्वास से व्यवहार तक — मूल्य कैसे काम करते हैं



चित्र 1.16: विश्वास से व्यवहार तक — मूल्य कैसे काम करते हैं

आसान परिभाषा: मूल्य (Value)

परिभाषा: किसी व्यक्ति या समाज के वे गहरे और स्थायी विश्वास जो यह तय करते हैं कि क्या अच्छा, वांछनीय और महत्वपूर्ण है; ये आचरण के मार्गदर्शक मानक हैं।

आसान भाषा में: जिस बात को आप दिल से ज़रूरी मानते हैं और उसके लिए कुछ छोड़ने को भी तैयार हैं — वही आपका मूल्य है। 🏠

उदाहरण: कोई छात्र नकल का मौक़ा होते हुए भी नकल न करे और कम अंक स्वीकार कर ले — उसके लिए ईमानदारी एक मूल्य है।

आसान परिभाषा: मानदंड (Norm)

परिभाषा: किसी समूह या समाज की सामूहिक अपेक्षाएँ जो व्यवहार के स्वीकार्य तरीक़े तय करती हैं और उल्लंघन पर सामाजिक दबाव या दंड लाती हैं।

आसान भाषा में: समाज के "अलिखित नियम" — जिन्हें तोड़ने पर लोग टोकते, ताने देते या दूरी बना लेते हैं। 🏠 उदाहरण: शादी-समारोह में बड़ों के पैर छूना एक मानदंड है; न छूने पर कोई क़ानूनी सज़ा नहीं, पर रिश्तेदार टोक देते हैं।

7.3 मूल्यों की विशेषताएँ और कुछ और वर्गीकरण

- ◆ मूल्य हमारे चरित्र और आचरण की नींव हैं — इन्हें व्यक्तित्व का "केंद्र" कहा जाता है।
- ◆ मूल्य जन्म से तैयार नहीं मिलते; परिवार, समाज और अनुभव से सीखे जाते हैं।
- ◆ मूल्य किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति तक सीमित नहीं होते, जबकि अभिवृत्ति (Attitude) किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति होती है। जैसे — "न्याय" एक मूल्य है जो हर जगह लागू होता है; "महिलाओं के प्रति न्यायपूर्ण दृष्टि" एक अभिवृत्ति है।

◆ मूल्य अपेक्षाकृत **स्थायी** होते हैं, पर जीवन की कोई बड़ी घटना उन्हें बदल सकती है — जैसे कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक, या डाकू से संत बने अंगुलिमाल और वाल्मीकि की कथाएँ।

वर्गीकरण	प्रकार	उदाहरण
मिल्टन रोकैच (Milton Rokeach, अमेरिकी सामाजिक मनोवैज्ञानिक) के अनुसार	साध्य मूल्य (Terminal) — जीवन के अंतिम लक्ष्य साधन मूल्य (Instrumental) — उन लक्ष्यों तक पहुँचने के व्यवहार	साध्य: सुख, आत्म-सम्मान, स्वतंत्रता, पारिवारिक सुरक्षा साधन: साहस, संयम, परिश्रम, धैर्य
आंतरिक/बाह्य	आंतरिक (Intrinsic) — अपने आप में मूल्यवान बाह्य (Extrinsic) — किसी और लक्ष्य का साधन	ईमानदारी, शांति (आंतरिक) धन (बाह्य)
संस्थागत/व्यक्तिगत	संस्थाएँ जिन मूल्यों को फैलाती हैं व्यक्ति के अपने मूल्य	लोकतंत्र — स्वतंत्रता; विवाह — निष्ठा आत्म-सम्मान
व्यक्तिगत/सामाजिक	अपनी भलाई के लिए दूसरों की भलाई के लिए	आरामदायक जीवन समानता, सामाजिक न्याय, विश्व-शांति
नैतिक दृष्टि से	नैतिक अनैतिक नीति-निरपेक्ष (Amoral)	ईमानदारी लालच सुंदरता, शारीरिक फिटनेस

7.4 सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values)

कुछ मूल्य ऐसे हैं जो हर संस्कृति, धर्म और युग में सम्मानित रहे हैं। इन्हें **सार्वभौमिक मूल्य** कहते हैं, क्योंकि ये जाति, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को पार करते हैं। 1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाई गई **मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (UDHR)** इन्हीं मूल्यों का अंतरराष्ट्रीय रूप है। पाँच प्रमुख सार्वभौमिक मूल्य हैं:

- ◆ **सत्य (Truth):** सत्य किसी की इच्छा पर निर्भर नहीं करता। कोई भी "झूठ" कहलाना पसंद नहीं करता — यही दिखाता है कि सत्य मनुष्य के मन में गहराई से बसा मूल्य है। एक झूठ को छिपाने के लिए दस और झूठ बोलने पड़ते हैं, जबकि सत्य अपने आप टिका रहता है।
- ◆ **प्रेम और देखभाल (Love-Caring):** यहाँ प्रेम का अर्थ व्यापक है — दूसरों और पर्यावरण की निःस्वार्थ चिंता। परोपकार, समझ और क्षमा इसी के रूप हैं।
- ◆ **शांति (Peace):** शांति का अर्थ है व्यक्ति के मन में संतुलन और समाज में सद्भाव। सत्य, प्रेम और न्याय के बिना शांति टिक नहीं सकती।
- ◆ **उत्तरदायित्व (Responsibility):** अपना कर्तव्य निभाना और किसी जीव या पर्यावरण को अनावश्यक हानि न पहुँचाना — यह अहिंसा और धर्म की भारतीय अवधारणा से जुड़ा है।
- ◆ **न्याय (Justice):** न्याय का अर्थ है हर व्यक्ति के साथ निष्पक्ष व्यवहार और क़ानून के सामने सबकी समानता। सुकरात और प्लेटो ने इसे सर्वोच्च मूल्य माना; आधुनिक मानवाधिकारों की धारणा इसी से निकली।

पाँच सार्वभौमिक मानवीय मूल्य

सार्वभौमिक मूल्य

सत्य इच्छा से स्वतंत्र	प्रेम-देखभाल निःस्वार्थ चिंता	शांति मन व समाज में सद्भाव	उत्तरदायित्व कर्तव्य, अहिंसा	न्याय निष्पक्षता, समानता
----------------------------------	---	--------------------------------------	--	------------------------------------

चित्र 1.17: पाँच सार्वभौमिक मानवीय मूल्य

“ प्रेम का विपरीत घृणा नहीं, उदासीनता है। (The opposite of love is not hate, it's indifference.) ” — एली वीज़ल (Elie Wiesel), नोबेल शांति पुरस्कार विजेता

7.5 प्रशासनिक मूल्य — द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग एवं नोलन समिति (Nolan Committee)

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अनुशंसित मूल्य (DIPAO)	नोलन समिति (Nolan Committee) के मूल्य (IASHOOL)
◆ D — समर्पण (Dedication)	◆ I — सत्यनिष्ठा (Integrity) — पद का दुरुपयोग स्वयं/परिवार के लाभ हेतु न करना
◆ I — निष्पक्षता (Impartiality)	◆ A — जवाबदेही (Accountability) — निर्णयों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह
◆ P — राजनीतिक तटस्थता (Political Neutrality)	◆ S — निस्वार्थता (Selflessness) — सदैव जन-हित में कार्य
◆ A — अनाम-कार्य (Anonymity)	◆ H — ईमानदारी (Honesty)
◆ O — क़ानून के शासन के प्रति दायित्व (Obligation — Rule of)	◆ O — खुलापन (Openness) O — वस्तुनिष्ठता

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अनुशंसित मूल्य (DIPAO)	नोलन समिति (Nolan Committee) के मूल्य (IASHOOL)
Law)	(Objectivity) L — नेतृत्व (Leadership)

“ यदि आपके पास एक अच्छी अखिल भारतीय सेवा नहीं होगी, जिसे अपने मन की बात खुलकर कहने की स्वतंत्रता हो, तो आपके पास एकजुट भारत नहीं होगा। (You will not have a united India if you do not have a good All-India Service which has the independence to speak out its mind.) ” — सरदार वल्लभभाई पटेल, संविधान सभा, 10 अक्टूबर 1949

लोक सेवा के मूल्य — द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग बनाम नोलन समिति

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग	और	नोलन समिति, ब्रिटेन (1995)
समर्पण (Dedication)	1	निःस्वार्थता (Selflessness)
निष्पक्षता (Impartiality)	2	सत्यनिष्ठा (Integrity)
राजनीतिक तटस्थता	3	वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
अनाम-कार्य (Anonymity)	4	जवाबदेही (Accountability)
क्रानून का शासन	5	खुलापन (Openness)
—	6	ईमानदारी (Honesty)
—	7	नेतृत्व (Leadership)

चित्र 1.18: लोक सेवा के मूल्य — द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग बनाम नोलन समिति

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग भारत सरकार ने 2005 में वीरप्पा मोडली की अध्यक्षता में बनाया था, जिसकी चौथी रिपोर्ट 'शासन में नैतिकता' (Ethics in Governance) सिविल सेवा के मूल्यों पर है। नोलन समिति ब्रिटेन में 1994 में लॉर्ड नोलन की अध्यक्षता में 'सार्वजनिक जीवन में आचरण के मानक' तय करने के लिए बनी थी और 1995 की अपनी पहली रिपोर्ट में इसने सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांत दिए। DIPAO और IASHOOL इन मूल्यों के अंग्रेजी नामों के पहले अक्षरों से बने याद रखने के सूत्र हैं। द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के मूल्य (DIPAO) और नोलन समिति के सिद्धांत (IASHOOL) एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय संदर्भ में सिविल सेवा के प्रमुख मूल्यों को दोनों को साथ जोड़कर ही पूरी तरह समझा जा सकता है — पहला भारतीय प्रशासन की ज़रूरतों से निकला है, दूसरा सार्वजनिक जीवन के सार्वभौमिक सिद्धांत देता है।

🔦 राजस्थान विशेष: राजस्थान सिविल सेवा (आचरण) नियम 1971 (Rajasthan Civil Services (Conduct) Rules 1971) प्रदेश के सिविल सेवकों के लिए आचार संहिता निर्धारित करते हैं। इन नियमों के अनुसार हर सरकारी कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वह हर समय पूर्ण सत्यनिष्ठा और कर्तव्य-परायणता बनाए रखे, सरकारी सूचना को बिना अधिकार किसी को न बताए (गोपनीयता) और ऐसा कोई काम न करे जो एक सरकारी सेवक के लिए अशोभनीय हो। राजस्थान में तैनात IAS, IPS जैसे अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों पर इसी तरह अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम 1968 (All India Services (Conduct) Rules 1968) लागू होते हैं।

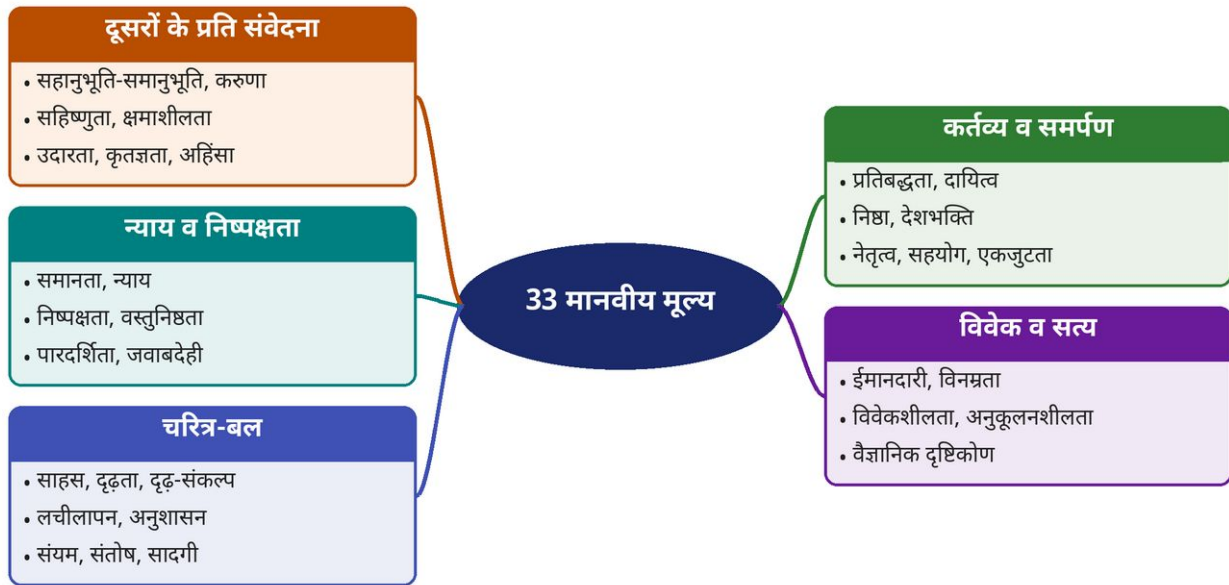
🌟 ताज़ा संदर्भ — मिशन कर्मयोगी

मिशन कर्मयोगी (iGOT कर्मयोगी प्लेटफॉर्म) के अंतर्गत केंद्र सरकार के सिविल सेवकों के लिए क्षमता-निर्माण व ऑनलाइन प्रशिक्षण को व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसमें नोलन सिद्धांत (Nolan Principles) और द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग द्वारा सुझाए गए मूल्यों को व्यावहारिक प्रशिक्षण मॉड्यूल के ज़रिए सिखाया जाता है — यानी ये सिद्धांत अब सिर्फ किताबी नहीं, आधुनिक प्रशासनिक प्रशिक्षण का भी हिस्सा बनते जा रहे हैं।

8. प्रमुख मानवीय मूल्य — विस्तृत विश्लेषण (असली कहानियों सहित)

नीचे 33 मानवीय मूल्यों को उनके मूल अर्थ, आसान भाषा में समझ, और असली-जीवन की कहानियों सहित समझिए। हर मूल्य के साथ ऐसा उदाहरण दिया गया है जो सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि पूरी घटना बताता है — ताकि शब्द रटा हुआ न लगे, बल्कि दिल से समझ आए।

33 प्रमुख मानवीय मूल्य — पाँच समूहों में



चित्र 1.19: 33 प्रमुख मानवीय मूल्य — पाँच समूहों में

(1) समानुभूति / परानुभूति (Empathy)

◆ **मूल परिभाषा:** दूसरों की भावनाओं को समझने और उसके अनुसार व्यवहार करने की क्षमता।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपका दोस्त परीक्षा में फेल हो जाए और आप उसकी उदासी को वैसे ही महसूस करें जैसे वह आपकी अपनी हो, और उसे सांत्वना दें — यही समानुभूति है।

► IAS अधिकारी पी. नरहरि ने मध्य प्रदेश में दिव्यांगजनों की तकलीफ को इतनी गहराई से महसूस किया कि उन्होंने खुद 200 लोगों को ट्रेनिंग देकर हर सरकारी भवन में रैंप-रेलिंग जैवचाप (पूरी कहानी खंड 3.2 में)।

► केरल के कलेक्टर प्रशांत नायर ने कोझीकोड में चुपचाप भूखे रह जाने वाले लोगों का दर्द समझा और 'ऑपरेशन सुलेमानी' के ज़रिए बिना शर्मादगी के मुफ्त खाना दिलाया।

🏠 **रोज़मर्रा में सोचिए:** कोविड-19 की दूसरी लहर (2021) में देशभर के कई ज़िला कलेक्टर खुद ऑक्सीजन-बेड ढूँढ रहे परिवारों के घर जाकर उनसे सीधे मिले और मदद की — यह दिखाता है कि प्रशासन में समानुभूति सिर्फ किताबी शब्द नहीं है।

(2) समानता (Equality)

◆ **मूल परिभाषा:** समान स्थिति वाले सभी लोगों को बिना भेदभाव के समान अवसर, अधिकार और दर्जा देना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी क्लास में टीचर सभी बच्चों को एक जैसी किताब और एक जैसा मौका दें, चाहे बच्चा अमीर घर से हो या गरीब घर से — यही समानता है।

► 1917 की रूसी क्रांति (Russian Revolution) — जिसमें ज़ार के निरंकुश शासन और ज़मींदारों-पूँजीपतियों के शोषण के विरुद्ध मज़दूर और किसान उठ खड़े हुए — असमानता के विरुद्ध सबसे बड़े ऐतिहासिक विद्रोहों में से एक थी — इसने दिखाया कि जब समानता छिन जाती है तो समाज में गहरा असंतोष जन्म लेता है।

► भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भी समता (Equality) को मौलिक मूल्य के रूप में शामिल किया गया है।

► फ्रांसीसी दार्शनिक ज्यॉं जाक रूसो (Jean Jacques Rousseau) ने कहा था — "बिना समानता के स्वतंत्रता नहीं टिक सकती।"

(3) जवाबदेही (Accountability)

◆ **मूल परिभाषा:** अपने कार्यों के अंतिम परिणामों के लिए उत्तर देने की भावना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे अगर आपकी गलती से टीम कोई खेल हार जाए, तो बहाना बनाने की बजाय आप खुद कहें — "हाँ, गलती मेरी थी, मैं सुधार करूँगा" — यही जवाबदेही है।

► रेलमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 1956 में तमिलनाडु के अरियालूर में हुए एक बड़े रेल हादसे के बाद, अपनी सीधी गलती न होने पर भी, नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुए मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया — यह जवाबदेही की सबसे मशहूर मिसाल मानी जाती है।

► इसरो (ISRO) के तत्कालीन अध्यक्ष सतीश धवन ने 1979 में SLV-3 रॉकेट की पहली लॉन्च विफल होने पर पूरी ज़िम्मेदारी खुद ली, जबकि परियोजना का नेतृत्व डॉ. कलाम की टीम कर रही थी — अगले साल सफलता मिलने पर धवन ने श्रेय उस टीम के प्रमुख डॉ. कलाम को दे दिया।

(4) अनुकूलनशीलता (Adaptability)

◆ **मूल परिभाषा:** नई परिस्थितियों में स्वयं को ढालने की क्षमता — किंतु अपने मूल मूल्यों से समझौता किए बिना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे नए स्कूल में जाने पर भी आप जल्दी नए दोस्त बना लें और नए माहौल में घुल-मिल जाएँ, बिना अपनी अच्छी आदतें छोड़े — यही अनुकूलनशीलता है।

► किरण बेदी ने ट्रैफिक पुलिस, तिहाड़ जेल की सुधारक भूमिका और पुदुचेरी की उप-राज्यपाल — हर बिल्कुल अलग भूमिका में खुद को ढालते हुए उत्कृष्ट काम किया।

► ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ISRO में SLV-3 परियोजना निदेशक, DRDO प्रमुख, प्रोफेसर और राष्ट्रपति — हर पद पर खुद को ढालकर बराबर न्याय किया।

🏠 **रोज़मर्रा में सोचिए:** विकासवाद के सिद्धांत का सार अक्सर इस रूप में कहा जाता है — "सबसे मज़बूत नहीं, सबसे बुद्धिमान नहीं — सबसे अनुकूलनशील ही जीवित रहता है" (यह पंक्ति सीधे डार्विन के मूल लेखन में नहीं मिलती, पर उनके विचार का लोकप्रिय सार मानी जाती है)।

(5) संयम (Temperance)

◆ **मूल परिभाषा:** विचारों, भावनाओं और कार्यों में मध्यमार्ग अपनाना — न अतिशयता, न अभाव।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपको चॉकलेट बहुत पसंद है, पर आप एक-दो टुकड़े खाकर रुक जाते हैं, लालच में पूरा डिब्बा नहीं खा जाते — यही संयम है।

► उत्तर प्रदेश (बांदा) की गुलाबी गैंग (Gulabi Gang) ने पतियों द्वारा शराब के दुरुपयोग के खिलाफ संघर्ष किया, ताकि परिवारों में संयम और अनुशासन लौट सके।

► संविधान के अनुच्छेद 47 (DPSP) में राज्य को नशीले पदार्थों के सेवन पर रोक लगाने का निर्देश दिया गया है — यह संयम को नीति स्तर पर बढ़ावा देने का प्रयास है।

(6) दृढ़ता (Tenacity)

◆ **मूल परिभाषा:** प्रतिकूल परिस्थितियों में भी निरंतर अपने कर्तव्य पर टिके रहना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे साइकिल चलाना सीखते समय बार-बार गिरने के बावजूद आप रोज़ फिर कोशिश करते रहें, अभ्यास न छोड़ें — यही दृढ़ता है।

► IAS अधिकारी अरति डोगरा (Arti Dogra) — जो जन्म से केवल साढ़े तीन फुट लंबी हैं और जिन्हें डॉक्टरों ने कभी स्कूल जाने लायक तक नहीं बताया था — ने बिना रुके पढ़ाई जारी रखी और पहले ही प्रयास में अखिल भारतीय रैंक 56 के साथ IAS बनीं। वे राजस्थान में बीकानेर और अजमेर जैसे ज़िलों की कलेक्टर रह चुकी हैं।

► आपदा या संकट के दौरान तैनात कई प्रशासनिक अधिकारी लगातार कई-कई घंटों तक चुनौतीपूर्ण हालात में डटकर काम करते हैं, बिना अपना पद छोड़े — यही दृढ़ता प्रशासन में सबसे ज़्यादा परखी जाती है।

(7) सहिष्णुता (Tolerance)

◆ **मूल परिभाषा:** अपने से भिन्न विचारों, आस्थाओं और व्यवहारों को स्वीकार करने की इच्छा।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपका दोस्त किसी और धर्म को मानता है या अलग तरह का खाना पसंद करता है, फिर भी आप उससे उतनी ही सच्ची दोस्ती निभाते हैं — यही सहिष्णुता है।

► हेलेन केलर, जो खुद देख-सुन नहीं सकती थीं, फिर भी उन्होंने कहा — "शिक्षा का सर्वोच्च परिणाम सहिष्णुता है।"

► "मैं आपसे असहमत हो सकता हूँ, किंतु आपके कहने के अधिकार के लिए प्राण देने को तैयार हूँ" — यह कथन वॉल्टेयर (Voltaire) के विचारों के सार के रूप में उन्हीं से जोड़कर लोकप्रिय हुआ, हालाँकि यह वाक्य वास्तव में उनकी जीवनी-लेखिका एवेलिन बीट्रिस हॉल (Evelyn Beatrice Hall) ने लिखा था।

(8) पारदर्शिता (Transparency)

◆ **मूल परिभाषा:** कार्य में खुलापन रखना — ताकि संबंधित हितधारक आवश्यकतानुसार कार्य की जाँच कर सकें।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी सोसाइटी का खज़ांची हर खर्च की रसीद सबको दिखाए, कुछ न छुपाए — यही पारदर्शिता है।

► सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (RTI Act) नागरिकों को सरकारी फ़ाइलें माँगने का हक़ देता है, जिससे सरकारी कामकाज में पारदर्शिता आई है।

► पूर्व IAS अधिकारी और मज़दूर किसान शक्ति संगठन (MKSS) की संस्थापक अरुणा रॉय ने राजस्थान के गाँवों में मज़दूरी और खर्च के हिसाब को सार्वजनिक 'सामाजिक अंकेक्षण' (Social Audit) के ज़रिए सबके सामने रखवाने के लिए वर्षों संघर्ष किया, जिसका नतीजा RTI कानून के रूप में सामने आया।

(9) वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

◆ **मूल परिभाषा:** निर्णय लेते समय व्यक्तिगत भावनाओं, पूर्वाग्रहों या रिश्तों से प्रभावित हुए बिना, केवल तथ्यों और योग्यता के आधार पर फैसला करना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई टीचर परीक्षा की कॉपी जाँचते समय यह न देखे कि यह किस बच्चे की है — सिर्फ लिखे गए जवाब के आधार पर नंबर दे — यही वस्तुनिष्ठता है।

► अमेरिकी दार्शनिक जॉन रॉल्स (John Rawls), जिनकी पुस्तक 'ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस' (1971) न्याय पर सबसे प्रभावशाली आधुनिक ग्रंथ मानी जाती है, का "अज्ञानता का पर्दा" (Veil of Ignorance) सिद्धांत कहता है — अगर कोई नियम बनाने वाला यह न जानता हो कि नियम लागू होने पर वह खुद अमीर होगा या गरीब, तो वह सबसे निष्पक्ष नियम बनाएगा।

► लोक सेवा आयोगों में साक्षात्कार बोर्ड कई सदस्यों से मिलकर बनता है, ताकि एक व्यक्ति के निजी पूर्वाग्रह से पूरा फैसला प्रभावित न हो।

(10) निष्पक्षता (Impartiality)

◆ **मूल परिभाषा:** किसी के प्रति व्यक्तिगत पक्षपात न रखते हुए, हर व्यक्ति के साथ बराबरी का व्यवहार करना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई अंपायर दोनों टीमों पर एक जैसा नियम लागू करे, चाहे उसका अपना बेटा ही किसी एक टीम में क्यों न खेल रहा हो — यही निष्पक्षता है।

► राजस्व अधिकारी ज़मीन के विवाद में बिना किसी पक्ष का लिहाज़ किए, सिर्फ़ दस्तावेज़ों के आधार पर फैसला दे — यही प्रशासनिक निष्पक्षता है।

(11) क्षमाशीलता (Forgiveness)

◆ **मूल परिभाषा:** दूसरों की गलती को माफ़ करने और बदले की भावना से ऊपर उठने की क्षमता।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी दोस्त ने गलती से आपकी प्रिय किताब फाड़ दी और सच्चे मन से माफ़ी मांगी, तो आप गुस्सा छोड़कर उसे माफ़ कर दें, रिश्ता न तोड़ें — यही क्षमाशीलता है।

► महात्मा गांधी से जोड़ी जाने वाली प्रसिद्ध उक्ति है — "आँख के बदले आँख लेने की नीति पूरी दुनिया को अंधा बना देगी।" (An eye for an eye only ends up making the whole world blind) — यानी बदले की भावना छोड़कर क्षमा अपनाना ही असली शक्ति है।

► अक्सर चीनी दार्शनिक कन्फ़्यूशियस से जोड़ी जाने वाली एक प्रचलित उक्ति है — जो व्यक्ति बदला लेने की यात्रा पर निकलता है, उसे पहले दो कब्रें खोदनी चाहिए — एक अपने दुश्मन के लिए, एक खुद के लिए (क्योंकि बदला खुद को भी नष्ट कर देता है)।

(12) साहस (Courage)

◆ **मूल परिभाषा:** डर के बावजूद सही कदम उठाने की तुरंत हिम्मत।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे अंधेरे कमरे में जाने से डर लगता है, फिर भी आप हिम्मत करके चले जाते हैं — डर खत्म नहीं होता, पर आप उस पर विजय पा लेते हैं — यही साहस है।

► IPS मृदुल कछावा ने राजस्थान के चंबल के बीहड़ों में करीब एक साल के कार्यकाल में कई खूँखार डकैतों को पकड़ा (अलग-अलग रिपोर्टों में यह संख्या भिन्न-भिन्न बताई गई है), जबकि यह इलाक़ा दशकों से पुलिस के लिए सबसे खतरनाक माना जाता रहा है।

► पर्वतारोही अरुणिमा सिन्हा, जिनका एक पैर ट्रेन दुर्घटना में कट गया था, कृत्रिम पैर के सहारे विश्व की पहली दिव्यांग महिला बनीं जिन्होंने माउंट एवरेस्ट फतह किया।

► गांधीजी ने बिना किसी हथियार के, सिर्फ़ नमक की एक चुटकी के प्रतीकात्मक विरोध (दांडी मार्च) से विशाल ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया।

(13) विवेकशीलता (Prudence)

◆ **मूल परिभाषा:** ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग करना — सीमित संसाधनों का अधिकतम व समझदारीपूर्ण उपयोग।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपके पास सीमित पॉकेट-मनी है और आप सोच-समझकर खर्च करते हैं ताकि ज़रूरी चीज़ के लिए पैसा बचा रहे — यही विवेकशीलता है।

► 1965 के युद्ध में असल उत्तर (Battle of Asal Uttar) में भारतीय सेना ने गन्ने के खेतों में पानी भरकर पाकिस्तानी टैंकों को फँसाया — यह सीमित संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की मिसाल है।

► सीमित बजट और संसाधनों में काम करने वाला कोई प्रशासनिक अधिकारी प्राथमिकता तय करके पहले सबसे ज़रूरी योजनाओं पर खर्च करता है, बाकी को चरणबद्ध तरीके से पूरा करता है — यही प्रशासनिक विवेकशीलता है।

(14) दृढ़-संकल्प (Perseverance)

◆ **मूल परिभाषा:** बार-बार असफल होने पर भी लक्ष्य की ओर डटे रहना और कोशिश जारी रखना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे गणित का कोई सवाल बार-बार गलत होने पर भी आप हार न मानकर तब तक कोशिश करते रहें जब तक वह सही न हो जाए — यही दृढ़-संकल्प है।

► एक प्रसिद्ध कथन है — "महानतम गौरव कभी न गिरने में नहीं, बल्कि हर बार गिरकर उठने में है।" (इस कथन को अक्सर नेल्सन मंडेला के नाम से भी उद्धृत किया जाता है, हालाँकि इसका मूल स्रोत निश्चित रूप से प्रमाणित नहीं है — भाव इतना सशक्त है कि यह हर दृढ़-संकल्पी व्यक्ति पर लागू होता है)।

► इसरो के चंद्रयान-3 मिशन ने चंद्रयान-2 की असफलता (2019) के बाद भी हार नहीं मानी और 23 अगस्त 2023 को चाँद के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट-लैंडिंग कर दिखाई — यह दृढ़-संकल्प का ताज़ा और गौरवशाली उदाहरण है।

(15) प्रतिबद्धता (Commitment)

◆ **मूल परिभाषा:** किसी कार्य या उद्देश्य के प्रति समर्पण — बिना किसी बाहरी प्रेरणा के, अपने-आप निभाया गया वादा।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपने दोस्त से वादा किया कि रोज़ शाम साथ पढ़ाई करेंगे, और कोई टोके बिना भी आप रोज़ वह वादा निभाते हैं — यही प्रतिबद्धता है।

► कई ग्रामीण जनसुनवाई कार्यकर्ता व स्वयंसेवक शिकायतें सुनने के लिए नियमित रूप से घंटों पैदल चढ़कर दूरदराज़ बस्तियों तक जाते हैं, बिना किसी को दिखाए — यही निरंतर, बिना-प्रचार निभाई गई प्रतिबद्धता है।

► 'हॉकी वाली सरपंच' नीरू यादव ने झुंझुनू के लांबी-अहीर गाँव में लगातार दो साल अपनी खुद की तनखाह लगाकर लड़कियों के लिए हॉकी मैदान, किट और कोच का इंतज़ाम किया — उनकी टीम राज्य के ग्रामीण ओलंपिक तक पहुँची, और उनकी पहल से 10 से ज़्यादा लड़कियों को नौकरी भी मिली।

(16) करुणा (Compassion)

◆ **मूल परिभाषा:** दूसरे के कष्ट को गहराई से महसूस करना और उसे दूर करने के लिए कदम उठाने की प्रेरणा — यानी समझना (Empathy) + मदद करना (Kindness), दोनों।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे रास्ते में किसी घायल जानवर को देखकर आपका मन दुखी हो और आप रुककर उसकी मदद करने की कोशिश करें, सिर्फ आगे बढ़कर न निकल जाएँ — यही करुणा है।

► डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी (IAS) ने 'चरण पादुका अभियान' और 'रक्तकोष फाउंडेशन' के ज़रिए ज़रूरतमंदों तक जूते-चप्पल और खून पहुँचाने का काम किया।

► मदर टेरेसा ने कहा था — "दूसरों के लिए जिया गया जीवन ही वास्तविक जीवन है।"

🏠 **रोज़मर्रा में सोचिए:** बाल-अधिकार कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी ने बचपन बचाओ आंदोलन के ज़रिए हज़ारों बाल-मज़दूरों को मुक्त कराया — 2014 में उन्हें इसी काम के लिए नोबेल शांति पुरस्कार मिला — करुणा को जीवन का मिशन बनाने का आधुनिक उदाहरण।

(17) संतोष (Contentment)

◆ **मूल परिभाषा:** मानसिक एवं भावनात्मक संतुष्टि — लालच और ईर्ष्या से मुक्ति।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपके पास पुराना फोन है और दोस्त के पास नया, फिर भी आप जो आपके पास है उसी में खुश रहें, जलन महसूस न करें — यही संतोष है।

► पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बारे में व्यापक रूप से कहा जाता है कि वे राष्ट्रपति भवन में बहुत सीमित निजी सामान लेकर आए और उतने ही सादे सामान के साथ वापस चले गए — उनकी सादगी की यह छवि उनके सार्वजनिक जीवन से मेल खाती है।

► त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री माणिक सरकार का बैंक बैलेंस उनके एक चुनावी शपथपत्र में बेहद कम दर्ज किया गया था (सटीक राशि वर्ष के अनुसार शपथपत्रों में अलग-अलग मिलती है) — इतने बड़े पद पर रहते हुए भी संतोषी जीवन की मिसाल।

(18) सहयोग (Cooperation)

◆ **मूल परिभाषा:** किसी साझा लक्ष्य के लिए दूसरों के साथ मिल-जुलकर काम करना। इसका आधार है "एकता में बल है" — यानी टीम-भावना (Team Effort) से किया गया काम अकेले के प्रयास से अधिक कारगर होता है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे स्कूल के प्रोजेक्ट में हर बच्चा अपना-अपना हिस्सा करे ताकि पूरा प्रोजेक्ट जल्दी और अच्छा बने, अकेले एक ही बच्चा सब कुछ न करे — यही सहयोग है।

► डॉ. वर्गीज़ कुरियन ने गुजरात के हज़ारों छोटे किसानों को सहकारी समितियों में जोड़कर अमूल (Amul) जैसा विशाल दुग्ध-सहकारिता संगठन खड़ा किया।

► इसरो (ISRO) का चंद्रयान/मंगलयान मिशन सैकड़ों वैज्ञानिकों के वर्षों के सामूहिक सहयोग का नतीजा है।

► बास्केटबॉल खिलाड़ी माइकल जॉर्डन ने कहा था — "अकेली प्रतिभा मैच जिता सकती है, पर टीम-भावना ही चैंपियनशिप जिताती है।"

(19) अनुशासन (Discipline)

◆ **मूल परिभाषा:** किसी शासन-प्रणाली या नियम-व्यवस्था के अनुसार कार्य करना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे रोज़ सुबह तय समय पर उठकर पढ़ाई करना, भले ही मन न कर रहा हो — यही अनुशासन है। कहा भी गया है: "या तो अनुशासन का दर्द झेलो, या बाद में पछतावे का।"

► इंजीनियर ई. श्रीधरन ने कोंकण रेलवे जैसी विशाल परियोजना को कठिन भौगोलिक चुनौतियों के बावजूद लगभग सात वर्ष के रिकॉर्ड समय में, बिना किसी बड़े भ्रष्टाचार-आरोप के पूरा किया — यह उनके कठोर अनुशासन का ही नतीजा था।

► भारतीय सेना अपने कठोर अनुशासन के लिए जानी जाती है — यही अनुशासन उसे कठिन मोर्चे पर डटे रहने की ताकत देता है।

(20) लचीलापन (Resilience)

◆ **मूल परिभाषा:** कठिनाइयों से जल्दी उबरने और वापस खड़े होने की क्षमता।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे परीक्षा में कम नंबर आने पर निराश होकर बैठ न जाना, बल्कि अगली बार बेहतर करने के लिए फिर से मेहनत में जुट जाना — यही लचीलापन है।

► किरण बेदी के हवाले से अक्सर यह बात कही जाती है कि वे भारी फर्नीचर में निवेश नहीं करतीं — ताकि तबादले के लिए सदा तैयार रहें — यानी हर नई मुश्किल परिस्थिति के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना।

► बूंदी के कलेक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी, जो खुद MBBS डॉक्टर भी हैं, ने 2023 में राजस्थान में डॉक्टरों की बड़ी हड़ताल के दौरान खुद अस्पताल जाकर मरीजों का इलाज किया, ताकि आम जनता परेशान न हो।

(21) कृतज्ञता (Gratitude) — ऋण-भावना

◆ **मूल परिभाषा:** किसी के उपकार के प्रति गहरी प्रशंसा और आभार की भावना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे टीचर ने आपको कुछ नया सिखाया तो दिल से धन्यवाद कहना और उनका सम्मान करना, यह भूल न जाना कि किसी ने आपकी मदद की थी — यही कृतज्ञता है।

► भारतीय समाज में ऋण की अवधारणा प्राचीन काल से चली आ रही है — देव ऋण (ईश्वर और प्रकृति की शक्तियों के प्रति), ऋषि ऋण (गुरुओं और ज्ञान देने वालों के प्रति), पितृ ऋण (माता-पिता व पूर्वजों के प्रति) और भूत ऋण (पशु, पक्षी, पौधों के प्रति) — ये सभी कृतज्ञता के ही अलग-अलग रूप हैं। 'ऋण-भावना' का अर्थ यही है कि हमें जो कुछ मिला है वह बहुतों के योगदान से मिला है, इसलिए अच्छे कर्म करके यह 'कर्ज़' चुकाना हमारा कर्तव्य है।

(22) अहिंसा (Non-violence)

◆ **मूल परिभाषा:** केवल हिंसा न करना ही अहिंसा नहीं है — उत्पीड़न के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध करना भी अहिंसा है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई आपसे झगड़ने की कोशिश करे, फिर भी आप मारपीट न करके शांति से बात करके मामला सुलझाएँ — यही अहिंसा है।

► महात्मा गांधी ने पूरे स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित रखा और इसे विश्व भर में सत्याग्रह के रूप में मशहूर किया।

► एक IPS अधिकारी ने खतरनाक अपराधियों से भी पूछताछ में शारीरिक यातना (Custodial Torture) की जगह मनोवैज्ञानिक और अहिंसक तकनीकों को अपनाकर सच उगलवाने का तरीका अपनाया।

(23) निष्ठा (Loyalty)

◆ **मूल परिभाषा:** किसी व्यक्ति, संस्था या मूल्य के प्रति दृढ़ और स्थायी समर्थन।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आपकी स्कूल टीम कभी जीते कभी हारे, फिर भी आप हमेशा अपनी ही टीम का साथ दें, बीच में पाला न बदलें — यही निष्ठा है।

► मेवाड़ की धाय माँ पन्नाधाय ने राज्य के प्रति अपनी निष्ठा में अपने ही पुत्र चंदन का बलिदान देकर राजकुमार उदय सिंह की जान बचाई।

(24) नेतृत्व (Leadership)

◆ **मूल परिभाषा:** दूसरों को किसी साझा लक्ष्य की ओर प्रेरित करने और साथ लेकर चलने की क्षमता। अमेरिकी लेखक जॉन सी. मैक्सवेल के शब्दों में — "नेता वही है जो रास्ता जानता है, रास्ते पर खुद चलता है और दूसरों को भी रास्ता दिखाता है।"

💡 **आसान भाषा में:** जैसे ग्रुप प्रोजेक्ट में कोई एक बच्चा सबको सही दिशा दिखाए, खुद पहले मेहनत करके उदाहरण पेश करे, और सबको साथ लेकर चले — यही नेतृत्व है।

► सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने नेतृत्व और कूटनीतिक कौशल से आज़ादी के बाद लगभग 565 रियासतों का भारत में विलय करवाया — अधिकांश रियासतें बातचीत से विलय के लिए राजी हुईं, हालाँकि हैदराबाद व जूनागढ़ जैसे कुछ मामलों में सैन्य कार्रवाई भी करनी पड़ी — यह इतिहास की सबसे बड़ी राजनीतिक एकीकरण प्रक्रियाओं में से एक मानी जाती है।

► फ़िल्ड मार्शल सैम मानेकशॉ ने 1971 के भारत-पाक युद्ध में असाधारण नेतृत्व दिखाकर भारतीय सेना को निर्णायक जीत दिलाई।

(25) एकजुटता (Solidarity)

◆ **मूल परिभाषा:** समूह के सदस्यों की आपस में एकता — 'वसुधैव कुटुंबकम्' (सारा विश्व एक परिवार है) की भावना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे बाढ़ आने पर पूरी कॉलोनी मिलकर फंसे हुए परिवार की मदद के लिए इकट्ठा हो जाए — यही एकजुटता है।

► राजसमंद ज़िले के पिपलांत्री गाँव के पूर्व सरपंच श्याम सुंदर पालीवाल ने अपने गाँव में बेटी के जन्म पर 111 पेड़ लगाने की परंपरा शुरू की — गाँव में लड़की के जन्म पर पूरा परिवार और गाँव मिलकर पेड़ लगाता है, माता-पिता 10,000 रुपये और गाँव के दानदाता 21,000 रुपये फिक्स्ड डिपॉजिट में डालते हैं, और परिवार शपथ लेता है कि न भ्रूण-हत्या करेंगे, न बाल-विवाह — बेटी और पेड़, दोनों को साथ बढ़ा करेंगे। इस एक विचार ने कन्या-भ्रूण-हत्या के खिलाफ पूरे गाँव को एकजुट कर दिया।

(26) सादगी (Simplicity)

◆ **मूल परिभाषा:** बाह्य आडंबर और दिखावे से मुक्त, सरल जीवन जीना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई अमीर होकर भी दिखावा न करे और सादे कपड़ों-सादे जीवन में ही खुश रहे — यही सादगी है।

► लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री रहते हुए भी बेहद सादा जीवन जीते थे और अपने निजी खर्च के लिए भी कर्ज़ लेने से नहीं हिचकते थे (जैसे अध्याय की शुरुआत की कहानी में परिवार की कार के लिए बैंक से ₹5,000 का ऋण) — बड़े पद पर रहते हुए भी दिखावे से दूर रहना ही सादगी है।

(27) वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temperament)

◆ **मूल परिभाषा:** तर्क और तथ्यों पर आधारित निर्णय लेने की आदत।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी अफवाह या व्हाट्सएप मैसेज पर तुरंत विश्वास न करके पहले सच्चाई जानने की कोशिश करना — यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

► राजस्थान के IAS अधिकारी डॉ. समित शर्मा ने चित्तौड़गढ़ में जेनेरिक दवा योजना शुरू की — उन्होंने नियामक-मानकों (Regulatory Standards) के अनुसार समतुल्य पाई गई सस्ती जेनेरिक दवाइयों को बढ़ावा देकर तथ्य-आधारित निर्णय का उदाहरण पेश किया, जिससे मरीजों के दवा-खर्च में भारी कमी आई और यह योजना बाद में पूरे राजस्थान में लागू हुई।

► जल-संरक्षक लक्ष्मण सिंह ने राजस्थान के लापोड़िया गाँव में वैज्ञानिक अवलोकन से 'चौका पद्धति' विकसित की — चौकोर मेड़ों से बरसाती पानी को धीरे-धीरे ज़मीन में सोखने दिया जाता है, जिससे भूजल स्तर 500 फीट की गहराई से बढ़कर सिर्फ 15-40 फीट पर आ गया, और गाँव में साल में दो फ़सलें होने लगीं।

(28) ईमानदारी (Honesty)

◆ **मूल परिभाषा:** विचार, वाणी और कार्य — तीनों में सच्चाई बनाए रखना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे परीक्षा में गलती से ज़्यादा नंबर मिल जाएँ तो टीचर को खुद जाकर बता देना, चुप न रहना — यही ईमानदारी है।

► कोई परीक्षा-मूल्यांकनकर्ता गलती से किसी परिचित परीक्षार्थी की कॉपी में ज़्यादा नंबर जुड़ा हुआ पाए, तो चुप रहने की बजाय स्वयं आगे बढ़कर सुधार के लिए रिपोर्ट करे — बिना दबाव, बिना डर के सच बोलना और उस पर टिके रहना ही ईमानदारी है।

(29) विनम्रता (Humility)

◆ **मूल परिभाषा:** अपने आप को दूसरों के बराबर समझना, घमंड न करना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे क्लास में फर्स्ट आने पर भी आप दूसरों से घमंड से बात न करें, सबके साथ पहले जैसा ही व्यवहार रखें — यही विनम्रता है।

► ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बारे में व्यापक रूप से कहा जाता है कि वे राष्ट्रपति भवन में सभी कर्मचारियों से आदर और समानता का व्यवहार करते थे — पद कितना भी बड़ा हो, इंसान से इंसान जैसा बर्ताव रखते थे।

(30) न्याय (Justice)

◆ **मूल परिभाषा:** निष्पक्षता के मापदंड पर, बिना किसी पूर्वाग्रह के सही-गलत तय करना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे दो दोस्तों के झगड़े में दोनों की पूरी बात सुनकर, जो सच में गलत हो सिर्फ उसी को गलत कहना — किसी को दोस्त होने के नाते बचाना नहीं — यही न्याय है।

► आदिवासी क्षेत्रों में तैनात कई प्रशासनिक अधिकारी सरकारी योजनाओं के लाभ के वितरण में सामाजिक दबाव या प्रभावशाली व्यक्तियों की सिफारिश के बजाय पात्रता की सूची को ही आधार बनाते हैं, ताकि लाभ असल ज़रूरतमंद तक पहुँचे — यही प्रशासनिक न्याय है।

► IAS टीना डाबी ने जैसलमेर में महिला सशक्तीकरण की 'जैसाण शक्ति' पहल के ज़रिए महिलाओं को बराबर अवसर दिलाने पर काम किया।

(31) उदारता (Generosity)

◆ **मूल परिभाषा:** बिना स्वार्थ के दूसरों को देने की भावना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे अपना टिफिन किसी भूखे दोस्त के साथ खुशी-खुशी बाँट लेना — यही उदारता है।

► उद्योगपति अज़ीम प्रेमजी ने विभिन्न वर्षों में परोपकार-रिपोर्टों के अनुसार भारत के सबसे बड़े व्यक्तिगत दानदाताओं में लगातार स्थान पाया है, कुछ वर्षों में औसतन प्रतिदिन करोड़ों रुपये के दान के बराबर योगदान के साथ।

(32) दायित्व (Obligation)

◆ **मूल परिभाषा:** कानूनी या नैतिक रूप से अपना कार्य करने की बाध्यता — भले कोई देखे या न देखे।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे क्लास मॉनिटर टीचर के न होने पर भी अपनी ज़िम्मेदारी ईमानदारी से निभाए, सिर्फ टीचर के सामने अच्छा बनने के लिए नहीं — यही दायित्व है।

► अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम 1968 (All India Services Conduct Rules 1968) IAS, IPS और भारतीय वन सेवा के अधिकारियों के दायित्व लिखित रूप में तय करते हैं — जैसे राजनीतिक तटस्थता रखना, निर्धारित सीमा से अधिक उपहार न लेना और हर समय पूर्ण सत्यनिष्ठा व कर्तव्य-परायणता बनाए रखना। यानी नैतिक दायित्व को यहाँ नियम का रूप दे दिया गया है।

(33) देशभक्ति (Patriotism)

◆ **मूल परिभाषा:** अपने देश, उसकी संस्कृति और नागरिकों के कल्याण के प्रति गहरा प्रेम और समर्पण।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे आप किसी दूसरे देश में भी अपने देश का झंडा देखकर गर्व महसूस करें, और मौका मिलने पर देश की भलाई के लिए बिना स्वार्थ काम करें — यही देशभक्ति है।

► मणिपुर के IAS अधिकारी आर्मस्ट्रांग पामे ने अपने गाँव को सड़क से जोड़ने के लिए, जब सरकार से पैसा नहीं मिला, तो अपनी और परिवार की बचत लगाकर तथा फेसबुक पर अपील करके देश-विदेश से लगभग 40 लाख रुपये जुटाए। सैकड़ों गाँववालों — जिनमें 100 से ज़्यादा महिलाएँ शामिल थीं — ने मिलकर सिर्फ 7 महीनों में 100 किलोमीटर लंबी 'जनता की सड़क' बना डाली। इसी वजह से उन्हें 'मिरेकल मैन' कहा जाने लगा — यह दिखाता है कि देशभक्ति सिर्फ नारा नहीं, ज़मीन पर काम करके दिखाने का जज़्बा है।

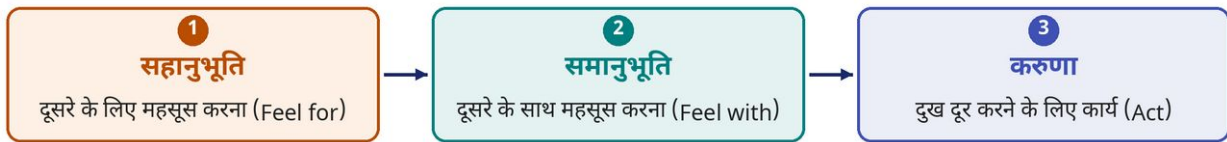
💡 **याद रखने का आसान तरीका:** 33 मूल्यों को रटने की बजाय हर मूल्य के साथ एक असली नाम या घटना और एक रोज़मर्रा की मिसाल — दोनों जोड़कर याद करें, जैसे ऊपर दिया गया है। मूल्य परिभाषा से कम और उदाहरण से ज़्यादा याद रहते हैं।

8.1 सहानुभूति, समानुभूति और करुणा — तीन सीढ़ियाँ

ये तीनों शब्द अक्सर एक-दूसरे की जगह प्रयोग कर दिए जाते हैं, पर इनमें स्पष्ट अंतर है। इन्हें एक सीढ़ी की तरह समझिए — हर अगला कदम पिछले से गहरा है:

मूल्य	अर्थ	मन की स्थिति	प्रशासनिक उदाहरण
सहानुभूति (Sympathy)	दूसरे के दुख के प्रति दया या अफ़सोस महसूस करना	"मुझे आपके लिए बुरा लग रहा है" — दूरी बनी रहती है	बाढ़ पीड़ितों की खबर पढ़कर दुख होना
समानुभूति (Empathy)	खुद को दूसरे की जगह रखकर उसकी भावना को उसी तरह महसूस करना	"मैं समझ सकता हूँ कि आप पर क्या बीत रही है"	दिव्यांग व्यक्ति की तरह व्हीलचेयर पर बैठकर दफ़्तर की सीढ़ियाँ देखना
करुणा (Compassion)	समानुभूति के साथ दुख दूर करने के लिए कार्य करना	"मैं आपकी मदद के लिए कुछ करूँगा"	दफ़्तरों में रैंप बनवाना और सुगम्यता ऑडिट करवाना

सहानुभूति से करुणा तक — भावना से कार्य की ओर



चित्र 1.20: सहानुभूति से करुणा तक — भावना से कार्य की ओर

9. सत्यनिष्ठा (Integrity) — अर्थ, महत्व एवं दार्शनिक आधार

सत्यनिष्ठा (Integrity) शब्द लैटिन "इंटीजर (integer)" / "इंटीग्रिटास (integritas)" से आया है — जिसका अर्थ है "पूर्णा, अखंड, समग्र" (Whole/Undivided), अर्थात् विचार, वाणी और कर्म में कोई विभाजन न होना। इसे प्रायः नैतिक सिद्धांतों के प्रति सुसंगत और दृढ़ प्रतिबद्धता के रूप में समझा जाता है।

आसान परिभाषा: सत्यनिष्ठा (Integrity)

परिभाषा: "ज्ञान सही रास्ता जानना है, सत्यनिष्ठा उस पर चलना है" — यानी ज्ञान के बिना सत्यनिष्ठा कमजोर और अधूरी रह जाती है, और सत्यनिष्ठा के बिना ज्ञान खतरनाक हो सकता है।

आसान भाषा में: जैसे किसी को पता हो कि झूठ बोलना गलत है (ज्ञान), पर फिर भी वह अपने फायदे के लिए झूठ बोल दे — तो सिर्फ जानना काफी नहीं, उस पर अमल करना ही असली सत्यनिष्ठा है। **उदाहरण:** एक अधिकारी को पता है कि रिश्तत लेना गलत है (यह तो हर कोई जानता है), पर जब सामने असली मौका आए और वह रिश्तत ठुकरा दे — तभी उसकी सत्यनिष्ठा साबित होती है, सिर्फ जानने से नहीं।

“ ज्ञान के बिना सत्यनिष्ठा कमजोर और बेकार है, और सत्यनिष्ठा के बिना ज्ञान खतरनाक और भयावह है। (Integrity without knowledge is weak and useless, and knowledge without integrity is dangerous and dreadful.) ” — सैमुअल जॉनसन (Samuel Johnson)

दार्शनिक आधार — भारतीय एवं पश्चिमी

परंपरा	विचार
भारतीय (वैदिक)	सत्य और ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) पर आधारित आचरण — 'सत्यमेव जयते'।
इमैनुएल कांट (पश्चिमी)	कर्तव्य के लिए कर्तव्य — नैतिक नियम पर अटल रहना, चाहे परिणाम कुछ भी हो।
जॉन रॉल्स (पश्चिमी)	न्याय और निष्पक्षता को सत्यनिष्ठा से जोड़ा — 'अज्ञानता का पर्दा' सिद्धांत।

☀ गांधीजी की सत्यनिष्ठा

महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवन में जो कहा, वही किया — नमक कानून तोड़ने से पहले उन्होंने सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश सरकार को अपनी योजना बता दी थी, कुछ छुपाया नहीं। यही सत्यनिष्ठा है — विचार, वाणी और कर्म में कोई अंतर न होना।

प्रोबिटी (Probity) — सत्यनिष्ठा का विस्तृत रूप

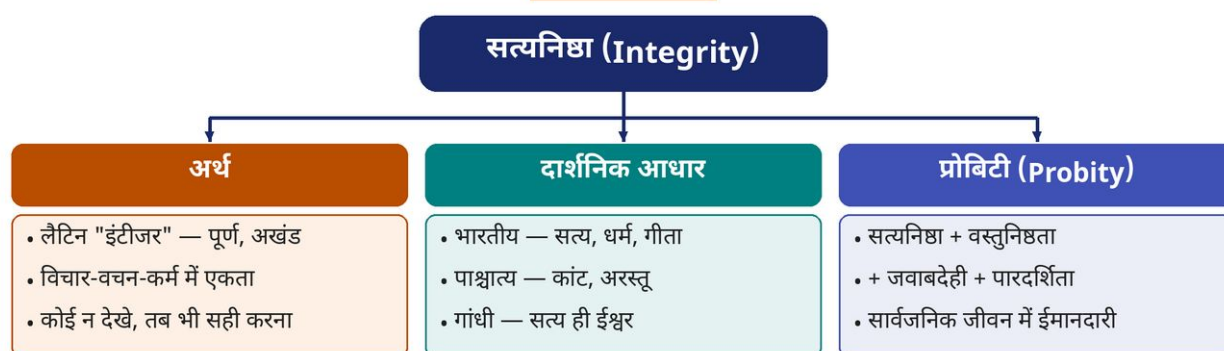
◆ प्रोबिटी (Probity) का अर्थ है सार्वजनिक पद पर रहते हुए पूरी तरह साफ़-सुथरा और सिद्धांतों पर टिका आचरण। इसे सत्यनिष्ठा का विस्तृत रूप इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें कई गुण एक साथ शामिल हैं — सूत्र के रूप में: प्रोबिटी (Probity) = सत्यनिष्ठा (Integrity) + वस्तुनिष्ठता (Objectivity) + जवाबदेही (Accountability) + पारदर्शिता (Transparency) + निस्वार्थता (Selflessness) — यानी सिर्फ ईमानदार होना काफी नहीं, सार्वजनिक जीवन में इन पाँचों गुणों का एक साथ होना ज़रूरी है।

☀ चाणक्य के दो दीपक — प्रोबिटी का प्रतीक

कहा जाता है कि आचार्य चाणक्य अपने कक्ष में दो अलग दीपक जलाकर रखते थे — एक दीपक की रोशनी में वे राज-काज (राज्य का काम) करते थे, और जैसे ही कोई निजी पत्र लिखना होता, वे राजकीय दीपक बुझाकर अपना निजी दीपक जला लेते थे। यह छोटी-सी आदत बताती है कि सार्वजनिक संसाधन का एक कण भी निजी काम में इस्तेमाल नहीं होना चाहिए — यही प्रोबिटी का सार है।

क्या वस्तुनिष्ठता के लिए सत्यनिष्ठा आवश्यक है? हाँ, बिना सत्यनिष्ठा (ईमानदार नीयत) के वस्तुनिष्ठता (निष्पक्ष निर्णय) टिक ही नहीं सकती — जैसे ऊपर चाणक्य के उदाहरण में, अगर नीयत साफ़ न हो तो कोई भी नियम-कायदा दिखावा बनकर रह जाता है।

सत्यनिष्ठा — अर्थ, आधार और प्रोबिटी



चित्र 1.21: सत्यनिष्ठा — अर्थ, आधार और प्रोबिटी

10. निष्पक्षता (Impartiality) और गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)

निष्पक्षता और गैर-पक्षपात को अक्सर एक-दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है, जबकि दोनों अलग हैं। नीचे दोनों को अलग-अलग स्पष्ट किया गया है।

10.1 निष्पक्षता (Impartiality)

◆ व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के बिना, योग्यता के आधार पर निर्णय लेना।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी प्रतियोगिता में जज सिर्फ यह देखे कि किसने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया, चाहे वह उसका अपना रिश्तेदार हो या अनजान बच्चा — बिना यह देखे कि वह कौन है, सिर्फ काम देखकर फैसला करना ही निष्पक्षता है।

◆ जॉन रॉल्स का "अज्ञानता का पर्दा" (Veil of Ignorance) निष्पक्ष न्याय का आधार माना जाता है — यानी निर्णय ऐसे लिया जाए मानो निर्णय लेने वाले को पता ही न हो कि उस निर्णय से वह स्वयं किस पक्ष में खड़ा होगा; तब वह किसी के साथ पक्षपात नहीं करेगा (देखें खंड 8, मूल्य 9)।

◆ अनुच्छेद 14-18 (समानता का अधिकार) और अनुच्छेद 19-22 (स्वतंत्रता का अधिकार) की रक्षा के लिए निष्पक्षता अनिवार्य है, क्योंकि अगर अधिकारी ही लोगों के साथ भेदभाव करे तो नागरिकों को संविधान से मिला बराबरी और स्वतंत्रता का अधिकार केवल कागज़ पर रह जाएगा।

10.2 निष्पक्षता सुनिश्चित करने के उपाय

◆ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS — राशन व्यवस्था) का डिजिटलीकरण और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT — सरकारी सहायता सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेजना): जब पात्रता के नियम साफ़ हों और राशन या पैसा सीधे सही व्यक्ति तक पहुँचे, तो बीच के बिचौलियों की भूमिका खत्म हो जाती है और किसी के साथ पक्षपात की गुंजाइश घट जाती है।

◆ सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (RTI Act), GeM पोर्टल (Government e-Marketplace — सरकारी ख़रीद का ऑनलाइन बाज़ार) और ई-बिडिंग (ऑनलाइन निविदा): जब सरकारी फैसले और ख़रीद सबके सामने खुले रूप में होते हैं, तो अधिकारी किसी चहेते को लाभ नहीं पहुँचा पाता — इससे पारदर्शिता और जवाबदेही दोनों बढ़ती हैं।

◆ राजस्थान में मनरेगा का सामाजिक अंकेक्षण (MGNREGA Social Audit): इसमें ग्राम सभा के सामने मज़दूरी और खर्च का पूरा हिसाब पढ़कर सुनाया जाता है, जिससे फ़र्ज़ी नाम, अपनों की ज़्यादा काम देने जैसे पक्षपात सबके सामने उजागर हो जाते हैं।

◆ पुलिस के लिए लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण (जैसे मिशन शक्ति जैसे महिला-सुरक्षा अभियानों में): कई बार अधिकारी बिना जाने-समझे महिलाओं या किसी वर्ग के प्रति पहले से बनी धारणा (अचेतन पूर्वाग्रह — Unconscious Bias) से व्यवहार करते हैं; ऐसा प्रशिक्षण इस छिपे पूर्वाग्रह को पहचानने और दूर करने में मदद करता है।

◆ वार्षिक कार्य-निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट (APAR) और 360-डिग्री मूल्यांकन: 360-डिग्री मूल्यांकन में अधिकारी के काम को केवल वरिष्ठ ही नहीं, बल्कि सहकर्मी, अधीनस्थ और जनता भी आँकते हैं — इससे किसी एक व्यक्ति की पसंद-नापसंद मूल्यांकन पर हावी नहीं होती और संस्था के भीतर निष्पक्षता की जाँच होती रहती है।

10.3 गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)

◆ किसी राजनीतिक दल के प्रति पक्षपात का अभाव — सिविल सेवक राजनीतिक मामलों में तटस्थ और निष्पक्ष रहे।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे एक स्कूल का प्रिंसिपल दो टीचरों की आपसी गुट-बाज़ी (ग्रुपबाज़ी) में शामिल न हो, बल्कि दोनों के साथ बराबर और तटस्थ व्यवहार करे — सिविल सेवक को भी राजनीतिक दलों के बीच ठीक ऐसे ही तटस्थ रहना होता है।

◆ यह राजनीतिक तटस्थता (Political Neutrality) से थोड़ा अलग है: **गैर-पक्षपात = अपने आधिकारिक निर्णयों और कार्यों में किसी राजनीतिक दल-विशेष के प्रति झुकाव न रखना।** | **राजनीतिक तटस्थता = सेवा में रहते हुए सक्रिय दलगत राजनीति, सार्वजनिक प्रचार या किसी दल के खुले समर्थन से दूर रहना।** दोनों साथ मिलकर सुनिश्चित करते हैं कि सिविल सेवक की निष्ठा किसी दल के प्रति नहीं, संविधान और जनहित के प्रति बनी रहे।

► उदाहरण: भारत का शीत युद्ध में गुट-निरपेक्ष आंदोलन (NAM — Non-Aligned Movement) अपनाना — दुनिया में दो बड़े गुटों (अमेरिका व सोवियत संघ) के बीच बिना किसी का पक्ष लिए अपनी स्वतंत्र नीति बनाना।

◆ शाह आयोग (Shah Commission) — 1977 में न्यायमूर्ति जे.सी. शाह की अध्यक्षता में आपातकाल (1975-77) की ज्यादतियों की जाँच के लिए बना था। इसने पाया कि कई अधिकारियों ने कानून के बजाय सत्ताधारी नेताओं के मौखिक आदेशों पर काम किया, यानी सिविल सेवा का राजनीतिक पक्षपात में इस्तेमाल हुआ — इसीलिए इसने सिविल सेवकों की राजनीतिक तटस्थता पर ज़ोर दिया।

◆ पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन शेषन ने चुनाव आयोग को इतना सख्त और निष्पक्ष बना दिया कि सत्ताधारी दल भी नियम तोड़ने से डरने लगे — निष्पक्ष चुनाव के लिए साहसिक कदम की मिसाल।

◆ सरकारिया आयोग (Sarkaria Commission) — 1983 में केंद्र-राज्य संबंधों की समीक्षा के लिए बना था। इसने सुझाव दिया कि राज्यपाल ऐसा व्यक्ति हो जो हाल के समय में सक्रिय दलगत राजनीति से गहराई से जुड़ा न रहा हो, ताकि वह किसी दल के पक्ष में काम न करे — यानी राज्यपाल की नियुक्ति में भी गैर-पक्षपात ज़रूरी माना गया।

◆ अनुच्छेद 319 — संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्य/अध्यक्ष कार्यकाल के बाद (आयोगों के भीतर कुछ निर्धारित अपवादों को छोड़कर) सरकार के अधीन अन्य नियोजन नहीं ले सकते, ताकि निष्पक्षता बनी रहे।

निष्पक्षता (Impartiality)	गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)
व्यक्तिगत पक्षपात का अभाव	राजनीतिक दल-विशेष के प्रति पूर्वाग्रह का अभाव
योग्यता-आधारित निर्णय (Merit-based)	चुनाव, नीति में तटस्थता
भेदभाव से मुक्त	राजनीतिक तटस्थता से अलग
उदाहरण: जॉन रॉल्स — अज्ञानता का पर्दा	उदाहरण: गुट-निरपेक्ष आंदोलन (NAM)

निष्पक्षता बनाम गैर-पक्षपात

निष्पक्षता (Impartiality)	बनाम	गैर-पक्षपात (Non-Partisanship)
किसी व्यक्ति/समूह के प्रति पूर्वाग्रह नहीं	आशय	किसी राजनीतिक दल के प्रति झुकाव नहीं
हर निर्णय — भर्ती, लाइसेंस, जाँच	दायरा	राजनीतिक मामलों में तटस्थता
भाई-भतीजावाद, जाति-धर्म पक्षपात	खतरा	सत्ताधारी दल का औज़ार बन जाना
योग्यता, नियम, तथ्य	आधार	संविधान, जनहित

चित्र 1.22: निष्पक्षता बनाम गैर-पक्षपात

NEW INDIA
ACADEMY
New India Education by Omkar Sir

📖 कहानी: "चाचा की ज़मीन" — जब फ़ाइल पर अपना ही परिवार हो

जयपुर संभाग की एक तहसील में विक्रम (काल्पनिक नाम) को तहसीलदार बने आठ महीने हुए थे। एक सुबह राजस्व-न्यायालय की सुनवाई-सूची देखते हुए उनकी नज़र एक नाम पर अटक गई — ज़मीन के बँटवारे के एक विवाद में एक पक्ष उनके सगे चाचा थे, और दूसरा पक्ष गाँव का एक दलित किसान परिवार, जो सालों से उस ज़मीन पर खेती कर रहा था।

उसी शाम चाचा का फ़ोन आया — "बेटा, अब तो तू ही साहब है। फ़ैसला अपने घर का ही होना चाहिए। गाँव में हमारी इज़्ज़त का सवाल है।" अगले दिन क्षेत्र के एक प्रभावशाली जनप्रतिनिधि का संदेश भी आया कि "आपके परिवार वाले हमारी पार्टी के पुराने कार्यकर्ता हैं, ध्यान रखिएगा।" विक्रम जानते थे कि रिकॉर्ड की कुछ बातें चाचा के पक्ष में भी जा सकती हैं। पर उन्हें यह भी पता था कि यदि वे इस मामले की सुनवाई ख़ुद करेंगे, तो फ़ैसला चाहे कुछ भी हो, किसान परिवार यही मानेगा कि "साहब ने अपने घर वालों का पक्ष लिया"। न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, होते हुए दिखना भी चाहिए।

उन्होंने उसी दिन उपखंड अधिकारी को लिखित आवेदन भेजा कि इस मामले में उनका हितों का टकराव (Conflict of Interest) है, इसलिए प्रकरण किसी अन्य सक्षम अधिकारी को स्थानांतरित किया जाए। आवेदन की प्रति फ़ाइल में लगाई गई, ताकि दोनों पक्षों को पता रहे कि सुनवाई कौन और क्यों कर रहा है। जनप्रतिनिधि के संदेश का उन्होंने शालीनता से उत्तर दिया कि मामला अब उनके पास नहीं है और नियम के अनुसार ही निपटेगा।

घर में तूफ़ान आ गया। चाचा ने कहा — "अपने ही खून को धोखा दिया।" कई महीनों तक परिवार के कार्यक्रमों में उनसे दूरी रखी गई। पर गाँव में एक अलग बात फैली — "नया तहसीलदार अपने चाचा का केस भी नहीं सुनता, यहाँ सिफ़ारिश नहीं चलेगी।" अगले वर्षों में उस तहसील में राजस्व-मामलों में सिफ़ारिशों का दबाव साफ़ घटा।

दूसरे अधिकारी ने दस्तावेज़ों के आधार पर फ़ैसला किया — कुछ हिस्सा चाचा को, और खेती करने वाले परिवार के कब्ज़े वाला हिस्सा उस परिवार को मिला। दोनों पक्षों ने फ़ैसला स्वीकार किया, क्योंकि प्रक्रिया पर किसी को संदेह नहीं था।

🔑 इस कहानी से सीख: निष्पक्षता का अर्थ केवल सही फ़ैसला देना नहीं, बल्कि ऐसी प्रक्रिया अपनाना है जिस पर सबको भरोसा हो। हितों के टकराव में स्वयं को मामले से अलग करना (Recusal), सब कुछ लिखित रखना और राजनीतिक दबाव को शालीनता से ठुकराना — यही निष्पक्षता और गैर-पक्षपात का व्यावहारिक रूप है। साथ ही, यह कहानी निजी संबंधों (परिवार) और सार्वजनिक कर्तव्य के टकराव को भी दिखाती है।

11. महान दार्शनिकों, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन से शिक्षाएँ

महान व्यक्तियों का जीवन नैतिक मूल्यों का जीवंत प्रमाण है। उनके जीवन और शिक्षाओं से सिविल सेवक नैतिक प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं।

11.1 पाश्चात्य दार्शनिक (Western Philosophers)

दार्शनिक	जीवन-शिक्षा	प्रशासनिक मूल्य
सुकरात (Socrates, 470-399 ई.पू.)	ज्ञान एवं सद्गुण — सत्यभाषी, निर्भीक, आत्म-अनुशासित। "सद्गुण ज्ञान है।"	ज्ञान-आधारित निर्णय, निर्भीकता, सत्यनिष्ठा
प्लेटो (Plato, 428-348 ई.पू.)	4 प्रमुख सद्गुण (Cardinal Virtues): विवेक (Wisdom), साहस (Courage), न्याय (Justice), संयम (Temperance)।	संतुलित प्रशासन — चारों सद्गुण
अरस्तू (Aristotle, 384-322 ई.पू.)	"सद्गुण दो अतियों के बीच का स्वर्णिम मध्य-मार्ग है" (Virtue is the Golden Mean) — दो दोषों के मध्य सद्गुण। निकोमेकियन एथिक्स (Nicomachean Ethics) — पश्चिमी नैतिक दर्शन के सबसे प्रभावशाली और आरंभिक व्यवस्थित ग्रंथों में से एक।	मध्यमार्ग की नीति, विवेकपूर्ण कार्य
इमैनुएल कांट (Immanuel Kant, 1724-1804)	कर्तव्य का बिना शर्त आदेश (Categorical Imperative) — "ऐसे कार्य करो जिसे तुम एक सार्वभौमिक नियम (Universal Law) बनाना चाहो।" "कर्तव्य के लिए कर्तव्य।"	कर्तव्यनिष्ठा, नियम का पालन, नैतिक दृढ़ता

11.2 भारतीय समाज-सुधारक

व्यक्तित्व	जीवन-शिक्षा	प्रशासनिक प्रासंगिकता
राजा राम मोहन राय (1772-1833)	आधुनिक भारत के निर्माता, ब्रह्म समाज के संस्थापक; उनके निरंतर सामाजिक अभियान और गवर्नर-जनरल लॉर्ड बेंटिंक के 1829 के विनियमन (Regulation XVII) के संयुक्त प्रयास से सती प्रथा का कानूनी उन्मूलन संभव हुआ।	सामाजिक सुधार में साहस, वैज्ञानिक दृष्टिकोण
स्वामी विवेकानंद (1863-1902)	नव-वेदांत — मानव सेवा ही ईश्वर सेवा। "दरिद्र नारायण" पर बल।	जन-केंद्रित प्रशासन, समभाव
बी.आर. अंबेडकर (1891-1956)	दलित उत्थान, संविधान के शिल्पी। सामाजिक न्याय के प्रहरी।	सामाजिक न्याय, संवैधानिक मूल्य
सरदार पटेल (1875-1950)	लौह पुरुष — लगभग 565 रियासतों का विलय। "देशहित सर्वोपरि।"	प्रशासनिक दृढ़ता, राष्ट्रीय एकता

व्यक्तित्व	जीवन-शिक्षा	प्रशासनिक प्रासंगिकता
जवाहरलाल नेहरू (1889-1964)	उदार राष्ट्रवाद, वैज्ञानिक मानवतावाद, पंचशील।	वैज्ञानिक सोच, बहुलवादी दृष्टि

11.3 आदर्श प्रशासक (Model Administrators) — पूरी कहानियाँ

नीचे दिए गए प्रशासकों में से कुछ की कहानियाँ पहले ही ऊपर विस्तार से बताई जा चुकी हैं (खंड 3.2 और 8) — बाकी की कहानियाँ यहाँ पूरी तरह समझिए:

📖 सत्यनिष्ठा की कीमत — एक सच्ची घटना (सत्येन्द्र दुबे)

2002-03 की बात है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) में तैनात युवा इंजीनियर **सत्येन्द्र दुबे** स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (सड़क बनाने की एक बड़ी सरकारी योजना) में हो रहे भ्रष्टाचार को रोज़ अपनी आँखों से देख रहे थे — ठेकेदार घटिया सामग्री लगा रहे थे, अधिकारी रिश्वत लेकर आँखें मूंद रहे थे। सत्येन्द्र ने पहले अपने ऊपर के अधिकारियों को बताया, पर किसी ने कार्रवाई नहीं की। हिम्मत करके उन्होंने सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय को पत्र लिखा — पूरी सच्चाई बताई और साफ शब्दों में लिखा: "मेरी पहचान गोपनीय रखी जाए, वरना मेरी जान को खतरा है।" दुर्भाग्य से यह पत्र लीक हो गया और सत्येन्द्र का नाम भ्रष्ट अधिकारियों तक पहुँच गया। नवंबर 2003 की एक रात, गया (बिहार) में उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई — सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्होंने सच बोलने की हिम्मत दिखाई थी। आज, हर लोक सेवक के सामने सत्येन्द्र दुबे की कहानी एक सवाल खड़ा करती है — **सत्यनिष्ठा की कीमत इतनी बड़ी क्यों होती है, और फिर भी लोग इसे क्यों चुनते हैं?** यही सवाल यह पूरा अध्याय आपको समझाएगा — नीतिशास्त्र और मानवीय मूल्य किसी परीक्षा के लिए रटे गए शब्द नहीं, बल्कि एक प्रशासक के हर फैसले की नींव हैं, और कई बार अपनी जान की कीमत पर भी निभाई जाने वाली ज़िम्मेदारी हैं।

☀ टीएन शेषन (TN Seshan) — चुनाव आयोग का असली अर्थ

1990 में जब टीएन शेषन मुख्य चुनाव आयुक्त बने, तब चुनावों में बूथ-कैप्चरिंग, पैसे-शराब बाँटना, तय सीमा से ज़्यादा खर्च करना — यह सब आम बात थी और चुनाव आयोग का प्रभावी क्रियान्वयन कमज़ोर माना जाता था। शेषन ने बिना डरे आदर्श आचार संहिता को सख्ती से लागू करना शुरू किया — बड़े-बड़े नेताओं की रैलियाँ रुकवाई, चुनाव खर्च का हिसाब माँगा, गड़बड़ी वाले बूथों पर दोबारा वोटिंग करवाई। नतीजा यह हुआ कि पहली बार आम आदमी को लगा कि उसका वोट सच में मायने रखता है। यही कहानी दिखाती है कि गैर-पक्षपात और साहस मिलकर एक कमज़ोर संस्था को भी शक्तिशाली बना सकते हैं।

☀ अशोक खेमका (Ashok Khemka) — बार-बार तबादले के बावजूद न झुकने की कहानी

हरियाणा कैडर के IAS अधिकारी अशोक खेमका ने एक बड़े राजनीतिक परिवार से जुड़े ज़मीन सौदे में गड़बड़ी पाकर उसे रद्द करने का आदेश दे दिया, जबकि उन्हें पता था कि इसका नतीजा उनके करियर पर भारी पड़ेगा। अपने लगभग तीन दशकों की सेवा में उनका बार-बार तबादला हुआ — हर बार सत्ता से टकराव के बाद। फिर भी उन्होंने कभी अपना रुख नहीं बदला। यह कहानी सत्यनिष्ठा और साहस की सबसे चर्चित प्रशासनिक मिसालों में गिनी जाती है।

☀ अरुणा रॉय (Aruna Roy) — सुविधा छोड़कर संघर्ष चुनने की कहानी

अरुणा रॉय एक सफल IAS अधिकारी थीं, फिर भी उन्होंने अपनी सुरक्षित सरकारी नौकरी छोड़ दी क्योंकि उन्हें लगा कि असली बदलाव गाँव-गाँव जाकर मज़दूरों के हक़ के लिए लड़ने से आएगा। राजस्थान के गाँवों में उन्होंने मज़दूरी और सरकारी खर्च का सार्वजनिक हिसाब (सामाजिक अंकेक्षण) करवाना शुरू किया, जिससे कई जगह भ्रष्टाचार खुलकर सामने आया। उनके वर्षों के संघर्ष और मज़दूर किसान शक्ति संगठन जैसे आंदोलनों ने सूचना के अधिकार की माँग को व्यापक जन-समर्थन दिया, जिसने अंततः सूचना का अधिकार अधिनियम (RTI Act, 2005) बनने में महत्वपूर्ण वैचारिक व जन-आधार भूमिका निभाई।

प्रशासक	कार्य एवं शिक्षा	मूल्य
ई. श्रीधरन	कोंकण रेलवे को कठिन भौगोलिक चुनौतियों के बावजूद रिकॉर्ड समय में और दिल्ली मेट्रो के विभिन्न चरणों को निर्धारित समय-सीमा में पूरा किया — अनुशासन और सत्यनिष्ठा।	अनुशासन, सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता
सत्येन्द्र दुबे	NHAI भ्रष्टाचार उजागर किया — व्हिसलब्लोअर, जान गँवाई (देखें इसी खंड की शुरुआत में दी गई पूरी कहानी)।	सत्यनिष्ठा, नैतिक साहस
टीना डाबी	जैसाण शक्ति — जैसलमेर में महिला सशक्तीकरण (देखें खंड 8, मूल्य 30)।	लैंगिक न्याय, प्रतिबद्धता

11.4 नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के मूल्य — एक तुलनात्मक दृष्टि

नेता, सुधारक और प्रशासक — तीनों की भूमिका अलग है, इसलिए उनसे सीखने वाले मूल्य भी थोड़े अलग हैं। **नेता** दिशा देता है, **सुधारक** समाज की कुरीतियों को चुनौती देता है, और **प्रशासक** नीतियों को ज़मीन पर उतारता है।

नेतृत्व का मूल्य	अर्थ	उदाहरण
सशक्तीकरण	अपने लोगों की क्षमता बढ़ाना	डॉ. बी.आर. अंबेडकर — "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष"

नेतृत्व का मूल्य	अर्थ	उदाहरण
(Empowerment)		करो"
दूरदृष्टि (Vision)	लक्ष्य की स्पष्ट तस्वीर देना	महात्मा गांधी — स्वराज और सर्वोदय
संवाद-कौशल (Communication)	भरोसा बनाना, सबको जोड़े रखना	जवाहरलाल नेहरू — "भारत की खोज", पत्रों द्वारा संवाद
समानुभूति (Empathy)	साथियों और जनता का दृष्टिकोण समझना	छत्रपति शिवाजी — किसानों की फ़सल को सेना से नुक़सान न पहुँचाने के आदेश
प्रतिबद्धता (Commitment)	लक्ष्य के प्रति पूरा समर्पण	सरदार पटेल — रियासतों का एकीकरण
धैर्य व दृढ़ता (Perseverance)	असफलताओं के बावजूद टिके रहना	नेल्सन मंडेला (Nelson Mandela) — 27 वर्ष कारावास के बाद भी मेल-मिलाप की राजनीति

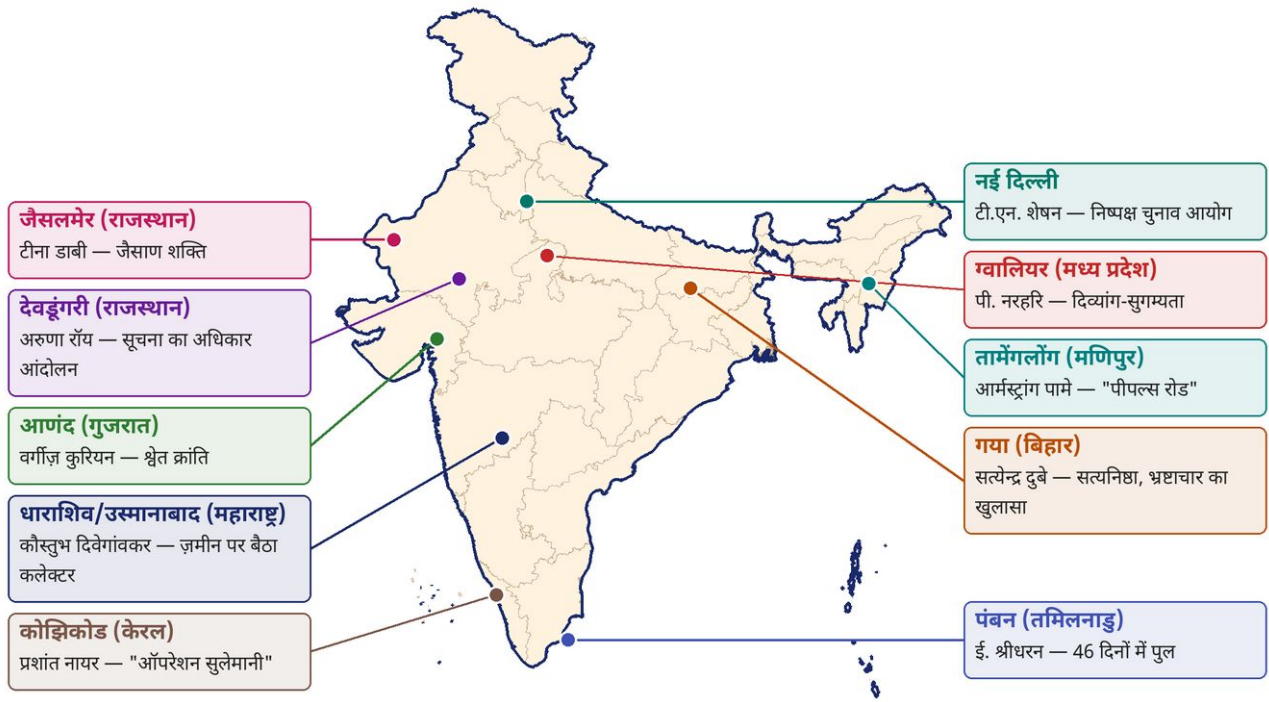
सुधारकों के मूल्य	क्यों ज़रूरी	उदाहरण
तर्क (Reason)	अन्यायपूर्ण और रूढ़िवादी व्यवस्था पर प्रश्न उठाने के लिए	राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर
संतोष (Contentment)	अनुयायियों का भरोसा जीतने के लिए — स्वयं के लिए कुछ न चाहना	बुद्ध, महावीर, कबीर, गुरु नानक
मानवतावाद (Humanism)	जाति, धर्म, क्षेत्र की सीमाएँ पार करने के लिए	स्वामी विवेकानंद — "नर सेवा ही नारायण सेवा"
समानता (Equality)	भेदभाव मिटाने के लिए	ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, डॉ. अंबेडकर

प्रशासक	प्रमुख योगदान	सीखने योग्य मूल्य
वी.पी. मेनन (V.P. Menon)	सरदार पटेल के साथ रियासतों के एकीकरण में मुख्य प्रशासनिक भूमिका	निष्ठा, विवेक, संवाद-कौशल
ई. श्रीधरन (E. Sreedharan)	पंबन पुल का रिकॉर्ड पुनर्निर्माण, कोंकण रेलवे, दिल्ली मेट्रो	अनुशासन, समयबद्धता, सत्यनिष्ठा
वर्गीज़ कुरियन (Vergheese Kurien)	ऑपरेशन फ़्लड — "श्वेत क्रांति"	जनसेवा के प्रति समर्पण, सहकारिता
आर्मस्ट्रॉंग पामे (Armstrong Pame)	मणिपुर में जनसहयोग से लगभग 100 किमी "पीपल्स रोड" (2012)	करुणा, नवाचार, जन-भागीदारी
किरण बेदी (Kiran Bedi)	तिहाड़ जेल में सुधार — शिक्षा, ध्यान, मानवीय व्यवहार	सुधारात्मक दृष्टि, साहस
विनोद राय (Vinod Rai)	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के रूप में पारदर्शिता पर बल	जवाबदेही, पारदर्शिता

☀ ई. श्रीधरन — 46 दिनों में खड़ा हुआ पुल

दिसंबर 1964 में आए भीषण चक्रवात ने तमिलनाडु के रामेश्वरम द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ने वाले पंबन रेल पुल को बुरी तरह तोड़ दिया। रेलवे ने इसकी मरम्मत के लिए छह महीने का लक्ष्य रखा, जिसे घटाकर तीन महीने किया गया और यह ज़िम्मेदारी युवा इंजीनियर ई. श्रीधरन को सौंपी गई। श्रीधरन ने कर्मचारियों के साथ दिन-रात काम किया, समुद्र में डूबे गर्डरों को निकालकर दोबारा इस्तेमाल किया और पुल को केवल 46 दिनों में फिर से चालू कर दिया। आगे चलकर यही अनुशासन और समयबद्धता कोंकण रेलवे और दिल्ली मेट्रो में दिखाई दी। उनका संदेश साफ़ है — **सार्वजनिक धन और जनता का समय, दोनों पवित्र हैं।**

प्रेरक प्रशासकों और सुधारकों की कहानियों का भारत-मानचित्र



मानचित्र केवल प्रतीकात्मक है — स्थान लगभग दर्शाए गए हैं

चित्र 1.23: प्रेरक प्रशासकों और सुधारकों की कहानियों का भारत-मानचित्र

महान सुधारकों और प्रशासकों से मूल्य सीखने का सबसे अच्छा तरीका एक त्रिकोण है — (1) मूल्य का नाम, (2) व्यक्ति का असली उदाहरण, और (3) उस मूल्य का प्रशासन में व्यावहारिक उपयोग। ऊपर दी गई हर कहानी में यह त्रिकोण मौजूद है।

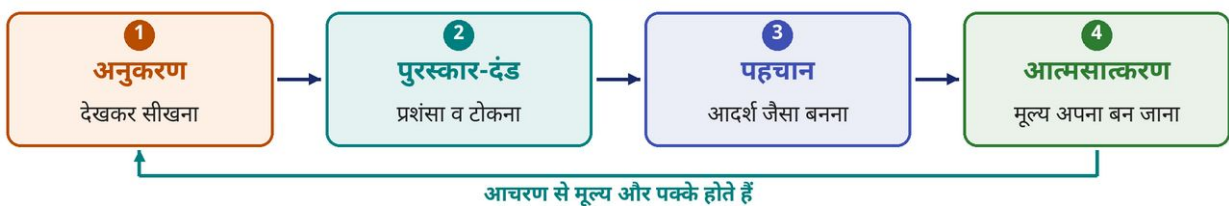
12. मूल्य कैसे बनते हैं? — समाजीकरण और नैतिक विकास के चरण

बच्चा जन्म से ईमानदार या बेईमान नहीं होता। उसके मूल्य धीरे-धीरे **समाजीकरण (Socialization)** की प्रक्रिया से बनते हैं — यानी वह परिवार, मित्रों, विद्यालय, धर्म, मीडिया और अपने अनुभवों से सीखता है कि क्या सही है और क्या गलत। व्यक्ति के मूल्यों पर धार्मिक विश्वास, सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक परिस्थितियों का भी असर पड़ता है। गहरे (साध्य) मूल्य लंबे समय में बनते हैं, जबकि साधन मूल्य परिस्थितियों के साथ जल्दी बदलते हैं।

12.1 मूल्य-निर्माण की चार सीढ़ियाँ

- ◆ **अनुकरण (Imitation):** बच्चा जो देखता है, वही करता है। माता-पिता अगर फ़ोन पर झूठ बुलवाते हैं ("कह दो पापा घर पर नहीं हैं"), तो बच्चा झूठ बोलना ही सीखता है — चाहे ज़बान से उसे सच बोलने को कहा जाए।
- ◆ **पुरस्कार और दंड (Reinforcement):** अच्छे काम की प्रशंसा और ग़लत काम पर टोकना — इससे व्यवहार पक्का होता है।
- ◆ **पहचान (Identification):** बच्चा किसी आदर्श व्यक्ति — माँ, शिक्षक, खिलाड़ी, स्वतंत्रता सेनानी — जैसा बनना चाहता है और उसके मूल्य अपना लेता है।
- ◆ **आत्मसात्करण (Internalization):** अंत में मूल्य बाहर से थोपे हुए नहीं, बल्कि व्यक्ति के अपने बन जाते हैं। अब वह बिना किसी के देखे भी उनके अनुसार चलता है।

मूल्य बनने की प्रक्रिया — अनुकरण से आत्मसात्करण तक



चित्र 1.24: मूल्य बनने की प्रक्रिया — अनुकरण से आत्मसात्करण तक

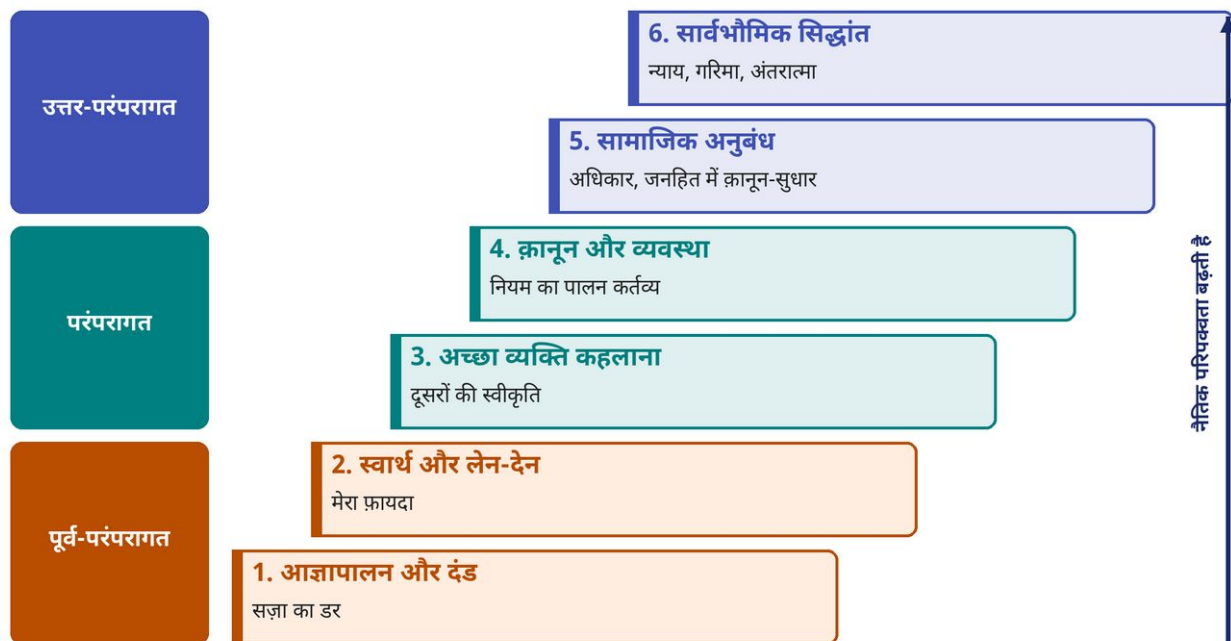
“ हम न्यायपूर्ण कार्य करके न्यायी बनते हैं, संयमित कार्य करके संयमी और साहसिक कार्य करके साहसी बनते हैं। (We become just by doing just acts, temperate by doing temperate acts, brave by doing brave acts.) ” — अरस्तू (Aristotle),

12.2 लॉरेंस कोलबर्ग (Lawrence Kohlberg) के नैतिक विकास के छह चरण

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोलबर्ग ने स्विस मनोवैज्ञानिक जाँ प्याजे (Jean Piaget) के काम को आगे बढ़ाते हुए बताया कि मनुष्य की नैतिक सोच तीन स्तरों और छह चरणों से होकर विकसित होती है। कोलबर्ग की रुचि इस बात में नहीं थी कि व्यक्ति "हाँ" कहता है या "ना", बल्कि इसमें थी कि वह अपने उत्तर के पीछे क्या तर्क देता है।

स्तर	चरण	नैतिक सोच का आधार	प्रशासन में उदाहरण
पूर्व-परंपरागत (Pre-conventional) — सामान्यतः बचपन	1. आज्ञापालन और दंड	सज़ा के डर से नियम मानना	"निलंबन के डर से रिश्ता नहीं ली"
	2. स्वार्थ और लेन-देन	जिसमें मेरा फ़ायदा, वही सही; "तुम मेरा काम करो, मैं तुम्हारा"	"उसने मेरी मदद की थी, तो मैं उसकी फ़ाइल आगे बढ़ा दूँ"
परंपरागत (Conventional) — किशोर अवस्था व अधिकांश वयस्क	3. अच्छा व्यक्ति कहलाना	दूसरों की स्वीकृति और अच्छी छवि	"लोग मुझे ईमानदार अफ़सर कहें"
	4. क़ानून और व्यवस्था	नियम सबके लिए; समाज की व्यवस्था बनाए रखना कर्तव्य	"नियम में नहीं है, इसलिए नहीं होगा"
उत्तर-परंपरागत (Post-conventional) — परिपक्व वयस्क	5. सामाजिक अनुबंध और अधिकार	क़ानून लोगों की भलाई के लिए बने समझीते हैं; अन्यायपूर्ण क़ानून बदले जाने चाहिए	जनहित में नियम-संशोधन का प्रस्ताव भेजना
	6. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत	न्याय, समानता, मानवीय गरिमा — अंतरात्मा का सिद्धांत	सत्येन्द्र दुबे जैसा नैतिक साहस

कोलबर्ग के नैतिक विकास की सीढ़ी — 3 स्तर, 6 चरण



चित्र 1.25: कोलबर्ग के नैतिक विकास की सीढ़ी — 3 स्तर, 6 चरण

हाइज़ की दुविधा (Heinz Dilemma): कोलबर्ग ने लोगों से एक काल्पनिक प्रश्न पूछा — हाइज़ की पत्नी गंभीर रूप से बीमार है। एक दवा उसकी जान बचा सकती है, पर दवा-विक्रेता उसकी कई गुना कीमत माँग रहा है। हाइज़ उधार लेकर भी पूरे पैसे नहीं जुटा पाता। क्या उसे दवा चुरा लेनी चाहिए? अलग-अलग चरणों के लोग अलग-अलग तर्क देते हैं:

चरण	संभावित उत्तर और तर्क
चरण 1	नहीं चुरानी चाहिए — चोरी क़ानून के खिलाफ़ है, पकड़ा गया तो जेल होगी।
चरण 2	चुरा लेनी चाहिए — पत्नी बचेगी तो उसका अपना जीवन सुखी रहेगा; यह उसके हित में है।

चरण	संभावित उत्तर और तर्क
चरण 3	चुरा लेनी चाहिए — एक अच्छा पति यही करेगा; लोग उसे प्रेम करने वाला पति मानेंगे।
चरण 4	नहीं चुरानी चाहिए — अगर सब ऐसे ही चोरी करने लगे तो समाज की व्यवस्था टूट जाएगी।
चरण 5	चुरा लेनी चाहिए — जीवन रक्षक दवा पाना मूल अधिकार है; क़ानून इतना लचीला होना चाहिए कि ऐसी स्थिति का ध्यान रखे।
चरण 6	चुरा लेनी चाहिए — जीवन का अधिकार और मानवीय गरिमा जैसे सार्वभौमिक सिद्धांत किसी भी क़ानून से ऊपर हैं।

 **आलोचना:** कोलबर्ग स्वयं मानते थे कि हर व्यक्ति छठे चरण तक नहीं पहुँचता। संस्कृति और व्यक्तिगत परिस्थितियाँ भी नैतिक विकास की दिशा बदलती हैं। उनकी शिष्या कैरोल गिलिगन (Carol Gilligan) ने आलोचना की कि यह सिद्धांत "न्याय" पर अधिक ज़ोर देता है और "देखभाल" (Care) की नैतिकता को कम आँकता है।

आसान परिभाषा: नैतिक विकास (Moral Development)

 **परिभाषा:** वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति की सही-गलत को समझने की तर्क-क्षमता उम्र और अनुभव के साथ सज़ा के डर से आगे बढ़कर सार्वभौमिक सिद्धांतों तक पहुँचती है।

 **आसान भाषा में:** पहले हम डर से अच्छे बनते हैं, फिर तारीफ़ के लिए, फिर नियम के लिए — और सबसे ऊँचे स्तर पर इसलिए कि वह सही है।  **उदाहरण:** छोटा बच्चा मार के डर से होमवर्क करता है; बड़ा होकर वही व्यक्ति इसलिए पढ़ता है क्योंकि उसे सीखना ज़रूरी लगता है।

कहानी: "लिफ़ाफ़ा" — एक युवा इंजीनियर की छह सीढ़ियाँ

झुंझुनूं ज़िले में सार्वजनिक निर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता राहुल (काल्पनिक नाम) को नौकरी में आए सिर्फ़ छह महीने हुए थे। गाँव की एक सड़क का काम पूरा होने वाला था और अंतिम माप-पुस्तिका (Measurement Book) पर उनके हस्ताक्षर बाक़ी थे। सड़क की परत तय मोटाई से लगभग एक-तिहाई पतली थी।

शाम को ठेकेदार चाय पर आया और जाते समय मेज़ पर एक मोटा लिफ़ाफ़ा छोड़ गया। "साहब, सब यही करते हैं। आपके सहायक अभियंता साहब को भी पता है। बस साइन कर दीजिए, अगली बार और ध्यान रखूँगा।"

रात भर राहुल सो नहीं पाए। उनके मन में एक के बाद एक आवाज़ें उठीं। पहली आवाज़ बोली — "पकड़े गए तो निलंबन होगा, जेल भी हो सकती है" (**चरण 1 — डंड का डर**)। दूसरी बोली — "इतने पैसे से घर की किस्ते जल्दी चुक जाएँगी" (**चरण 2 — स्वार्थ**)। तीसरी ने याद दिलाया — "पर बैच के दोस्त और गाँव वाले मुझे क्या समझेंगे?" (**चरण 3 — छवि**)। चौथी बोली — "नियम कहता है कि माप-पुस्तिका में सही माप ही लिखा जाए; यह मेरा कर्तव्य है" (**चरण 4 — क़ानून और व्यवस्था**)।

फिर उन्हें अपनी माँ की बात याद आई, जो सरकारी स्कूल में शिक्षिका थीं — "बेटा, सड़क पर चलने वाले हर बच्चे को अपना बच्चा समझना। अगर तेरी बनाई सड़क पहली बरसात में टूटी और उस पर कोई हादसा हुआ, तो वह पाप तेरे सिर होगा।" राहुल ने सोचा — यह सड़क गाँव के बच्चों के स्कूल और प्रसूता महिलाओं के अस्पताल का रास्ता है। यह **जनता के पैसे और लोगों की जान** का सवाल है (**चरण 5 और 6 — जनहित और सार्वभौमिक सिद्धांत**)।

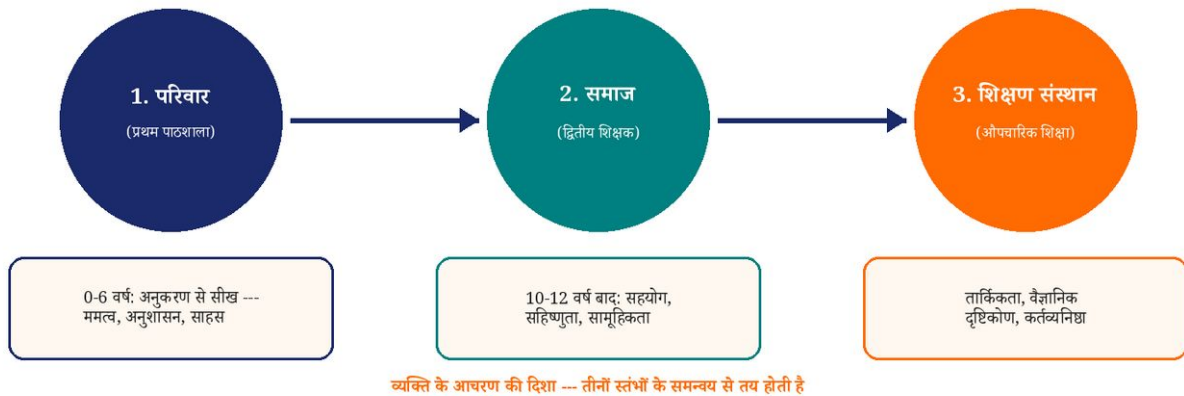
अगली सुबह उन्होंने लिफ़ाफ़ा लौटा दिया, माप-पुस्तिका में वास्तविक मोटाई दर्ज की और सहायक अभियंता को लिखित नोट भेजा कि भुगतान से पहले कमी दूर करवाई जाए। ठेकेदार ने ऊपर तक शिकायतें कीं, तबादले की धमकी भी मिली। पर लिखित रिकॉर्ड और गुणवत्ता-जाँच की रिपोर्ट राहुल के पक्ष में थी। ठेकेदार को अपने खर्च पर सड़क दोबारा बनानी पड़ी।

कुछ साल बाद जब उस क्षेत्र में भारी बारिश हुई और कई सड़कें बह गईं, वह सड़क सलामत रही। गाँव के सरपंच ने ग्राम सभा में कहा — "यह सड़क एक ईमानदार इंजीनियर की माँ की दी हुई सीख है।"

 **इस कहानी से सीख:** मूल्य परिवार से शुरू होते हैं (माँ की सीख), शिक्षा और कर्तव्य-बोध से मज़बूत होते हैं, और संकट के समय निर्णय तय करते हैं। राहुल की सोच कोलबर्ग के छहों चरणों से होकर गुज़री — डर और स्वार्थ से शुरू होकर जनहित और अंतरात्मा तक। साथ ही, उसने सत्यनिष्ठा को लिखित रिकॉर्ड और उचित प्रक्रिया से सुरक्षित भी किया।

13. मूल्य-निर्माण में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की भूमिका

मूल्य-निर्माण की यात्रा (Journey of Value Formation)



चित्र 1.26: मूल्य-निर्माण की यात्रा — परिवार → समाज → शिक्षण संस्थान

मूल्य-निर्माण में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं — तीनों की भूमिका अलग-अलग है, और तीनों मिलकर ही व्यक्ति के मूल्य गढ़ते हैं। किसी एक को समझ लेने से पूरी तस्वीर नहीं बनती, इसलिए आगे तीनों को अलग-अलग समझाया गया है।

13.1 परिवार की भूमिका (प्रथम पाठशाला)

मूल्य-निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चे का संपर्क मुख्यतः परिवार से होता है — इसी दौर में बच्चा घर के सदस्यों के आचरण का सबसे ज़्यादा अनुकरण करता है, अतः परिवार के सदस्यों का आचरण निर्णायक भूमिका निभाता है।

आसान भाषा में: नीचे दी गई तालिका एक सामान्य प्रवृत्ति दिखाती है — व्यावहारिक रूप से परिवार का हर सदस्य ये सभी मूल्य साझा रूप से सिखा सकता है, यह विभाजन कोई कठोर नियम नहीं है।

परिवार का सदस्य	सिखाए जाने वाले प्रमुख मूल्य	उदाहरण
माता (Mother)	ममत्व, स्नेह, त्याग, धैर्य, बड़ों का सम्मान, देखभाल, निस्वार्थता	जीजाबाई ने शिवाजी को बचपन से ही वीरता और धर्म-कथाओं से नैतिक शिक्षा दी
पिता (Father)	कर्तव्यपरायणता, अनुशासन, साहस, कठोर परिश्रम, निर्भीकता, सुरक्षा का भाव	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को बचपन में पिता मोरोपंत तांबे की देखरेख में घुड़सवारी व शस्त्र-कौशल की शिक्षा मिली, जिसने उनके आगे के जीवन को आकार दिया
भाई-बहन	सहयोग, साझा करना, देखभाल, बंधुत्व	संयुक्त परिवार में टीम-भावना
दादा-दादी	आध्यात्मिकता, नैतिकता, स्नेह, परंपराओं का हस्तांतरण	बच्चों की कहानियाँ — नैतिक शिक्षा

◆ **अनुकरण विधि (Imitation Method):** बच्चा घर में जो व्यवहार देखता है, उसी की नकल करता है। जैसे — अगर माता-पिता सभी भाई-बहनों को बराबर प्यार देते हैं और बेटा-बेटी में भेद नहीं करते, तो बच्चा यही देखकर सीखता है और आगे चलकर समाज में भी सबके साथ समानता और सद्भावना का व्यवहार करता है।

◆ **परिवार संस्कृति के हस्तांतरण (Transfer of Culture)** का माध्यम है — दादा-दादी से माता-पिता और माता-पिता से बच्चों तक भाषा, त्योहार, रीति-रिवाज़ और नैतिक मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। जैसे अतिथि को भगवान मानने का संस्कार किसी किताब से नहीं, घर के व्यवहार से ही अगली पीढ़ी तक पहुँचता है।

◆ संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार — संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियाँ और रिश्तेदार साथ रहते हैं, इसलिए बच्चा मिल-बाँटकर रहना, सबके साथ तालमेल बैठाना (टीम-भावना) सहज ही सीख जाता है और उसे अकेलापन भी कम महसूस होता है। एकल परिवार में ये अवसर अपेक्षाकृत कम होते हैं।

◆ **चुनौतियाँ:** आज एकल परिवार बढ़ रहे हैं, माता-पिता दोनों नौकरी या काम में व्यस्त रहते हैं और बच्चों के हाथ में बहुत कम उम्र में स्मार्टफोन (Smartphone) आ जाता है। इससे परिवार के साथ बातचीत का समय घटता है और बच्चों में अकेलापन तथा मानसिक तनाव बढ़ता है — यानी मूल्य सिखाने वाली 'पहली पाठशाला' ही कमज़ोर पड़ने लगती है।

मूल्य-निर्माण में परिवार की ताक़त	परिवार की सीमाएँ / समस्याएँ
समाजीकरण की पहली जगह — "परिवार पहली पाठशाला, माँ पहली शिक्षिका"	जातिवाद, पितृसत्ता, रूढ़िवादिता जैसे प्रतिगामी मूल्य भी सिखा सकता है
गहरा भावनात्मक लगाव — इसलिए सीख गहरी	परिवार के सदस्य अलग-अलग, विरोधी मूल्य दे सकते हैं

मूल्य-निर्माण में परिवार की ताकत	परिवार की सीमाएँ / समस्याएँ
बच्चा सबसे अधिक समय परिवार में बिताता है	कहना कुछ, करना कुछ — जैसे बच्चे से झूठ बोलवाना
आपसी भरोसा; प्रगति पर बारीक नज़र रखना संभव	एकल परिवार और व्यस्त माता-पिता — साथ बिताया समय कम
आदर्श के रूप में माता-पिता — गांधीजी ने कहा कि उपवास और सत्याग्रह की प्रेरणा उन्हें माँ और पत्नी से मिली	प्रतिस्पर्धा और भौतिकवाद को देखभाल और प्रेम से ऊपर रखना; बच्चे पर मूल्य थोपना

पालन-पोषण की शैली का प्रभाव: जिन परिवारों में बच्चों से संवाद होता है और उनकी राय पूछी जाती है (लोकतांत्रिक शैली), वहाँ बच्चे में लोकतांत्रिक मूल्य और आत्मविश्वास विकसित होते हैं। जहाँ केवल आदेश चलता है (सत्तावादी शैली), वहाँ बच्चा या तो डरपोक बनता है या विद्रोही। शारीरिक दंड झेलने वाला बच्चा अक्सर बड़ा होकर हिंसा को "अनुशासन का सही तरीका" मानने लगता है — कॉलेज में रैगिंग, घर में बच्चों की पिटाई, या पुलिस में हिरासत में यातना को उचित ठहराना।

“ यदि किसी देश को भ्रष्टाचार-मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का राष्ट्र बनना है, तो मुझे दृढ़ विश्वास है कि तीन सामाजिक सदस्य ही यह बदलाव ला सकते हैं — पिता, माता और शिक्षक। (If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher.) ” — डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

13.2 समाज की भूमिका (द्वितीय शिक्षक)

परिवार के बाद समाज मूल्य-निर्माण में दूसरी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोरावस्था के आसपास बच्चे का समाज से संपर्क क्रमशः बढ़ता जाता है।

- ◆ **औपचारिक मूल्य** — समाज की वे रीतियाँ, परंपराएँ और मान्यताएँ जिन्हें खुले तौर पर स्वीकार किया जाता है और जिनका पालन सबसे अपेक्षित होता है। इनके ज़रिए व्यक्ति सहायता, भाईचारा, सौहार्द, सहिष्णुता और सामूहिक प्रयास जैसे मूल्य सीखता है — जैसे गाँव में किसी के घर विवाह या मृत्यु होने पर पूरा मोहल्ला मदद के लिए आ जाता है।
- ◆ **अनौपचारिक मूल्य** — वे मूल्य जो कहीं लिखे या घोषित नहीं होते, बल्कि रोज़मर्रा के मेल-जोल से अपने-आप सीख लिए जाते हैं — जैसे खान-पान की आदतें, बस में बुजुर्ग या महिला के लिए सीट छोड़ देना और बड़ों का सम्मान करना।
- ◆ **प्रगतिशील, शिक्षित समाज** — जहाँ समाज पढ़ा-लिखा और खुले विचारों वाला होता है, वहाँ व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विचारों की व्यापकता (दूसरों की राय सुनने का खुलापन) और रचनात्मकता जैसे मूल्य सहज रूप से सीखता है।
- ◆ **नकारात्मक मूल्य** — जातिवाद, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता भी समाज से आते हैं।

सकारात्मक मूल्य (समाज से)	नकारात्मक मूल्य (समाज से)
सहयोग, भाईचारा, सौहार्द, सहिष्णुता	जातिवाद, सांप्रदायिकता
राजनीतिक मूल्य, सामूहिक प्रयास	लिंग-भेद, छुआछूत
कर्तव्यचेतना, प्रकृति प्रेम	अंधविश्वास, रूढ़िवादिता
सेवा-भाव, संयम, सहानुभूति	हिंसा, घृणा, कट्टरता

☀ समाज की सामूहिक शक्ति के उदाहरण

अन्ना हज़ारे — महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले के रालेगण सिद्धि गाँव में उन्होंने ग्रामीणों के श्रमदान से जल-संरक्षण और नशाबंदी जैसे काम करवाए; इस सामाजिक एकजुटता से सूखाग्रस्त और ग़रीब गाँव का पूरी तरह कायाकल्प हो गया। आर्मस्ट्रॉंग पामे — क्राउडफंडिंग से 100 किलोमीटर सड़क निर्माण (पूरी कहानी खंड 8, मूल्य 33 में)। श्याम सुंदर पालीवाल — पिपलांत्री गाँव में समाज की भागीदारी से पर्यावरण संरक्षण और बेटी-बचाओ दोनों साधे (पूरी कहानी खंड 8, मूल्य 25 में)।

समाज के माध्यम	मूल्य-निर्माण में ताकत	समस्याएँ
धर्म, परंपरा, रीति	स्थिरता और सामाजिक सद्भाव	रूढ़िवादिता, कुरीतियाँ
राजनीति व नेतृत्व	आदर्श प्रस्तुत करना	जब नेता स्वयं भ्रष्ट हों तो ग़लत संदेश
नागरिक समाज, स्थानीय समुदाय	सामूहिक दबाव से अच्छे व्यवहार को बढ़ावा	विविधता के कारण परस्पर विरोधी संदेश
अर्थव्यवस्था, बाज़ार	परिश्रम और उद्यम के मूल्य	उपभोक्तावाद, "पैसा ही सब कुछ"

- ◆ **उल्टा असर (Boomerang Effect):** जब समाज कठोर और बिना समझाए मूल्य थोपता है, तो व्यक्ति, खासकर युवा, उसके खिलाफ़ विद्रोह कर देता है। इसलिए मूल्यों के पीछे का कारण समझाना ज़रूरी है।

13.3 मीडिया और सोशल मीडिया की भूमिका

आज मूल्य-निर्माण में परिवार, समाज और विद्यालय के साथ एक चौथी बड़ी शक्ति जुड़ गई है — **मीडिया और सोशल मीडिया**। यह तय करने में बड़ी भूमिका निभाता है कि समाज किसे "स्वीकार्य" और किसे "शर्मनाक" माने।

◆ **सकारात्मक भूमिका:** मीडिया भ्रष्टाचार और अन्याय का खुलासा करके गलत काम करने वालों पर सामाजिक दबाव बनाता है, स्वच्छता और अंगदान जैसे जन-जागरूकता अभियानों से अच्छे व्यवहार को बढ़ावा देता है, और हाशिए के लोगों (गरीब, दूर-दराज़ के, कमज़ोर वर्ग) की आवाज़ को मंच देकर समाज में समानुभूति जगाता है।

◆ **नकारात्मक भूमिका:** यही मीडिया फ़र्ज़ी ख़बरें (Fake News) और नफ़रत भरी सामग्री फैलाकर समाज में अविश्वास और तनाव पैदा कर सकता है, दिखावे और उपभोक्तावाद ('जो दिखाता है वही बिकता है') को बढ़ावा देता है, और साइबर-धोस (Cyber-bullying — ऑनलाइन किसी को डराना, अपमानित करना) से युवाओं के मन पर गहरी चोट करता है।

◆ **"गूँज कक्ष" (Echo Chamber):** सोशल मीडिया के एल्गोरिथ्म व्यक्ति को वही सामग्री बार-बार दिखाते हैं जो उसकी पहले से बनी राय से मेल खाती है। इससे विरोधी विचार सुनने की आदत घटती है, ध्रुवीकरण बढ़ता है और सहिष्णुता जैसे मूल्य कमज़ोर होते हैं।

◆ **आगे की राह:** हर नागरिक को डिजिटल साक्षरता चाहिए, ताकि वह सच्ची और फ़र्ज़ी ख़बर में अंतर कर सके; विद्यालयों में "मीडिया-विवेक" (किसी ख़बर को परखकर ही मानना) सिखाया जाए; मीडिया संस्थान जिम्मेदार पत्रकारिता के लिए स्वयं अपने नियम बनाकर उनका पालन करें (स्व-नियमन); और परिवार में बच्चों से स्क्रीन-समय पर डाँटने के बजाय संवाद हो।

13.4 शिक्षण संस्थाओं की भूमिका (औपचारिक शिक्षा)

संस्कृत सूक्ति "विद्या ददाति विनयम्" का शाब्दिक अर्थ है — "विद्या विनय (नम्रता) देती है"। इसे आगे विस्तारित करते हुए पारंपरिक रूप से यह भी समझाया जाता है कि विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्माचरण और अंततः सुख प्राप्त होता है — यानी सच्ची शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी नहीं, बल्कि शीलता, सदाचार और कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुण विकसित करना है। शिक्षण संस्थाओं की भूमिका परिवार और समाज की तुलना में थोड़ी बाद में आती है, किंतु उतनी ही महत्वपूर्ण है।

◆ शिक्षण संस्थाएँ विद्यार्थियों में सबसे पहले तार्किकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temperament) विकसित करती हैं — यानी किसी बात को आँख मूँदकर मानने के बजाय उसका कारण पूछना और प्रमाण देखकर निष्कर्ष निकालना।

◆ इसके साथ वे पंथनिरपेक्षता/धर्मनिरपेक्षता (Secularism), न्यायप्रियता, कठोर परिश्रम, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, स्वतंत्र सोच और वैचारिक गतिशीलता (नए विचारों को अपनाने का खुलापन) जैसे मूल्य सिखाती हैं, क्योंकि विद्यालय में अलग-अलग धर्म, जाति और वर्ग के विद्यार्थी साथ पढ़ते हैं, समान नियमों के अनुसार चलते हैं और अपनी बात खुलकर रखना सीखते हैं।

◆ पर्यावरण संरक्षण, बंधुत्व और लैंगिक समानता जैसे संवैधानिक मूल्य भी विद्यालय में गहराई पाते हैं — जैसे वृक्षारोपण अभियान, साथ मिलकर खेलना और लड़के-लड़कियों को बराबर जिम्मेदारियाँ देना।

शिक्षण संस्थाओं के प्रमुख कार्य:

1. बौद्धिक प्रशिक्षण (Intellectual Training) — सोचने, समझने और तर्क करने की क्षमता का विकास।
2. चरित्र-निर्माण (Character Building) — ईमानदारी, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसी अच्छी आदतें डालना।
3. सामुदायिक जीवन की प्रेरणा (Community Life) — दूसरों के साथ मिल-जुलकर रहना और समूह के हित को समझना।
4. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता — व्यायाम, संतुलित भोजन और साफ़-सफ़ाई की आदत डालना।
5. देशभक्ति की भावना का विकास — राष्ट्रीय पर्वों, राष्ट्रगान और स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियों से देश के प्रति प्रेम जगाना।
6. सृजनात्मकता (Creativity) — कला, विज्ञान-प्रदर्शनी और नई सोच के माध्यम से कुछ नया रचने की क्षमता बढ़ाना।

◆ **पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाएँ (Co-curricular Activities)** — यानी पढ़ाई के साथ चलने वाली गतिविधियाँ, जैसे खेलकूद, प्रार्थना सभा और महापुरुषों की जयंती मनाना। खेल में टीम के साथ खेलना और हार स्वीकार करना टीम-भावना व धैर्य सिखाता है, और नियमों से खेलना सत्यनिष्ठा का अभ्यास कराता है।

◆ **चुनौती:** शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण से यह जोखिम पैदा हो सकता है कि शिक्षा सिर्फ़ रोज़गार पाने का साधन मानी जाने लगे, और मूल्य-निर्माण का पक्ष पीछे छूट जाए।

◆ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) इसी कमी को दूर करने के लिए मूल्य-आधारित समग्र विकास पर बल देती है — यानी शिक्षा का लक्ष्य केवल अंक और डिग्री नहीं, बल्कि नैतिकता, संवैधानिक मूल्य, समानुभूति और जिम्मेदार नागरिकता का विकास भी माना गया है।

✨ ऐतिहासिक उदाहरण

आचार्य चाणक्य ने साधारण बालक चंद्रगुप्त को रणनीति और नेतृत्व की शिक्षा देकर मौर्य साम्राज्य का संस्थापक बनाया। रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्रनाथ को आध्यात्मिकता और 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा' का पाठ पढ़ाया, जिससे वे स्वामी विवेकानंद बने। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बताया है कि बचपन में उनके विज्ञान-शिक्षक शिवसुब्रमण्य अय्यर ने समुद्र-तट पर उड़ते पक्षियों को दिखाकर उड़ान का विज्ञान समझाया था — उसी दिन से उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उड़ान के प्रति लगाव जागा।

13.5 शिक्षण संस्थाएँ मूल्य कैसे सिखाती हैं? — शिक्षक की भूमिका

विद्यालय वह पहली जगह है जहाँ बच्चा परिवार से बाहर के लोगों — सहपाठियों, शिक्षकों, कर्मचारियों — से मिलता है और सीखता है कि समाज में अपने व्यवहार को कैसे नियंत्रित करे। शिक्षण संस्थाएँ अनेक तरीकों से मूल्य सिखाती हैं:

◆ **पाठ्यक्रम और पुस्तकें:** फ़्रांसीसी क्रांति से "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व"; दक्षिण अफ़्रीका में गांधीजी को ट्रेन से उतारे जाने की घटना से अन्याय के विरोध का साहस; संविधान से लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता। पर पुस्तकें रूढ़ियाँ भी गढ़ सकती हैं — जैसे "पापा दफ़्तर से आ रहे हैं, मम्मी खाना बना रही हैं" जैसे वाक्य लैंगिक भूमिकाओं को पक्का करते हैं।

◆ **गतिविधियाँ और भ्रमण:** वृद्धाश्रम ले जाकर करुणा, संग्रहालय और विविध धार्मिक स्थलों के भ्रमण से सहिष्णुता, वृक्षारोपण और सफाई से पर्यावरण-प्रेम, खेलों से टीम-भावना और खेल-भावना।

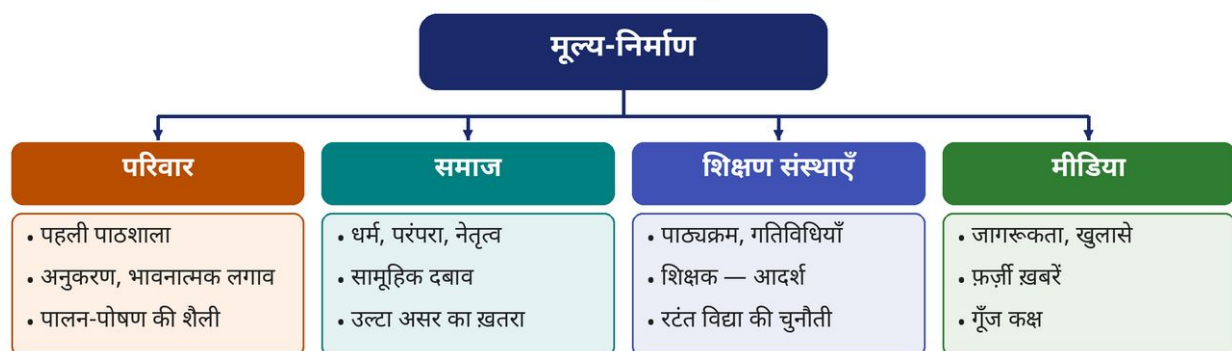
◆ **अनुशासन, पुरस्कार-दंड, सहपाठी:** विद्यालय की घंटी, गणवेश (यूनिफॉर्म) और नियम बच्चे को समय की पाबंदी और नियम-पालन सिखाते हैं; अच्छे काम पर पुरस्कार और गलती पर टोकना इन आदतों को पक्का करता है। साथ ही, सहपाठियों का दबाव (Peer Pressure) भी व्यवहार बदलता है — अच्छी संगति अच्छे मूल्य देती है और बुरी संगति गलत आदतें।

◆ **शिक्षक — सबसे बड़ा आदर्श:** शिक्षक सीखने का माहौल बनाता है, विद्यार्थियों के मन को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है और स्वयं एक जीवंत उदाहरण बनता है। जो शिक्षक समय का पाबंद, निष्पक्ष और ईमानदार है, उसके विद्यार्थी बिना भाषण के ही ये मूल्य सीख लेते हैं।

शिक्षण संस्थाओं की ताकत	चुनौतियाँ
औपचारिक समाजीकरण की पहली जगह; अधिकार और नियंत्रण के कारण अधिक प्रभावी	रटंत विद्या (Rote Learning) — मूल्य केवल परीक्षा का अध्याय बनकर रह जाते हैं
वरिष्ठ विद्यार्थियों और शिक्षकों के रूप में आदर्श उपलब्ध	शिक्षा का राजनीतिकरण और व्यावसायीकरण
व्यवस्थित शिक्षण-विधियाँ — वाद-विवाद, चर्चा, परियोजना	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक असमान पहुँच
व्यक्ति जीवन का बड़ा हिस्सा यहाँ बिताता है	अंकों की होड़ में चरित्र-निर्माण की उपेक्षा

“ शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं। (Education is the most powerful weapon which you can use to change the world.) ” — नेल्सन मंडेला (Nelson Mandela)

मूल्य-निर्माण के चार माध्यम — एक नज़र में



चित्र 1.27: मूल्य-निर्माण के चार माध्यम — एक नज़र में

परिवार + समाज (अनौपचारिक शिक्षा)	शिक्षण संस्थाएँ (औपचारिक शिक्षा)
भावनात्मक मूल्य प्रबल	बौद्धिक मूल्य प्रबल
अनुकरण विधि से सीखना	तर्क और ज्ञान आधारित
प्रारंभिक वर्षों में अधिक प्रभाव	बाद के वर्षों में अधिक प्रभाव
स्थायी छाप छोड़ते हैं	वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित

14. दुर्गुण (Vices) — समाज में अस्वीकार्य प्रवृत्तियाँ

दुर्गुण वे अवांछनीय आदतें, व्यवहार या प्रवृत्तियाँ हैं जिन्हें समाज में सामान्यतः गलत माना जाता है। एक प्रशासक के लिए दुर्गुणों से बचना अनिवार्य है — नीचे हर दुर्गुण के सामने उसका **विपरीत मूल्य** भी दिया गया है, ताकि याद रखना आसान हो।

दुर्गुण	प्रभाव	विपरीत मूल्य
भ्रष्टाचार (Corruption)	संसाधनों का दुरुपयोग, जनविश्वास का क्षरण	प्रोबिटी, सत्यनिष्ठा (Probity, Integrity)
उदासीनता (Apathy)	लोक-सेवा की विफलता	करुणा, प्रतिबद्धता (Compassion, Commitment)
आलस्य (Sloth)	अकुशलता, लक्ष्यहीनता	दृढ़ता, अनुशासन (Tenacity, Discipline)
अहंकार (Arrogance)	जन-असंतोष, टीमवर्क में बाधा	विनम्रता, समानुभूति (Humility, Empathy)
लालच (Greed)	भ्रष्टाचार, संसाधनों का दोहन	संतोष, संयम (Contentment, Temperance)
घृणा (Hatred)	सांप्रदायिकता, हिंसा	सहिष्णुता, भाईचारा (Tolerance, Brotherhood)

दुर्गुण	प्रभाव	विपरीत मूल्य
चापलूसी (Flattery)	पक्षपाती निर्णय, जी-हुजूरी	ईमानदारी, साहस (Honesty, Courage)
छल-कपट (Deceit)	जनविश्वास का हनन	पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा (Transparency, Integrity)
अन्याय (Injustice)	सामाजिक असंतोष, विद्रोह	न्याय, निष्पक्षता (Justice, Fairness)

दुर्गुण और उनके विपरीत मूल्य

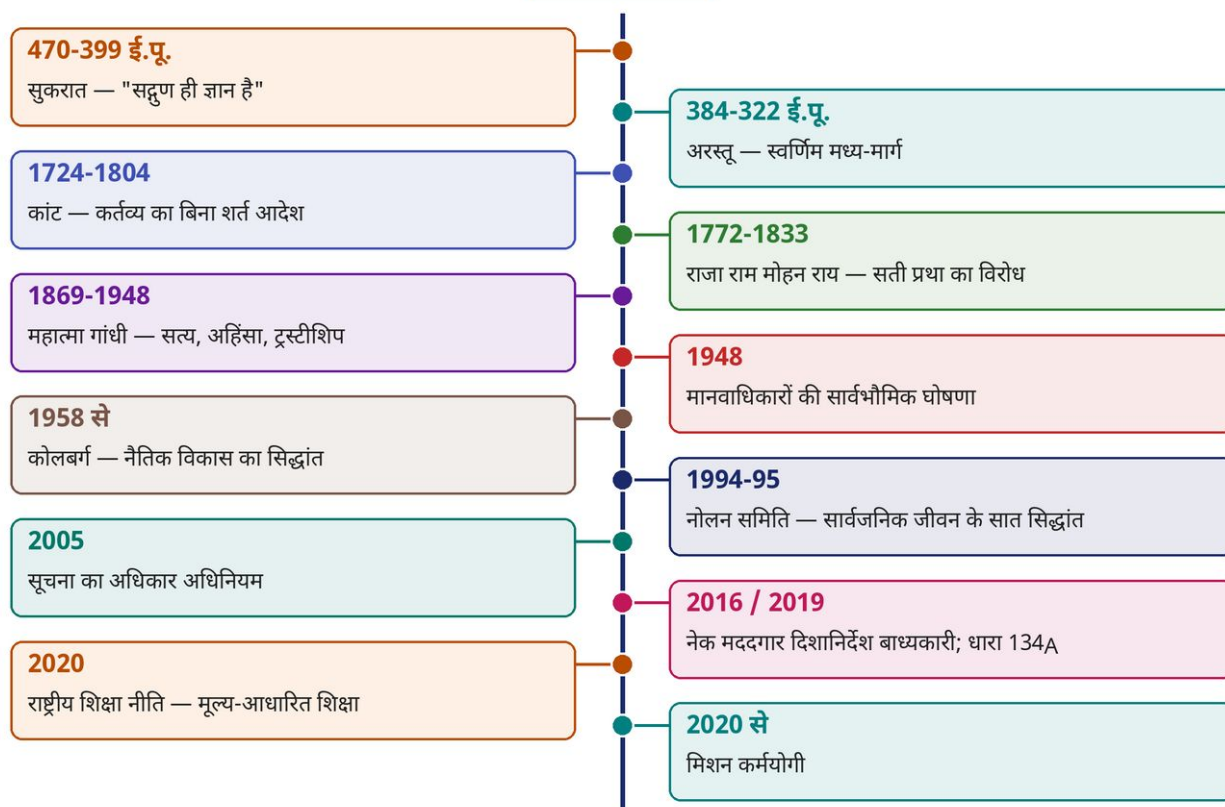
भ्रष्टाचार → प्रोबिटी, सत्यनिष्ठा	उदासीनता → करुणा, प्रतिबद्धता	आलस्य → दृढ़ता, अनुशासन
अहंकार → विनम्रता, समानुभूति	लालच → संतोष, संयम	घृणा → सहिष्णुता, भाईचारा
चापलूसी → ईमानदारी, साहस	छल-कपट → पारदर्शिता	अन्याय → न्याय, निष्पक्षता

चित्र 1.28: दुर्गुण और उनके विपरीत मूल्य

15. नैतिकता और मानवीय मूल्य — ऐतिहासिक यात्रा (Timeline)

वर्ष / संदर्भ	विषय / घटना / विचारक
470-399 ई.पू.	सुकरात (Socrates) — "सद्गुण ज्ञान है।" पश्चिमी नैतिक दर्शन की नींव।
428-348 ई.पू.	प्लेटो (Plato) — 4 प्रमुख सद्गुण: विवेक, साहस, न्याय, संयम।
384-322 ई.पू.	अरस्तू (Aristotle) — निकोमेकियन एथिक्स — "स्वर्णिम मध्य-मार्ग" — पश्चिमी नैतिक दर्शन के सबसे प्रभावशाली ग्रंथों में से एक।
1724-1804	इमैनुएल कांट (Immanuel Kant) — कर्तव्य का बिना शर्त आदेश, "कर्तव्य के लिए कर्तव्य।"
1748-1832	जेरेमी बेन्थम (Jeremy Bentham) — उपयोगितावाद — "अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख।"
1772-1833	राजा राम मोहन राय — सती प्रथा उन्मूलन में योगदान, ब्रह्म समाज।
1806-1873	जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) — गुणात्मक उपयोगितावाद।
1863-1902	स्वामी विवेकानंद — नव-वेदांत, दरिद्र नारायण, मानव सेवा ही ईश्वर सेवा।
1869-1948	महात्मा गांधी — सत्य, अहिंसा, सत्यनिष्ठा, ट्रस्टीशिप का सिद्धांत।
1875-1950	सरदार वल्लभभाई पटेल — लौह पुरुष, लगभग 565 रियासतों का विलय।
1891-1956	बी.आर. अंबेडकर — संविधान, सामाजिक न्याय, दलित उत्थान।
1994	नोलन समिति (UK) — IASHOOL — सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांत।
2005-2009	द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (2nd ARC) की कुल 15 रिपोर्टें — शासन में नैतिकता, DIPAO मूल्य।
2005	सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (RTI Act) — पारदर्शिता, जवाबदेही को संस्थागत रूप।
2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) — मूल्य-आधारित समग्र शिक्षा।
2020 से आगे	मिशन कर्मयोगी — सिविल सेवकों में सत्यनिष्ठा एवं दक्षता का विकास।
2023	चंद्रयान-3 — चाँद के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट-लैंडिंग (23 अगस्त 2023, विक्रम लैंडर टचडाउन) — दृढ़-संकल्प और टीमवर्क की मिसाल।

नैतिकता और मानवीय मूल्य — ऐतिहासिक यात्रा



चित्र 1.29: नैतिकता और मानवीय मूल्य — ऐतिहासिक यात्रा

☀ अध्याय का सार — एक पंक्ति में

अमेरिकी विचारक आर.डब्ल्यू. एमर्सन (R.W. Emerson) ने कहा था — "गहरी नैतिकता के बिना उच्च सभ्यता नहीं हो सकती।" यानी नैतिकता कोई अलग-थलग गुण नहीं, बल्कि सत्येन्द्र दुबे जैसे लोगों की सत्यनिष्ठा से लेकर परिवार-समाज-शिक्षा तक — हर स्तर पर मिलकर बनने वाली एक सभ्यता का हिस्सा है। यही इस पूरे अध्याय की मूल सीख है।

बोनस: उत्तर-लेखन अभ्यास (मॉडल प्रश्न और उत्तर)

प्रश्न 1: "प्रशासनिक उत्कृष्टता प्राप्त करने में नैतिक मूल्यों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।"

उत्तर: प्रशासनिक उत्कृष्टता का अर्थ केवल कार्यकुशलता नहीं, बल्कि 'लोक-कल्याण' और 'संविधान के प्रति निष्ठा' के साथ कार्य करना है। नैतिक मूल्य एक लोक-सेवक को साधारण अधिकारी से 'आदर्श प्रशासक' में बदलते हैं।

नैतिक मूल्यों की आवश्यकता:

- ◆ **जवाबदेही:** नोलन समिति के अनुसार, सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही अनिवार्य है। यह निर्णय लेने में पारदर्शिता लाती है। (उदाहरण: लाल बहादुर शास्त्री द्वारा रेल दुर्घटना के बाद इस्तीफा देना।)
- ◆ **निर्णय लेने में स्पष्टता:** हितों के टकराव (Conflict of Interest) की स्थिति में सत्यनिष्ठा और वस्तुनिष्ठता अधिकारी को सही मार्ग दिखाते हैं।
- ◆ **जन-विश्वास की स्थापना:** पारदर्शिता और सहानुभूति से नागरिकों का शासन के प्रति भरोसा बढ़ता है। (उदाहरण: पी. नरहरि द्वारा 'पंच स्पर्श' अभियान — खंड 3.2 में पूरी कहानी।)
- ◆ **कानून का राज (Rule of Law):** द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के DIPAO ढाँचे में 'कानून के शासन के प्रति दायित्व (Obligation to the Rule of Law)' यह दर्शाता है कि लोक-सेवकों की प्राथमिक निष्ठा कानून और संविधान के प्रति होनी चाहिए, न कि निजी हितों या राजनीतिक दबाव के प्रति।

निष्कर्ष: प्रशासन में नैतिक मूल्य साध्य (End) और साधन (Means) के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। एक उत्कृष्ट प्रशासक वह है जो केवल नियमों का पालन नहीं करता, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से समाज के अंतिम व्यक्ति की सेवा करता है।

प्रश्न 2: "मूल्य-निर्माण में परिवार और समाज की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।"

उत्तर: मूल्य व्यक्ति के आचरण की दिशा निर्धारित करते हैं। इनका बीजारोपण परिवार में होता है और विकास समाज में।

परिवार (प्रथम पाठशाला):

- ◆ **अनुकरण:** प्रारंभिक वर्षों में बच्चा परिवार के सदस्यों के व्यवहार को देखकर सीखता है — यह प्रक्रिया माता-पिता व अन्य सदस्यों के साझा आचरण से मिलकर बनती है।
- ◆ **आधारभूत मूल्य:** यहीं से सत्यनिष्ठा, प्रेम और जिम्मेदारी जैसे बुनियादी मानवीय मूल्य विकसित होते हैं।

समाज (द्वितीय शिक्षक):

◆ **समाजीकरण:** समाज व्यक्ति को 'नियम' और 'सांस्कृतिक मूल्य' सिखाता है। सहयोग, सहिष्णुता, और सामूहिकता का विकास समाज में ही होता है।

◆ **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** एक प्रगतिशील समाज ही व्यक्ति में तार्किकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर सकता है।

प्रशासनिक प्रासंगिकता: जो अधिकारी संस्कारित परिवार और प्रगतिशील समाज से आते हैं, वे प्रशासनिक चुनौतियों (जैसे राजनीतिक दबाव या प्रलोभन) के सामने डगमगाते नहीं हैं। (उदाहरण: अशोक खेमका जैसे अधिकारियों का साहसी व्यवहार अक्सर मज़बूत पारिवारिक व सामाजिक मूल्य-संस्कारों के साथ देखा जाता है, हालाँकि यह एकमात्र कारण नहीं कहा जा सकता — पूरी कहानी खंड 11.3 में।)

निष्कर्ष: परिवार 'नींव' है और समाज 'विस्तार'। एक आदर्श प्रशासक के निर्माण में इन दोनों का समन्वय अनिवार्य है, ताकि वह लोक-सेवा को एक 'मिशन' के रूप में देख सके।

